Sample

Model: C4,P6

SrNo: 110-120-101-1102 / 1

Date: 22/11/2020

लिंग : पुल्लिंग
जन्म तिथि : **25/12/2007**
दिन : मंगलवार
जन्म समय : **10:15:00 ïटे**
इष्ट : 07:38:35 घटी
स्थान : **Delhi**
देश : India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	09:53:52 घंटे
वेलान्तर	00:00:12 घंटे
साम्पातिक काल	16:07:10 घंटे
सूर्योदय	07:11:34 घंटे
सूर्यास्त	17:30:33 घंटे
दिनमान	10:19:00 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	09:01:32 धनु
लग्न के अंश	27:23:15 मकर

चैत्रादि संवत / शक	2064 / 1929
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
सूर्योदय कालीन तिथि	2
तिथि समाप्ति काल	25:21:44
जन्म तिथि	2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल	24:47:56 घंटे
जन्म नक्षत्र	पुनर्वसु
सूर्योदय कालीन योग	ब्रह्म
योग समाप्ति काल	09:43:43 घंटे
जन्म योग	ऐन्द्र
सूर्योदय कालीन करण	तैतिल
करण समाप्ति काल	14:30:53 घंटे
जन्म करण	तैतिल

अवकहड ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	मकर – शनि
राशि–स्वामी	**मिथुन – बुध**
नक्षत्र–चरण	**पुनर्वसु – 2**
नक्षत्र स्वामी	गुरु
योग	ऐन्द्र
करण	तैतिल
गण	देव
योनि	मार्जार
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	को–कोमल
पाया(राशि–नक्षत्र)	स्वर्ण – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

ाात चक्र

मास	आषाढ़
तिथि	2-7-12
दिन	सोमवार
नक्षत्र	स्वाति
योग	परिघ
करण	कौलव
प्रहर	3
वर्ग	मूषक
लग्न	कर्क
सूर्य	मीन
चन्द्र	कुम्भ
मंगल	मेष
बुध	मकर
गुरु	वृष
शुक्र	मिथुन
शनि	कुम्भ
राहु	कर्क

Sample

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	27:23:15	458:01:14	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	———
सूर्य			धनु	09:01:32	01:01:06	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	मित्र राशि
चंद्र			मिथु	24:38:38	14:27:23	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	मित्र राशि
मंगल	व		मिथु	08:29:52	00:23:35	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	राहु	शत्रु राशि
बुध		अ	धनु	13:19:50	01:36:02	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	सम राशि
गुरु		अ	धनु	07:29:10	00:13:46	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	स्वराशि
शुक्र			तुला	29:19:48	01:12:09	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	स्वराशि
शनि	व		सिंह	14:34:04	00:00:37	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
राहु	व		कुंभ	05:12:37	00:06:52	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	सूर्य	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	05:12:37	00:06:52	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगल	शत्रु राशि
हर्ष			कुंभ	21:12:14	00:01:32	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	———
नेप			मक	26:05:05	00:01:41	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	———
प्लूटो			धनु	04:55:03	00:02:13	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	———
दशम भाव			वृश्चि	09:49:44	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	शुक्र	--

व – वक्री स – स्थिर

अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त

राहु स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:58:15

लग्न—चलित

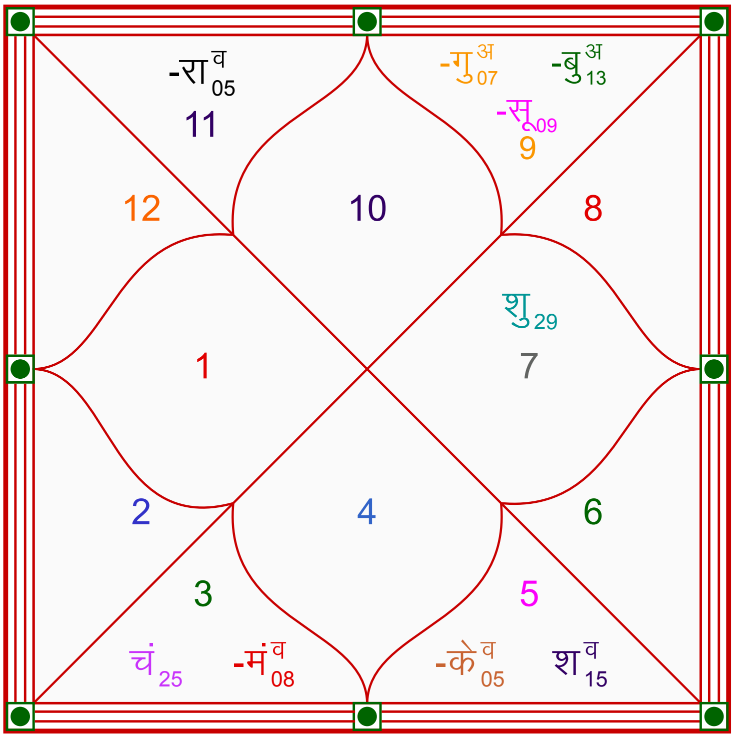

चन्द्र कुंडली

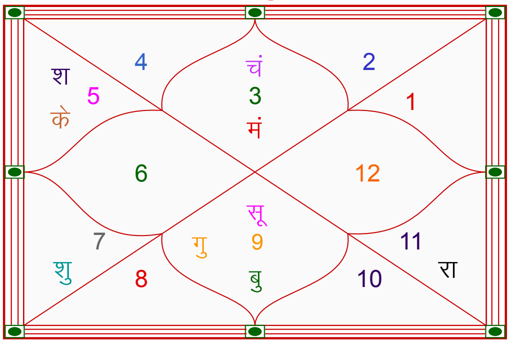

नवमांश कुंडली

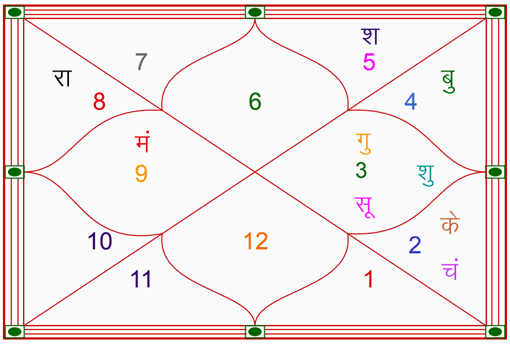

vedmuni

www.vedmuni.com

Sample

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मकर	14:27:40	मकर	27:23:15
2	कुम्भ	14:27:40	मीन	01:32:05
3	मीन	18:36:30	मेष	05:40:54
4	मेष	22:45:19	वृष	09:49:44
5	वृष	22:45:19	मिथुन	05:40:54
6	मिथुन	18:36:30	कर्क	01:32:05
7	कर्क	14:27:40	कर्क	27:23:15
8	सिंह	14:27:40	कन्या	01:32:05
9	कन्या	18:36:30	तुला	05:40:54
10	तुला	22:45:19	वृश्चिक	09:49:44
11	वृश्चिक	22:45:19	धनु	05:40:54
12	धनु	18:36:30	मकर	01:32:05

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	27:23:15
2	मीन	08:21:00
3	मेष	12:43:02
4	वृष	09:49:44
5	मिथुन	03:29:20
6	मिथुन	27:42:23
7	कर्क	27:23:15
8	कन्या	08:21:00
9	तुला	12:43:02
10	वृश्चिक	09:49:44
11	धनु	03:29:20
12	धनु	27:42:23

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली

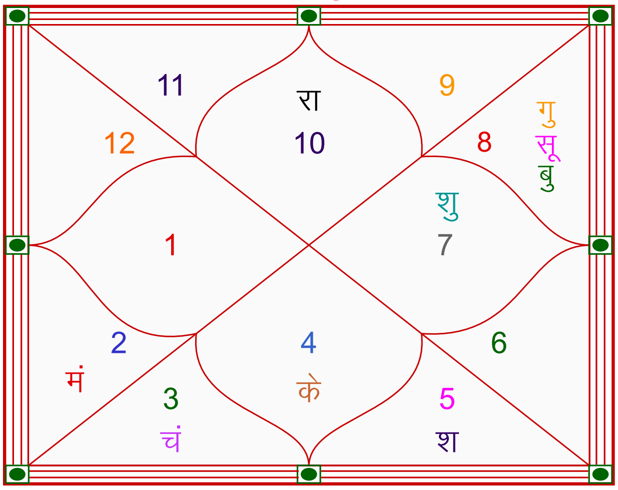

भाव कुंडली

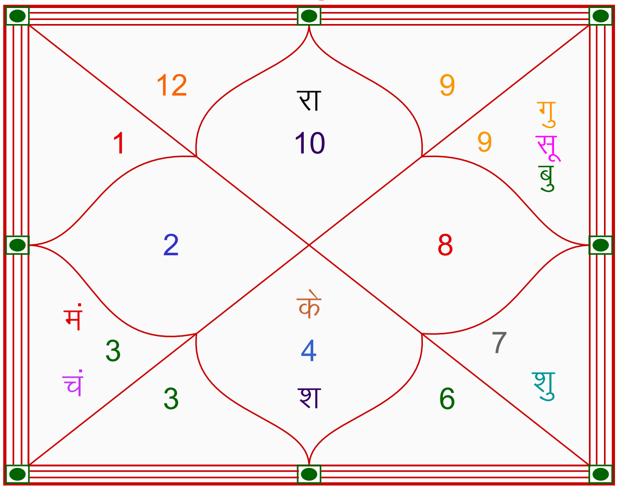

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	—— कारक ——		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	कुमार	मुदित	भोजन	3.28	43 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	मृत	मुदित	प्रकाश	6.42	44 %
मंगल	ज्ञाति	भ्रातृ	कुमार	खल	आगमन	0.55	48 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	युवा	विकल	प्रकाश	0.00	47 %
गुरु	कलत्र	धन	कुमार	विकल	भोजन	0.00	64 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	मृत	स्वस्थ	निद्रा	2.16	57 %
शनि	भ्रातृ	आयु	युवा	खल	शयन	1.27	60 %
राहु	----	ज्ञान	बाल	मुदित	आगम	0.00	54 %
केतु	----	मोक्ष	बाल	खल	निद्रा	0.00	54 %
कुल						**13.68**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली

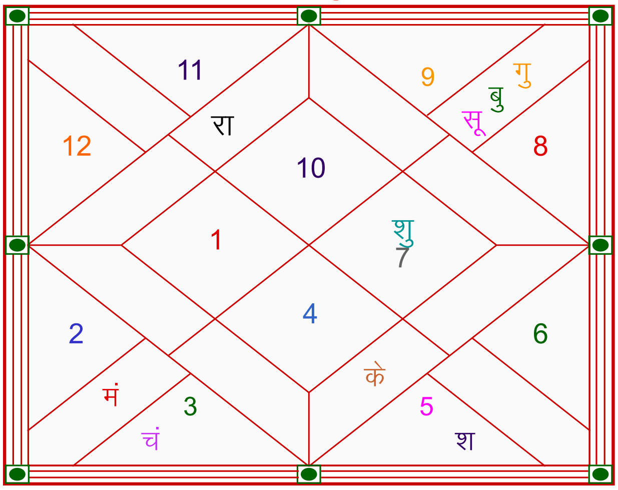

लग्न–चलित

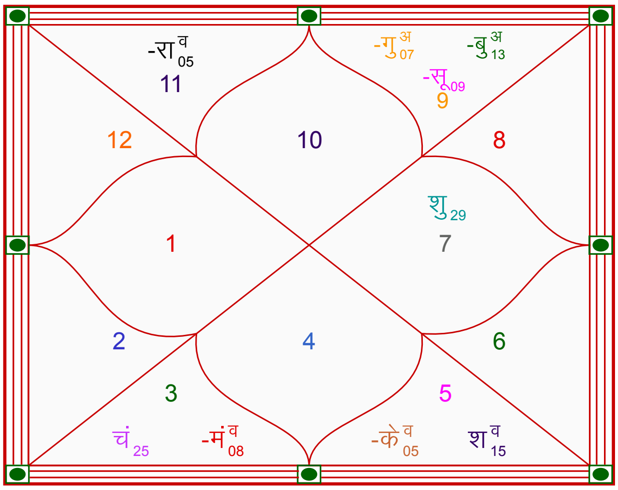

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

सुदर्शन चक्र

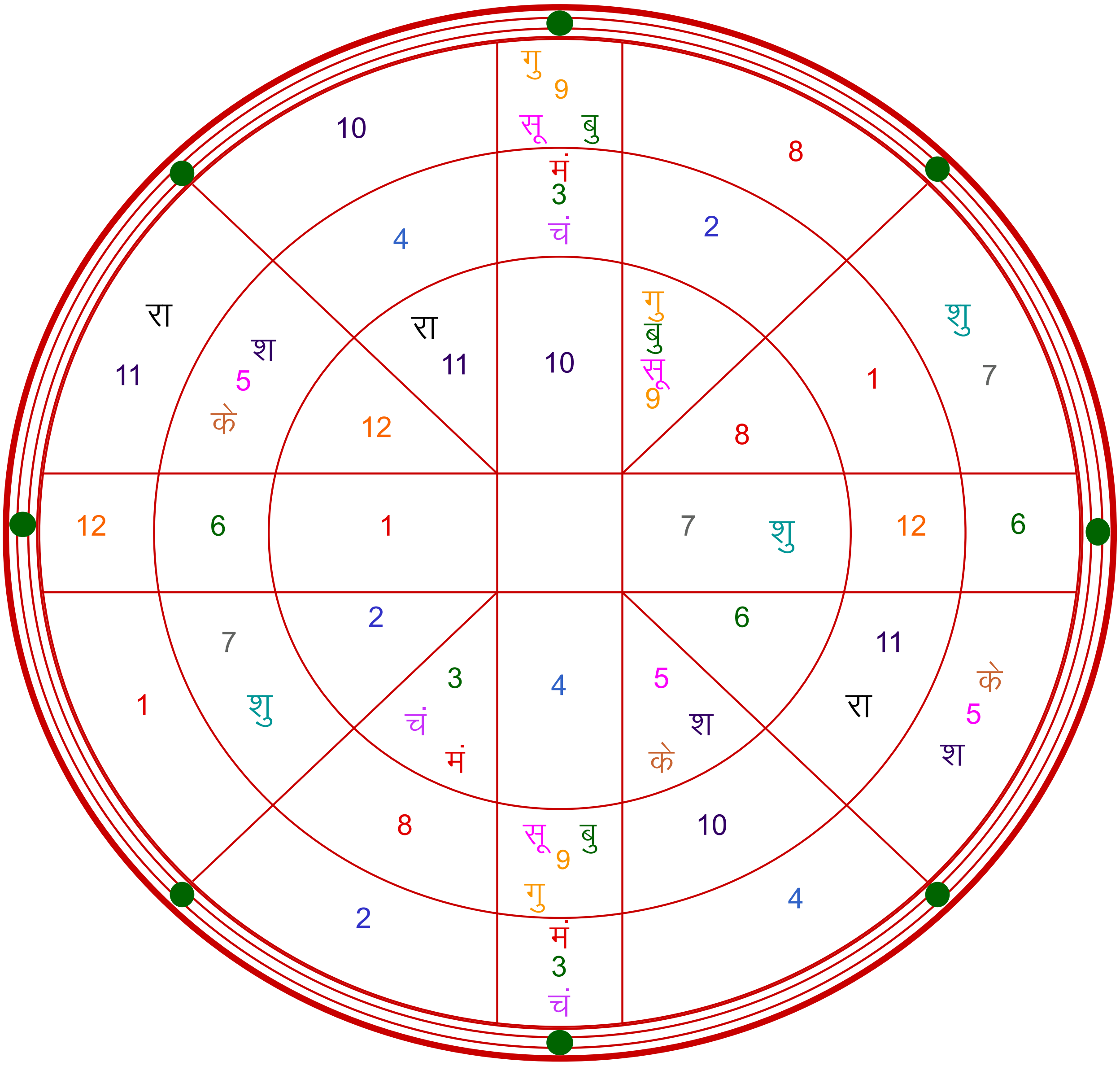

नोट सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्त वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

Sample

सर्वतोभद्र चक्र

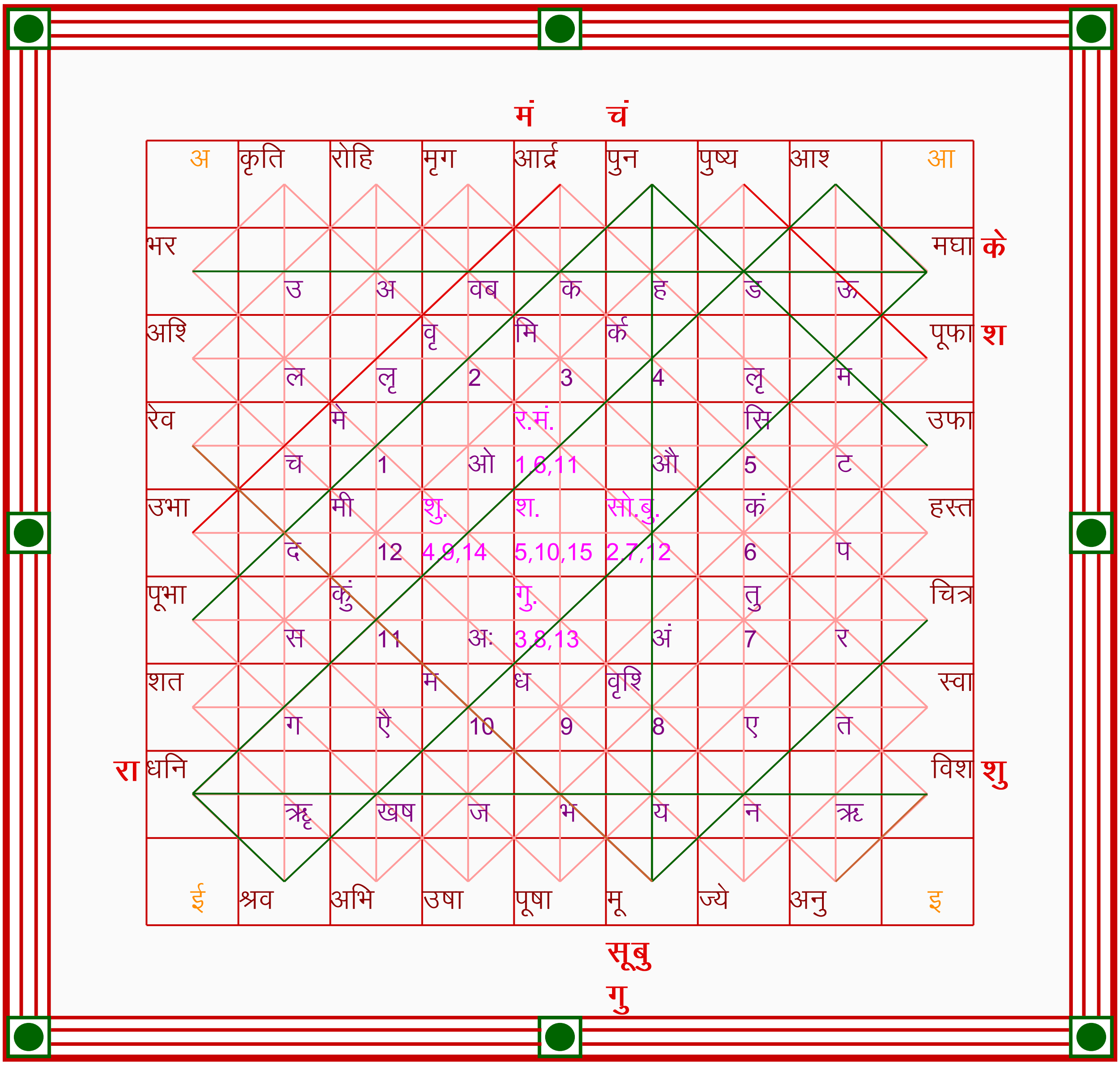

नोटः सर्वतोभद्र चक्र जन्म या गोचर ग्रह का दूसरे ग्रहों पर वेध जानने के लिए सर्वोत्तम चक्र है। ग्रह अपने नक्षत्र से तीन नक्षत्रों में स्थित ग्रहों को वेध करता हैः— अपने से बायीं ओर, दायीं ओर एवं सामने। शुभाशुभ ग्रह बाधा का ज्ञान सटीक फलादेश में विशेष उपयोगी है।

Sample

कृष्णमूर्ति प ति

भोग्य दशा काल : गुरु 10 वर्ष 3 मास 17 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	09:07:58	गुरु	केतु	गुरु	राहु
चंद्र		मिथु	24:45:04	बुध	गुरु	बुध	चंद्र
मंगल	व	मिथु	08:36:18	बुध	राहु	राहु	मंगल
बुध		धनु	13:26:16	गुरु	शुक्र	शुक्र	शुक्र
गुरु		धनु	07:35:36	गुरु	केतु	गुरु	गुरु
शुक्र		तुला	29:26:14	शुक्र	गुरु	सूर्य	शुक्र
शनि	व	सिंह	14:40:31	सूर्य	शुक्र	शुक्र	गुरु
राहु	व	कुंभ	05:19:03	शनि	मंगल	सूर्य	बुध
केतु	व	सिंह	05:19:03	सूर्य	केतु	मंगल	केतु
हर्ष		कुंभ	21:18:40	शनि	गुरु	गुरु	चंद्र
नेप		मक	26:11:31	शनि	मंगल	गुरु	गुरु
प्लूटो		धनु	05:01:29	गुरु	केतु	मंगल	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मक	27:29:41	शनि	मंगल	गुरु	चंद्र
2	मीन	08:27:26	गुरु	शनि	शुक्र	शुक्र
3	मेष	12:49:28	मंगल	केतु	बुध	गुरु
4	वृष	09:56:10	शुक्र	सूर्य	शुक्र	केतु
5	मिथु	03:35:46	बुध	मंगल	शुक्र	राहु
6	मिथु	27:48:49	बुध	गुरु	शुक्र	गुरु
7	कर्क	27:29:41	चंद्र	बुध	गुरु	चंद्र
8	कन्या	08:27:26	बुध	सूर्य	शुक्र	मंगल
9	तुला	12:49:28	शुक्र	राहु	बुध	केतु
10	वृश्चि	09:56:10	मंगल	शनि	शुक्र	बुध
11	धनु	03:35:46	गुरु	केतु	सूर्य	शुक्र
12	धनु	27:48:49	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि

के.पी. अयनांश : 23:51:49

फॉरच्युना : सिंह 13:06:47

लग्न कुंडली

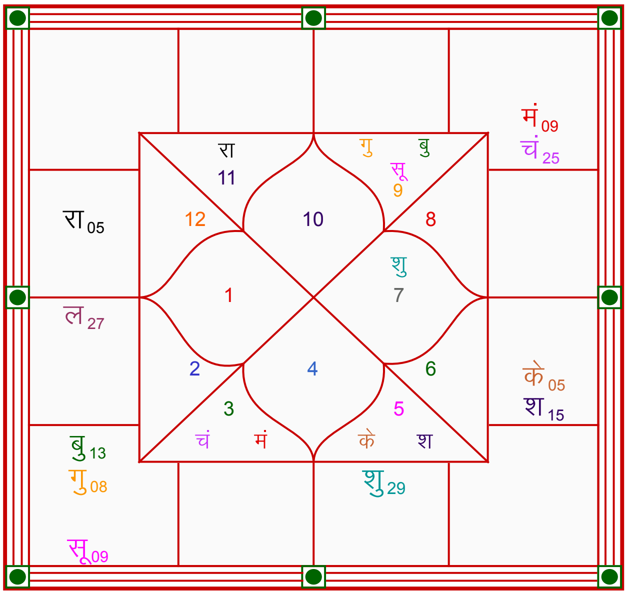

भाव कुंडली

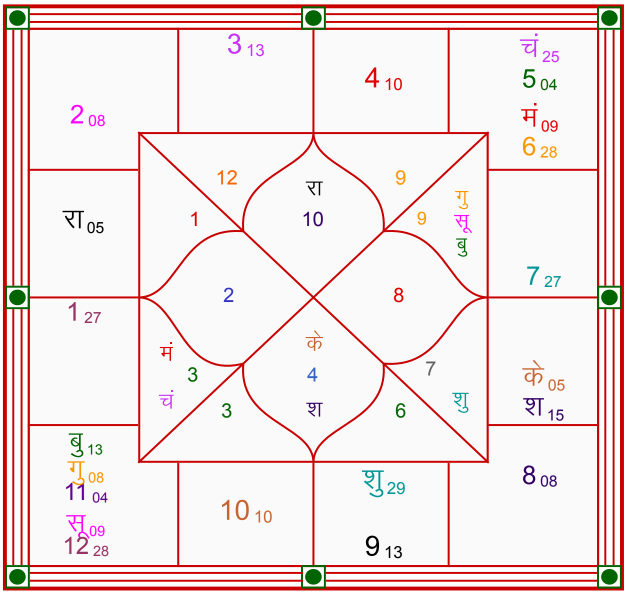

vedmuni

www.vedmuni.com

Sample

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल, शनि– राहु,
2	चंद्र– गुरु– शुक्र–
3	मंगल– राहु–
4	बुध– शुक्र– शनि–
5	चंद्र, मंगल, बुध– राहु,
6	बुध–
7	सूर्य, चंद्र– गुरु, शनि, केतु+
8	बुध–
9	बुध+ शुक्र, शनि+
10	मंगल– राहु–
11	सूर्य, चंद्र+ बुध, गुरु, शुक्र+
12	चंद्र– गुरु– शुक्र–

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	7, 11,
चंद्र	2- 5, 7- 11+ 12-
मंगल	1, 3- 5, 10-
बुध	4- 5- 6- 8- 9+ 11,
गुरु	2- 7, 11, 12-
शुक्र	2- 4- 9, 11+ 12-
शनि	1- 4- 7, 9+
राहु	1, 3- 5, 10-
केतु	7+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	गुरु
राशि स्वामी	बुध
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	बुध

Sample

कारकत्व–सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	मं	रा	--	श
2	--	--	चं शु	गु
3	--	--	रा	मं
4	--	--	बु श	शु
5	रा	चं मं	--	बु
6	--	--	--	बु
7	सू गु के	श के	--	चं
8	--	--	--	बु
9	बु श	शु	बु श	शु
10	--	--	रा	मं
11	चं शु	सू बु गु	चं शु	गु
12	--	--	चं शु	गु

ग्रह कारक सारिणी–1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	---	4,8,12	धनु	11
चंद्र	7	---	मिथुन	5
मंगल	3,10	1,5	मिथुन	5
बुध	5,6,8	7	धनु	11
गुरु	2,11,12	6	धनु	11
शुक्र	4,9	---	तुला	9
शनि	1	2,10	सिंह	7
राहु	---	9	कुम्भ	1
केतु	---	3,11	सिंह	7

ग्रह कारक सारिणी–2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	---	3,11	7	2,11,12	6	11
चंद्र	2,11,12	6	11	5,6,8	7	11
मंगल	---	9	1	---	9	1
बुध	4,9	---	9	4,9	---	9
गुरु	---	3,11	7	2,11,12	6	11
शुक्र	2,11,12	6	11	---	4,8,12	11
शनि	4,9	---	9	4,9	---	9
राहु	3,10	1,5	5	---	4,8,12	11
केतु	---	3,11	7	3,10	1,5	5

Sample

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य 249.03	चंद्र 84.64	मंगल 68.50	बुध 253.33	गुरु 247.49	शुक्र 209.33	शनि 134.57	राहु 305.21	केतु 125.21	हर्ष 321.20	नेप 296.08	प्लूटो 244.92
सूर्य	——	——	सप्त	युति	युति	——	——	तृती	——	पंचा	——	युति
249.03	0.00	0.00	9.98	9.00	9.87	0.00	0.00	1.62	0.00	0.96	0.00	9.09
चंद्र	——	——	——	सप्त	——	पंच	——	——	नवां	——	——	——
84.64	0.00	0.00	0.00	3.77	0.00	1.01	0.00	0.00	0.63	0.00	0.00	0.00
मंगल	सप्त	——	——	सप्त	सप्त	——	——	——	तृती	——	——	सप्त
68.50	9.98	0.00	0.00	8.75	9.94	0.00	0.00	0.00	1.96	0.00	0.00	9.31
बुध	युति	सप्त	सप्त	——	युति	——	——	——	——	——	——	युति
253.33	9.00	3.77	8.75	0.00	8.18	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.36
गुरु	युति	——	सप्त	युति	——	——	9वां	तृती	9वां	——	——	युति
247.49	9.87	0.00	9.94	8.18	0.00	0.00	7.37	2.48	9.72	0.00	0.00	9.64
शुक्र	नवां	——	——	अष्ट	——	——	——	चतु	——	——	चतु	——
209.33	0.89	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.09	0.00	0.00	1.98	0.00
शनि	पंच	——	——	पंच	——	3रा	——	सप्त	युति	सप्त	——	——
134.57	0.36	0.00	0.00	2.84	0.00	0.25	0.00	5.57	5.57	7.68	0.00	0.00
राहु	——	——	पंच	——	——	——	सप्त	——	सप्त	——	युति	——
305.21	0.00	0.00	1.96	0.00	0.00	0.00	5.57	0.00	10.00	0.00	5.77	0.00
केतु	पंच	——	——	——	पंच	चतु	युति	सप्त	——	——	सप्त	पंच
125.21	1.62	0.00	0.00	0.00	2.48	0.09	5.57	10.00	0.00	0.00	5.77	2.99
हर्ष	——	पंच	——	——	——	——	सप्त	——	——	——	——	——
321.20	0.00	1.86	0.00	0.00	0.00	0.00	7.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	——	——	——	——	——	——	——	युति	सप्त	——	——	——
296.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.77	5.77	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	——	सप्त	युति	युति	——	——	तृती	——	——	——	——
244.92	9.09	0.00	9.31	6.36	9.64	0.00	0.00	2.99	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

Sample

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	297.39	**331.53**	**5.68**	**39.83**	**65.68**	**91.53**	**117.39**	**151.53**	**185.68**	**219.83**	**245.68**	**271.53**
सूर्य	——	——	पंच	षष्ठ	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——
249.03	0.00	0.00	1.92	0.30	9.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.39	0.00
चंद्र	——	——	——	——	——	युति	——	——	——	अष्टां	——	सप्त
84.64	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.51	0.00	0.00	0.00	0.96	0.00	7.51
मंगल	——	——	——	——	युति	——	——	4था	पंच	——	सप्त	8वां
68.50	0.00	0.00	0.00	0.00	9.57	0.00	0.00	7.46	2.22	0.00	9.57	7.46
बुध	अष्ट	——	——	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——
253.33	0.09	0.00	0.00	0.00	6.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.96	0.00
गुरु	——	चतु	5वां	——	——	——	9वां	——	——	——	युति	——
247.49	0.00	0.04	9.82	0.00	0.00	0.00	4.91	0.00	0.00	0.00	9.82	0.00
शुक्र	चतु	पंच	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——	तृती
209.33	2.62	2.51	0.00	4.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.54	0.00	2.51
शनि	——	——	——	10वा	——	——	——	——	3रा	चतु	——	——
134.57	0.00	0.00	0.00	8.79	0.00	0.00	0.00	0.00	5.97	0.97	0.00	0.00
राहु	युति	——	तृती	चतु	पंच	——	सप्त	——	——	——	——	——
305.21	6.83	0.00	2.98	1.06	2.98	0.00	6.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——	——	चतु	पंच	——
125.21	6.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.83	0.00	0.00	1.06	2.98	0.00
हर्ष	——	युति	अष्ट	——	——	——	——	सप्त	——	——	——	——
321.20	0.00	4.70	0.68	0.00	0.00	0.00	0.00	4.70	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	युति	——	——	——	——	——	सप्त	——	——	——	——	——
296.08	9.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	——	चतु	पंच	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——
244.92	0.00	1.90	2.94	0.00	9.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.97	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

Sample

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	297.39	338.35	12.72	39.83	63.49	87.71	117.39	158.35	192.72	219.83	243.49	267.71
सूर्य	——	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——
249.03	0.00	2.95	1.70	0.30	8.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.37	0.00
चंद्र	——	——	——	——	——	युति	——	——	——	अष्टां	——	सप्त
84.64	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.49	0.00	0.00	0.00	0.96	0.00	9.49
मंगल	——	——	——	——	युति	——	——	4था	पंच	——	सप्त	8वां
68.50	0.00	0.00	0.00	0.00	8.66	0.00	0.00	10.00	1.35	0.00	8.66	4.27
बुध	अष्ट	चतु	पंच	——	सप्त	सप्त	——	——	——	——	युति	युति
253.33	0.09	0.79	2.96	0.00	5.14	0.65	0.00	0.00	0.00	0.00	5.14	0.65
गुरु	——	चतु	5वां	——	——	——	9वां	——	——	——	युति	——
247.49	0.00	2.92	8.54	0.00	0.00	0.00	4.91	0.00	0.00	0.00	9.14	0.00
शुक्र	चतु	——	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——	तृती
209.33	2.62	0.00	0.00	4.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.54	0.00	2.73
शनि	——	——	——	10वा	——	——	——	——	3रा	चतु	——	——
134.57	0.00	0.00	0.00	8.79	0.00	0.00	0.00	0.00	9.81	0.97	0.00	0.00
राहु	युति	——	——	चतु	पंच	——	सप्त	——	——	——	——	——
305.21	6.83	0.00	0.00	1.06	2.70	0.00	6.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——	——	चतु	पंच	——
125.21	6.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.83	0.00	0.00	1.06	2.70	0.00
हर्ष	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——
321.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	युति	——	——	——	——	——	सप्त	——	——	——	——	——
296.08	9.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	——	चतु	——	——	सप्त	——	——	——	——	——	युति	——
244.92	0.00	1.87	0.00	0.00	9.89	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.89	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं

संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त – दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति – युति	0	15	10	सप्त – सप्तम	180	15	10
पंच – पंचम	120	6	3	चतु – चतुर्थ	90	6	3
तृती – तृतीय	60	6	3	अष्ट – अष्टमांश	45	1	1
नवां – नवमांश	40	1	1	पंचा – पंचमांश	72	1	1
अष्टां – अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ – षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां – मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

Sample

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

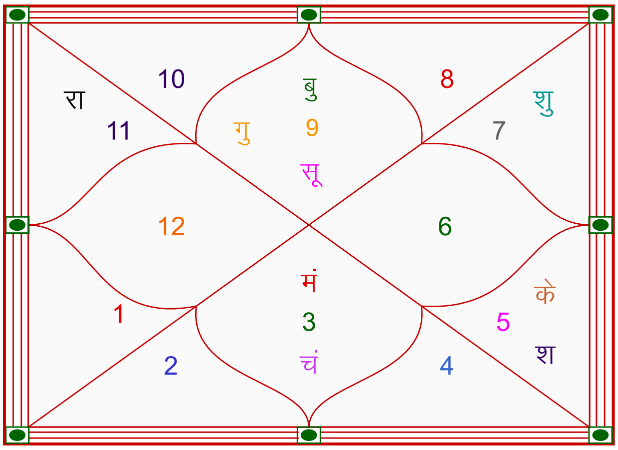

आत्मविचार

चन्द्र कुंडली

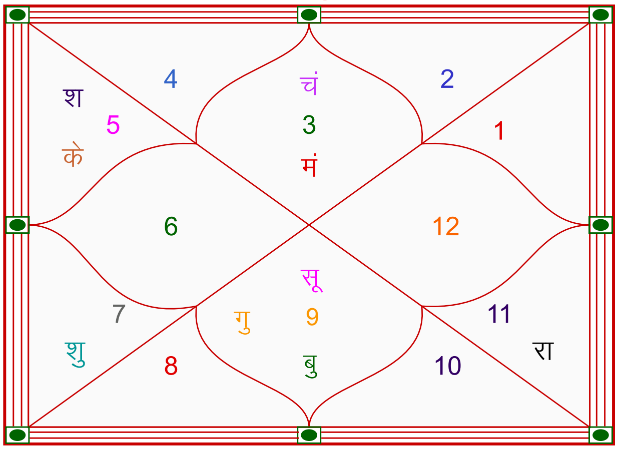

मनोबलविचार

लग्न कुंडली

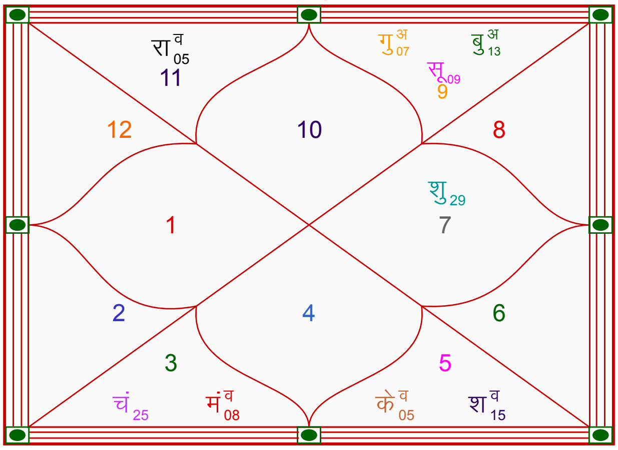

देह विचार

होरा कुंडली

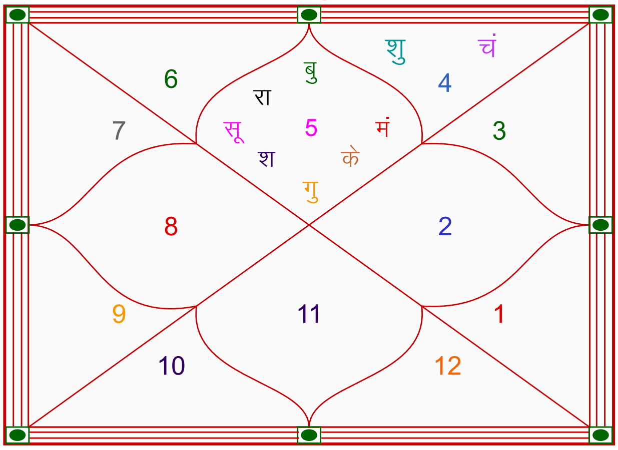

सम्पदाविचार

Sample

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

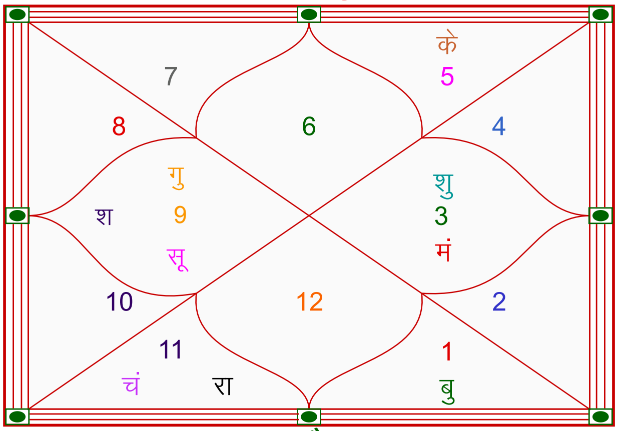

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

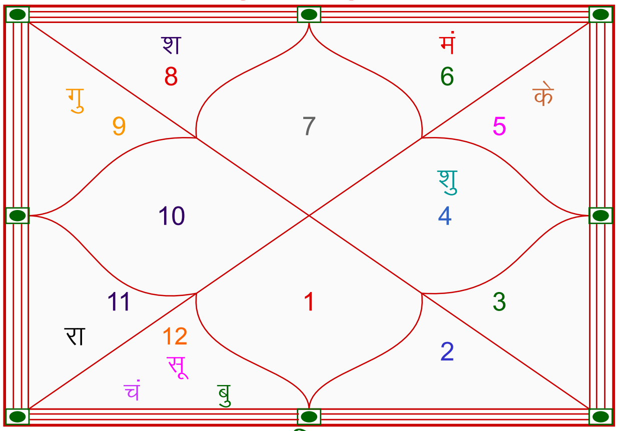

भाग्यविचार

पंचमांश कुंडली

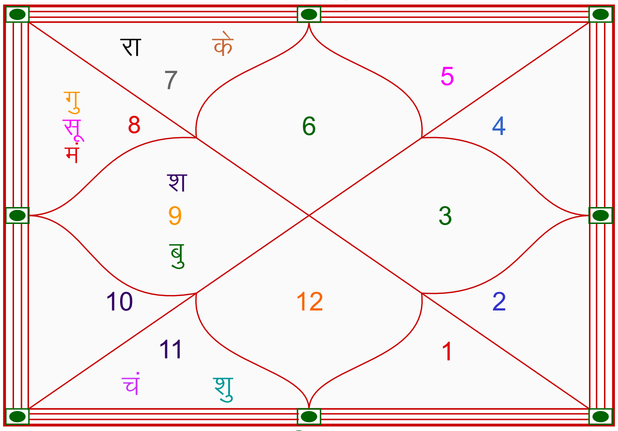

ज्ञानविचार

षष्ठांश कुंडली

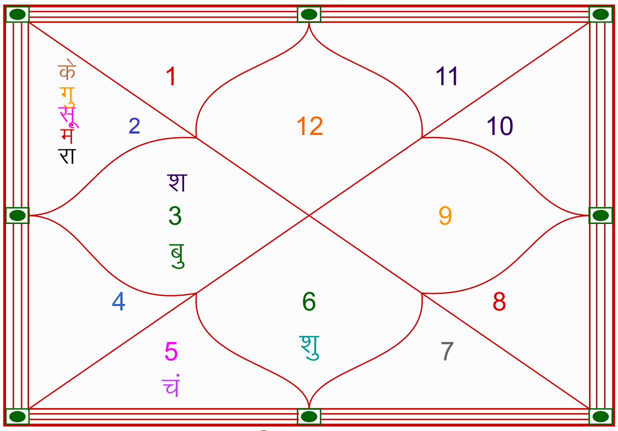

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

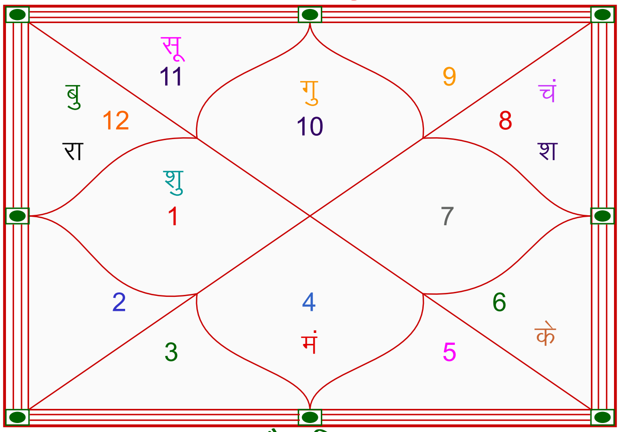

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

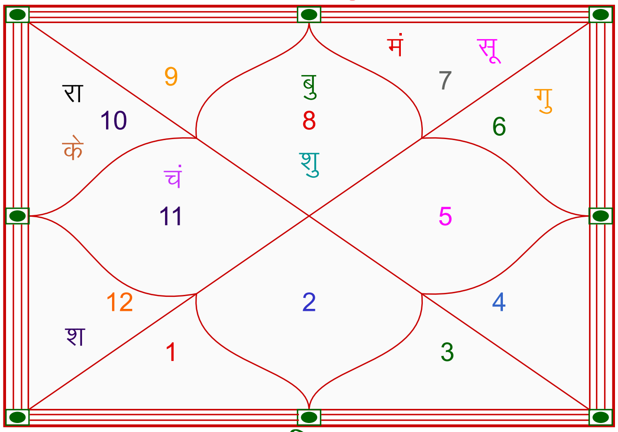

आयुविचार

Sample

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

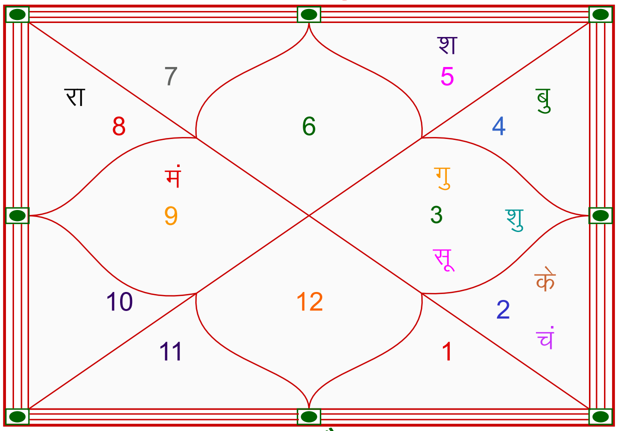

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

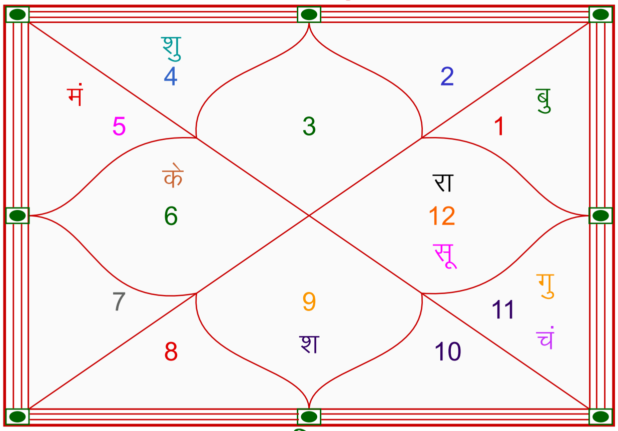

राज्यविचार

एकादशांश कुंडली

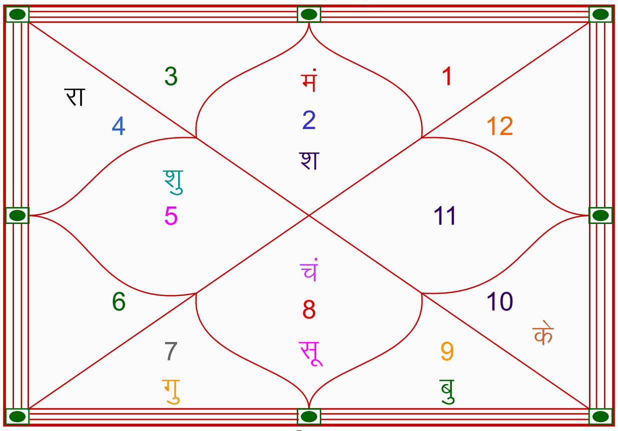

लाभविचार

ादशांश कुंडली

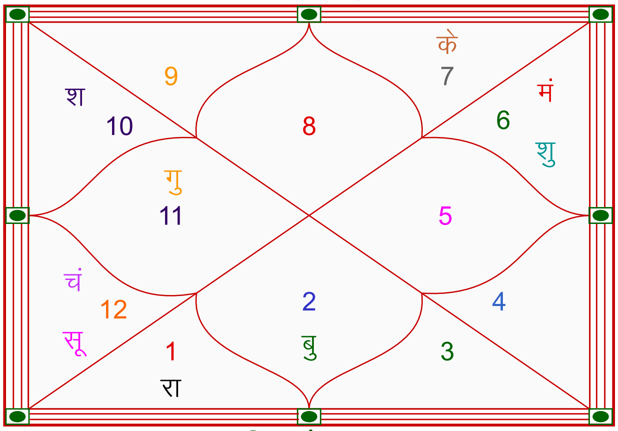

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

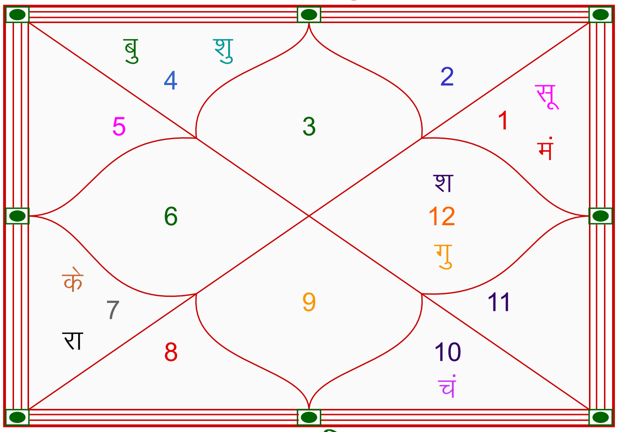

वाहनसुखविचार

विंशांश कुंडली

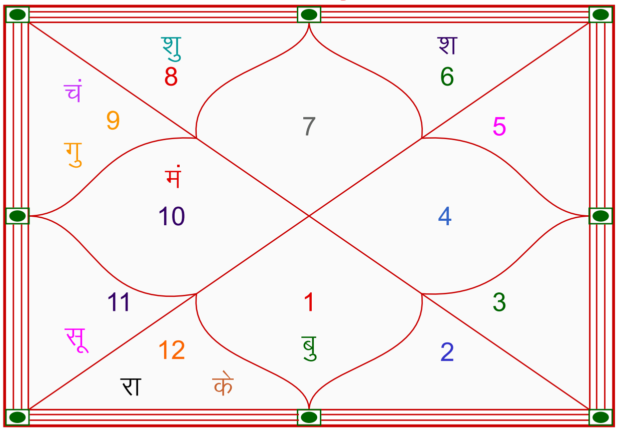

उपासनाज्ञानम्

Sample

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

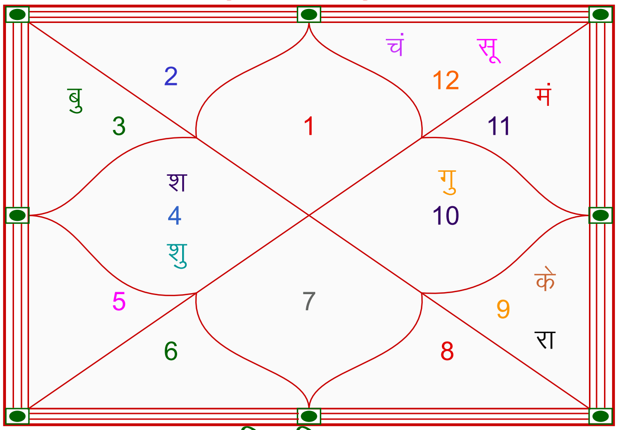

विद्याविचार

सप्तविंशांश कुंडली

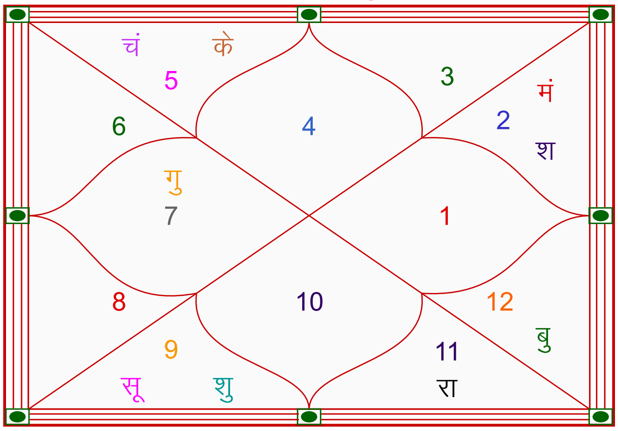

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

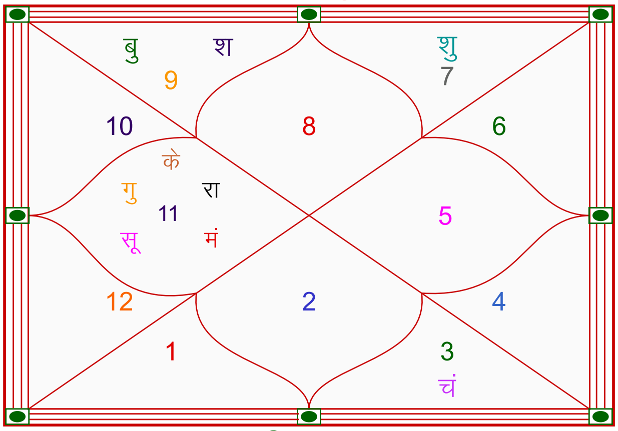

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

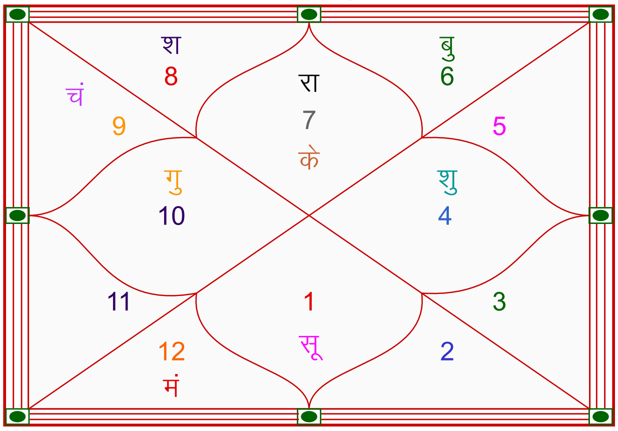

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

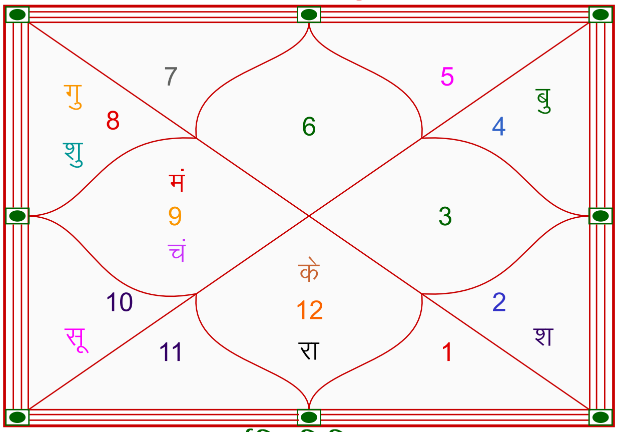

सर्वास्थितिविचार

षष्ट्यंश कुंडली

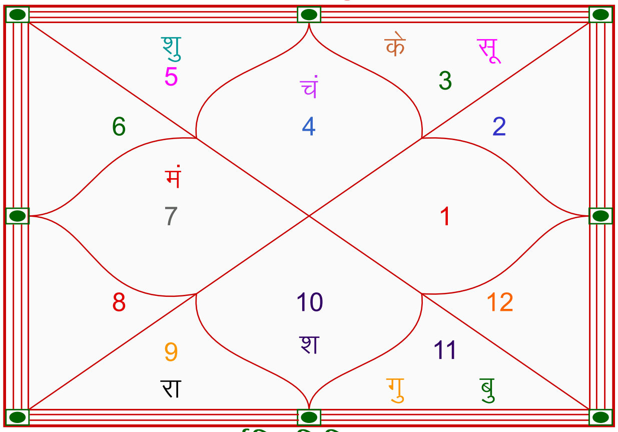

सर्वास्थितिविचार

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मक	धनु	मिथु	मिथु	धनु	धनु	तुला	सिंह	कुंभ	सिंह
होरा	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	कन्या	धनु	कुंभ	मिथु	मेष	धनु	मिथु	धनु	कुंभ	सिंह
चतुर्थांश	तुला	मीन	मीन	कन्या	मीन	धनु	कर्क	वृश्चि	कुंभ	सिंह
सप्तमांश	मक	कुंभ	वृश्चि	कर्क	मीन	मक	मेष	वृश्चि	मीन	कन्या
नवमांश	कन्या	मिथु	वृष	धनु	कर्क	मिथु	मिथु	सिंह	वृश्चि	वृष
दशमांश	मिथु	मीन	कुंभ	सिंह	मेष	कुंभ	कर्क	धनु	मीन	कन्या
द्वादशांश	वृश्चि	मीन	मीन	कन्या	वृष	कुंभ	कन्या	मक	मेष	तुला
षोडशांश	मिथु	मेष	मक	मेष	कर्क	मीन	कर्क	मीन	तुला	तुला
विंशांश	तुला	कुंभ	धनु	मक	मेष	धनु	वृश्चि	कन्या	मीन	मीन
चतुर्विंशांश	मेष	मीन	मीन	कुंभ	मिथु	मक	कर्क	कर्क	धनु	धनु
सप्तविंशांश	कर्क	धनु	सिंह	वृष	मीन	तुला	धनु	वृष	कुंभ	सिंह
त्रिंशांश	वृश्चि	कुंभ	मिथु	कुंभ	धनु	कुंभ	तुला	धनु	कुंभ	कुंभ
खवेदांश	तुला	मेष	धनु	मीन	कन्या	मक	कर्क	वृश्चि	तुला	तुला
अक्षवेदांश	कन्या	मक	धनु	धनु	कर्क	वृश्चि	वृश्चि	वृष	मीन	मीन
षष्ट्यंश	कर्क	मिथु	कर्क	तुला	कुंभ	कुंभ	सिंह	मक	धनु	मिथु

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 –––	1 –––	2 पारिजात	3 कुसुम
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
मंगल	0 –––	0 –––	1 –––	2 भेदक
बुध	0 –––	0 –––	0 –––	2 भेदक
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	5 कन्दुक
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
शनि	1 –––	1 –––	2 पारिजात	2 भेदक
राहु	0 –––	0 –––	0 –––	0 –––
केतु	0 –––	0 –––	0 –––	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	10.00	10.95	7.25	7.90	13.30	17.40	7.00	8.25	9.55
सप्तवर्ग	9.45	10.40	7.75	7.95	12.05	15.93	7.53	9.00	9.48
दशवर्ग	9.03	13.70	8.88	7.75	10.98	12.70	10.85	11.25	8.73
षोडशवर्ग	8.83	12.40	9.45	7.53	11.88	12.70	10.10	10.75	9.55

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	–––	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	–––	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	–––	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	–––	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	–––	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	–––	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	–––	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	–––

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	–––	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	शत्रु	शत्रु	–––	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	–––	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	–––	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	–––	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	–––	शत्रु	शत्रु
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	–––	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	–––

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	–––	सम	सम	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	–––	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	सम	सम	–––	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	शत्रु	–––	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	–––	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	–––	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	–––	सम	अधिशत्रु
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	सम	सम	–––	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	–––

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	20	43	17	31	9	11	38
सप्तवर्गज बल	60	71	43	47	96	148	51
ओजयुग्मक बल	30	15	30	15	30	0	30
केन्द्र बल	15	15	15	15	15	60	30
द्रेष्काण बल	15	15	15	15	15	15	15
कुल स्थान बल	140	159	120	122	165	234	164
कुल दिग्बल	50	45	10	45	43	3	54
नतोन्नत बल	50	10	10	60	50	50	10
पक्ष बल	5	110	5	5	55	55	5
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	0	2	60	60	0	6	19
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	55	122	121	245	164	140	50
कुल चेष्टाबल	0	0	58	13	0	26	41
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-15	-6	-14	-11	-15	-15	-1
कुल षट्बल	290	371	310	440	392	432	316
रूप षट्बल	4.8	6.2	5.2	7.3	6.5	7.2	5.3
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.0	1.0	1.0	1.0	1.0	1.3	1.1
संबंधित पद	7	5	4	3	6	1	2

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	4.43	48.42	30.86	19.91	1.93	16.88	39.38
कष्ट फल	48.78	9.47	9.96	37.21	55.04	40.64	20.56

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	316	392	310	432	440	371	371	440	432	310	392	316
भावदिग्बल	30	40	10	0	20	40	30	10	20	30	40	40
भावदृष्टि बल	17	59	53	17	86	94	66	60	0	-18	-16	3
कुल भाव बल	363	491	374	449	546	505	468	511	452	322	416	359
रूप भाव बल	6.1	8.2	6.2	7.5	9.1	8.4	7.8	8.5	7.5	5.4	6.9	6.0
संबंधित पद	10	4	9	7	1	3	5	2	6	12	8	11

Sample

उपग्रह एवं आरूढ

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मक	27:23:15	——	——	धनिष्ठा	2	23
गुलिक	गु	मेष	07:40:35	——	——	अश्विनी	3	1
काल	का	वृष	01:45:32	——	——	कृतिका	2	3
मृत्यु	मृ	धनु	27:09:45	——	——	उत्तराषाढ़ा	1	21
यमघंटक	यम	कुंभ	13:50:38	——	——	शतभिषा	3	24
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मक	18:30:45	——	——	श्रवण	3	22
धूम	धू	मेष	22:21:32	——	——	भरणी	3	2
व्यतिपात	व्य	मीन	07:38:28	——	——	उ०भाद्रपद	2	26
परिवेश	परि	कन्या	07:38:28	——	——	उ०फाल्गुनी	4	12
इन्द्रचाप	इ	तुला	22:21:32	——	——	विशाखा	1	16
उपकेतु	उप	वृश्चि	09:01:32	——	——	अनुराधा	2	17

प्राणपद	:	तुला	26:11:08	कारकाँश लग्न	:	मिथु	23:58:08
भाव लग्न	:	मीन	13:14:44	होरा लग्न	:	मेष	29:06:13
घटी लग्न	:	कर्क	28:18:56	वर्णद लग्न	:	कुंभ	26:29:28

उपग्रह कुंडली

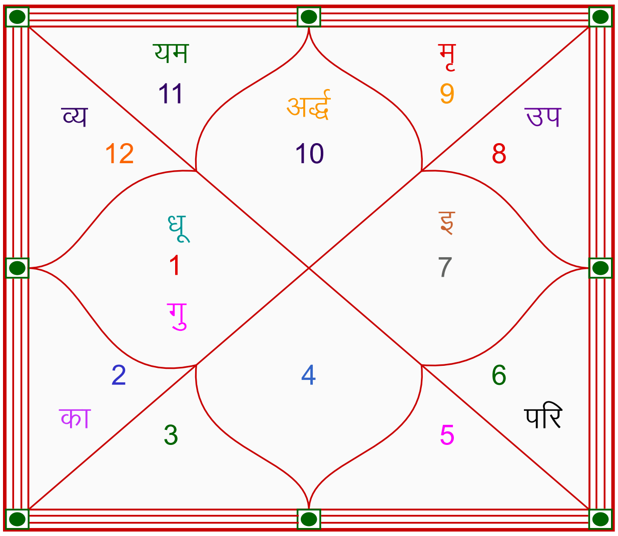

आरूढ कुंडली

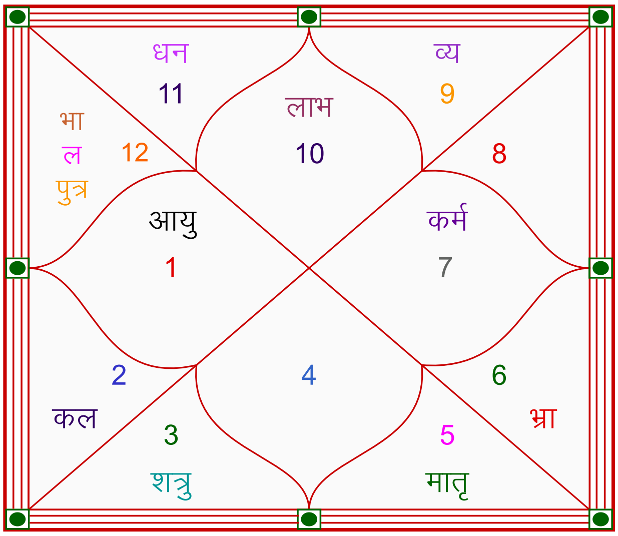

Sample

षन्नाडी चक्र

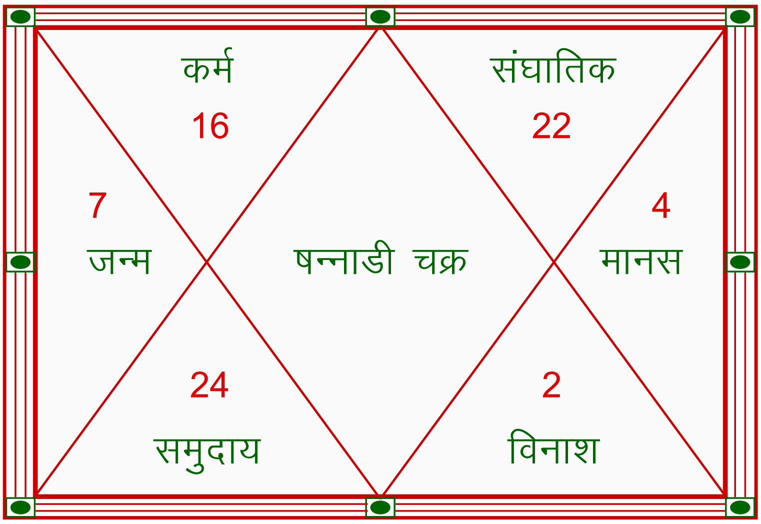

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल
प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध
प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
केतु कुंडली	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध
गुरु कुंडली	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

Sample

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	**3**	**2**	**3**	**6**	**7**	**3**	**4**	**2**	**5**	**5**	**4**	**4**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	6
शुक्र	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
कुल	**7**	**5**	**3**	**3**	**6**	**3**	**5**	**3**	**4**	**5**	**4**	**1**	**49**

मंगल का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
बुध	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	5
कुल	**3**	**1**	**3**	**4**	**4**	**4**	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**5**	**39**

बुध का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
कुल	**3**	**4**	**5**	**3**	**6**	**5**	**4**	**3**	**5**	**4**	**5**	**7**	**54**

गुरू का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
बुध	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
कुल	**6**	**6**	**5**	**5**	**4**	**2**	**5**	**7**	**3**	**5**	**6**	**2**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
मंगल	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	5
चंद्र	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	9
लग्न	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
कुल	**6**	**5**	**2**	**3**	**5**	**2**	**6**	**6**	**3**	**4**	**6**	**4**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	3
बुध	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	6
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
कुल	**4**	**3**	**6**	**5**	**2**	**3**	**0**	**4**	**4**	**3**	**3**	**2**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**4**	**2**	**6**	**3**	**6**	**5**	**1**	**4**	**3**	**6**	**6**	**3**	**49**

Sample

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	3	3	2	4	3	6	5	2	3	0	4	39
गुरु	4	2	5	7	3	5	6	2	6	6	5	5	56
मंगल	5	5	3	1	3	4	4	4	1	2	3	4	39
सूर्य	7	3	4	2	5	5	4	4	3	2	3	6	48
शुक्र	6	6	3	4	6	4	6	5	2	3	5	2	52
बुध	6	5	4	3	5	4	5	7	3	4	5	3	54
चंद्र	4	1	7	5	3	3	6	3	5	3	4	5	49
बिन्दु	36	25	29	24	29	28	37	30	22	23	25	29	337
रेखा	20	31	27	32	27	28	19	26	34	33	31	27	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	0	3	0	2	0	6	3	0	0	0	2	18
गुरु	1	0	0	5	0	3	1	0	3	4	0	3	20
मंगल	4	3	0	0	2	2	1	3	0	0	0	3	18
सूर्य	4	1	1	0	2	3	1	2	0	0	0	4	18
शुक्र	4	3	0	2	4	1	3	3	0	0	2	0	22
बुध	3	1	0	0	2	0	1	4	0	0	1	0	12
चंद्र	1	0	3	2	0	2	2	0	2	2	0	2	16
रेखा	19	8	7	9	12	11	15	15	5	6	3	14	124

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	0	3	0	2	0	6	1	0	0	0	2	16
गुरु	1	0	0	5	0	3	1	0	3	4	0	0	17
मंगल	1	2	0	0	2	2	1	3	0	0	0	3	14
सूर्य	2	0	1	0	2	2	1	2	0	0	0	4	14
शुक्र	1	0	0	2	4	1	3	3	0	0	2	0	16
बुध	3	0	0	0	2	0	1	1	0	0	1	0	8
चंद्र	1	0	3	2	0	0	2	0	2	2	0	0	12
रेखा	11	2	7	9	12	8	15	10	5	6	3	9	97

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	123	81	124	67	96	127	132
ग्रह पिंड	30	93	17	17	67	41	91
शोध्य पिंड	153	174	141	84	163	168	223

Sample

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

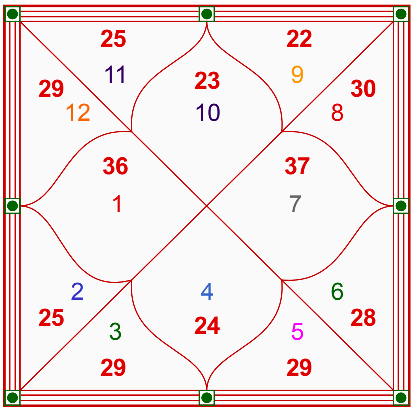

सूर्य का अष्टकवर्ग

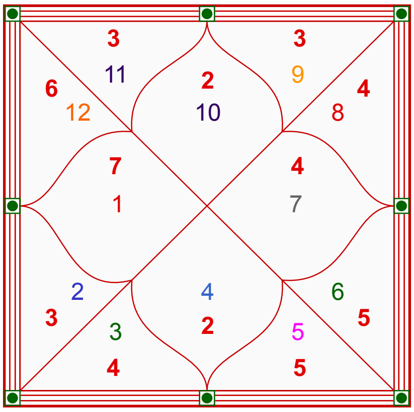

चंद्र का अष्टकवर्ग

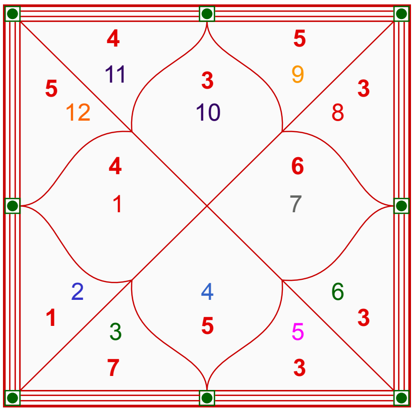

मंगल का अष्टकवर्ग

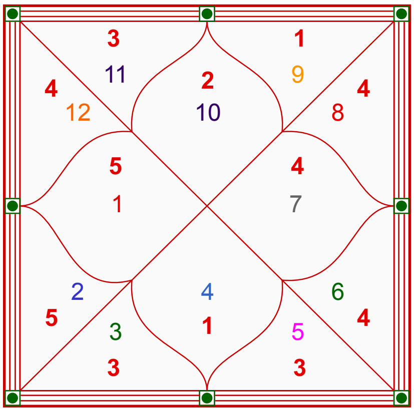

बुध का अष्टकवर्ग

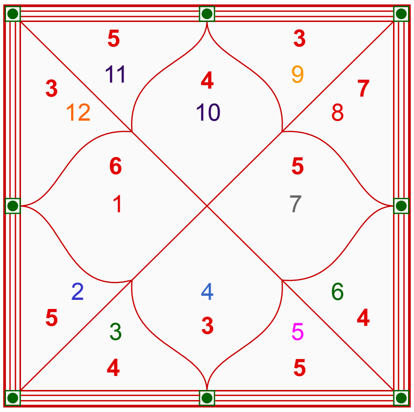

गुरू का अष्टकवर्ग

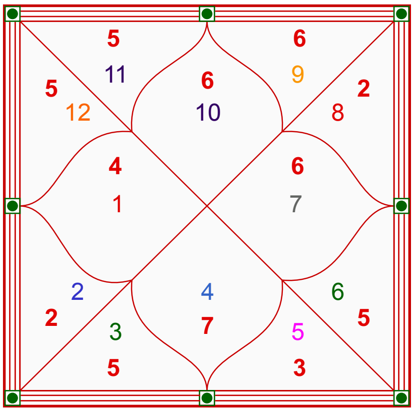

शुक्र का अष्टकवर्ग

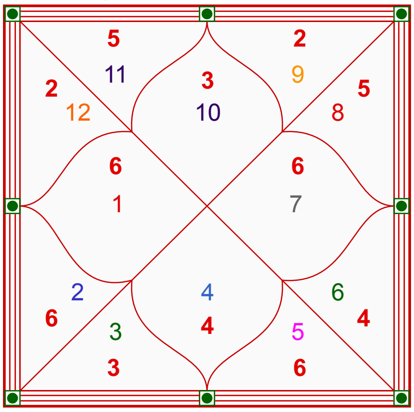

शनि का अष्टकवर्ग

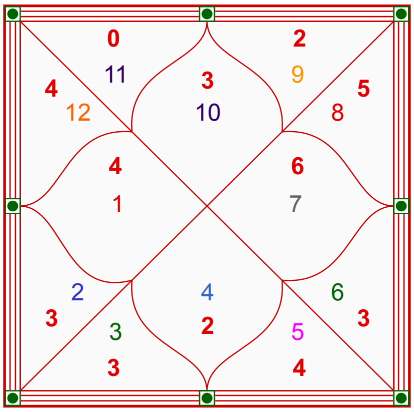

लग्न का अष्टकवर्ग

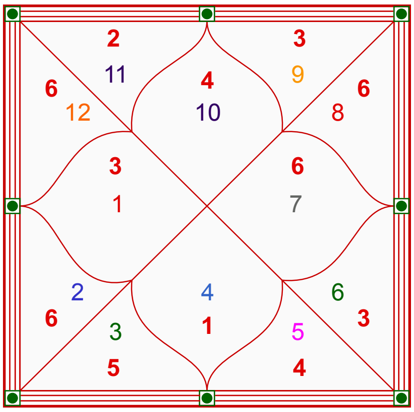

Sample

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 10 वर्ष 5 मास 3 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
25/12/2007		29/05/2018		29/05/2037		29/05/2054		29/05/2061	
29/05/2018		29/05/2037		29/05/2054		29/05/2061		29/05/2081	
	00/00/0000	शनि	01/06/2021	बुध	26/10/2039	केतु	26/10/2054	शुक्र	28/09/2064
	25/12/2007	बुध	09/02/2024	केतु	22/10/2040	शुक्र	26/12/2055	सूर्य	28/09/2065
बुध	05/05/2009	केतु	20/03/2025	शुक्र	23/08/2043	सूर्य	02/05/2056	चंद्र	30/05/2067
केतु	11/04/2010	शुक्र	20/05/2028	सूर्य	28/06/2044	चंद्र	01/12/2056	मंगल	29/07/2068
शुक्र	10/12/2012	सूर्य	02/05/2029	चंद्र	28/11/2045	मंगल	29/04/2057	राहु	30/07/2071
सूर्य	28/09/2013	चंद्र	01/12/2030	मंगल	25/11/2046	राहु	17/05/2058	गुरु	30/03/2074
चंद्र	28/01/2015	मंगल	10/01/2032	राहु	13/06/2049	गुरु	23/04/2059	शनि	29/05/2077
मंगल	04/01/2016	राहु	16/11/2034	गुरु	19/09/2051	शनि	01/06/2060	बुध	29/03/2080
राहु	29/05/2018	गुरु	29/05/2037	शनि	29/05/2054	बुध	29/05/2061	केतु	29/05/2081

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
29/05/2081		30/05/2087		29/05/2097		30/05/2104		30/05/2122	
30/05/2087		29/05/2097		30/05/2104		30/05/2122		00/00/0000	
सूर्य	16/09/2081	चंद्र	29/03/2088	मंगल	25/10/2097	राहु	10/02/2107	गुरु	18/07/2124
चंद्र	17/03/2082	मंगल	28/10/2088	राहु	13/11/2098	गुरु	06/07/2109	शनि	29/01/2127
मंगल	23/07/2082	राहु	29/04/2090	गुरु	20/10/2099	शनि	12/05/2112	बुध	26/12/2127
राहु	17/06/2083	गुरु	29/08/2091	शनि	29/11/2100	बुध	29/11/2114		00/00/0000
गुरु	04/04/2084	शनि	29/03/2093	बुध	26/11/2101	केतु	18/12/2115		00/00/0000
शनि	17/03/2085	बुध	29/08/2094	केतु	24/04/2102	शुक्र	17/12/2118		00/00/0000
बुध	22/01/2086	केतु	30/03/2095	शुक्र	24/06/2103	सूर्य	11/11/2119		00/00/0000
केतु	29/05/2086	शुक्र	28/11/2096	सूर्य	30/10/2103	चंद्र	12/05/2121		00/00/0000
शुक्र	30/05/2087	सूर्य	29/05/2097	चंद्र	30/05/2104	मंगल	30/05/2122		00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 10 वर्ष 5 मा 20 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Sample

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
25/12/2007		**05/05/2009**		**11/04/2010**		**10/12/2012**		**28/09/2013**	
05/05/2009		**11/04/2010**		**10/12/2012**		**28/09/2013**		**28/01/2015**	
	00/00/0000	केतु	25/05/2009	शुक्र	20/09/2010	सूर्य	24/12/2012	चंद्र	08/11/2013
	00/00/0000	शुक्र	21/07/2009	सूर्य	08/11/2010	चंद्र	18/01/2013	मंगल	06/12/2013
	25/12/2007	सूर्य	07/08/2009	चंद्र	28/01/2011	मंगल	04/02/2013	राहु	17/02/2014
सूर्य	08/01/2008	चंद्र	04/09/2009	मंगल	26/03/2011	राहु	20/03/2013	गुरु	23/04/2014
चंद्र	17/03/2008	मंगल	24/09/2009	राहु	19/08/2011	गुरु	28/04/2013	शनि	09/07/2014
मंगल	04/05/2008	राहु	14/11/2009	गुरु	27/12/2011	शनि	13/06/2013	बुध	16/09/2014
राहु	05/09/2008	गुरु	30/12/2009	शनि	29/05/2012	बुध	24/07/2013	केतु	14/10/2014
गुरु	25/12/2008	शनि	21/02/2010	बुध	14/10/2012	केतु	10/08/2013	शुक्र	04/01/2015
शनि	05/05/2009	बुध	11/04/2010	केतु	10/12/2012	शुक्र	28/09/2013	सूर्य	28/01/2015

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
28/01/2015		**04/01/2016**		**29/05/2018**		**01/06/2021**		**09/02/2024**	
04/01/2016		**29/05/2018**		**01/06/2021**		**09/02/2024**		**20/03/2025**	
मंगल	17/02/2015	राहु	14/05/2016	शनि	19/11/2018	बुध	19/10/2021	केतु	04/03/2024
राहु	09/04/2015	गुरु	08/09/2016	बुध	24/04/2019	केतु	15/12/2021	शुक्र	11/05/2024
गुरु	24/05/2015	शनि	25/01/2017	केतु	27/06/2019	शुक्र	28/05/2022	सूर्य	31/05/2024
शनि	17/07/2015	बुध	29/05/2017	शुक्र	27/12/2019	सूर्य	16/07/2022	चंद्र	03/07/2024
बुध	04/09/2015	केतु	19/07/2017	सूर्य	20/02/2020	चंद्र	06/10/2022	मंगल	27/07/2024
केतु	24/09/2015	शुक्र	12/12/2017	चंद्र	22/05/2020	मंगल	02/12/2022	राहु	26/09/2024
शुक्र	19/11/2015	सूर्य	25/01/2018	मंगल	25/07/2020	राहु	29/04/2023	गुरु	19/11/2024
सूर्य	06/12/2015	चंद्र	08/04/2018	राहु	06/01/2021	गुरु	07/09/2023	शनि	22/01/2025
चंद्र	04/01/2016	मंगल	29/05/2018	गुरु	01/06/2021	शनि	09/02/2024	बुध	20/03/2025

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
20/03/2025		**20/05/2028**		**02/05/2029**		**01/12/2030**		**10/01/2032**	
20/05/2028		**02/05/2029**		**01/12/2030**		**10/01/2032**		**16/11/2034**	
शुक्र	29/09/2025	सूर्य	06/06/2028	चंद्र	19/06/2029	मंगल	25/12/2030	राहु	14/06/2032
सूर्य	26/11/2025	चंद्र	05/07/2028	मंगल	23/07/2029	राहु	23/02/2031	गुरु	31/10/2032
चंद्र	02/03/2026	मंगल	25/07/2028	राहु	18/10/2029	गुरु	18/04/2031	शनि	14/04/2033
मंगल	09/05/2026	राहु	15/09/2028	गुरु	03/01/2030	शनि	22/06/2031	बुध	08/09/2033
राहु	29/10/2026	गुरु	01/11/2028	शनि	04/04/2030	बुध	18/08/2031	केतु	08/11/2033
गुरु	01/04/2027	शनि	26/12/2028	बुध	25/06/2030	केतु	11/09/2031	शुक्र	30/04/2034
शनि	02/10/2027	बुध	13/02/2029	केतु	29/07/2030	शुक्र	17/11/2031	सूर्य	21/06/2034
बुध	13/03/2028	केतु	05/03/2029	शुक्र	02/11/2030	सूर्य	07/12/2031	चंद्र	16/09/2034
केतु	20/05/2028	शुक्र	02/05/2029	सूर्य	01/12/2030	चंद्र	10/01/2032	मंगल	16/11/2034

Sample

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
16/11/2034		29/05/2037		26/10/2039		22/10/2040		23/08/2043	
29/05/2037		26/10/2039		22/10/2040		23/08/2043		28/06/2044	
गुरु	19/03/2035	बुध	01/10/2037	केतु	16/11/2039	शुक्र	13/04/2041	सूर्य	07/09/2043
शनि	13/08/2035	केतु	21/11/2037	शुक्र	15/01/2040	सूर्य	03/06/2041	चंद्र	03/10/2043
बुध	22/12/2035	शुक्र	17/04/2038	सूर्य	02/02/2040	चंद्र	29/08/2041	मंगल	21/10/2043
केतु	14/02/2036	सूर्य	31/05/2038	चंद्र	04/03/2040	मंगल	28/10/2041	राहु	07/12/2043
शुक्र	17/07/2036	चंद्र	12/08/2038	मंगल	25/03/2040	राहु	01/04/2042	गुरु	17/01/2044
सूर्य	01/09/2036	मंगल	02/10/2038	राहु	18/05/2040	गुरु	17/08/2042	शनि	07/03/2044
चंद्र	17/11/2036	राहु	11/02/2039	गुरु	05/07/2040	शनि	28/01/2043	बुध	20/04/2044
मंगल	10/01/2037	गुरु	09/06/2039	शनि	01/09/2040	बुध	24/06/2043	केतु	08/05/2044
राहु	29/05/2037	शनि	26/10/2039	बुध	22/10/2040	केतु	23/08/2043	शुक्र	28/06/2044

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
28/06/2044		28/11/2045		25/11/2046		13/06/2049		19/09/2051	
28/11/2045		25/11/2046		13/06/2049		19/09/2051		29/05/2054	
चंद्र	11/08/2044	मंगल	19/12/2045	राहु	14/04/2047	गुरु	02/10/2049	शनि	22/02/2052
मंगल	10/09/2044	राहु	11/02/2046	गुरु	16/08/2047	शनि	10/02/2050	बुध	10/07/2052
राहु	26/11/2044	गुरु	01/04/2046	शनि	10/01/2048	बुध	07/06/2050	केतु	06/09/2052
गुरु	03/02/2045	शनि	28/05/2046	बुध	21/05/2048	केतु	26/07/2050	शुक्र	17/02/2053
शनि	26/04/2045	बुध	18/07/2046	केतु	15/07/2048	शुक्र	10/12/2050	सूर्य	07/04/2053
बुध	09/07/2045	केतु	08/08/2046	शुक्र	17/12/2048	सूर्य	21/01/2051	चंद्र	28/06/2053
केतु	08/08/2045	शुक्र	08/10/2046	सूर्य	02/02/2049	चंद्र	31/03/2051	मंगल	24/08/2053
शुक्र	02/11/2045	सूर्य	26/10/2046	चंद्र	20/04/2049	मंगल	18/05/2051	राहु	18/01/2054
सूर्य	28/11/2045	चंद्र	25/11/2046	मंगल	13/06/2049	राहु	19/09/2051	गुरु	29/05/2054

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
29/05/2054		26/10/2054		26/12/2055		02/05/2056		01/12/2056	
26/10/2054		26/12/2055		02/05/2056		01/12/2056		29/04/2057	
केतु	07/06/2054	शुक्र	05/01/2055	सूर्य	01/01/2056	चंद्र	19/05/2056	मंगल	09/12/2056
शुक्र	02/07/2054	सूर्य	26/01/2055	चंद्र	12/01/2056	मंगल	01/06/2056	राहु	01/01/2057
सूर्य	10/07/2054	चंद्र	02/03/2055	मंगल	19/01/2056	राहु	03/07/2056	गुरु	21/01/2057
चंद्र	22/07/2054	मंगल	27/03/2055	राहु	07/02/2056	गुरु	31/07/2056	शनि	13/02/2057
मंगल	31/07/2054	राहु	30/05/2055	गुरु	24/02/2056	शनि	03/09/2056	बुध	06/03/2057
राहु	22/08/2054	गुरु	26/07/2055	शनि	16/03/2056	बुध	03/10/2056	केतु	15/03/2057
गुरु	11/09/2054	शनि	02/10/2055	बुध	03/04/2056	केतु	15/10/2056	शुक्र	09/04/2057
शनि	05/10/2054	बुध	01/12/2055	केतु	10/04/2056	शुक्र	20/11/2056	सूर्य	16/04/2057
बुध	26/10/2054	केतु	26/12/2055	शुक्र	02/05/2056	सूर्य	01/12/2056	चंद्र	29/04/2057

Sample

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
29/04/2057		17/05/2058		23/04/2059		01/06/2060		29/05/2061	
17/05/2058		23/04/2059		01/06/2060		29/05/2061		28/09/2064	
राहु	25/06/2057	गुरु	02/07/2058	शनि	26/06/2059	बुध	22/07/2060	शुक्र	18/12/2061
गुरु	15/08/2057	शनि	25/08/2058	बुध	23/08/2059	केतु	12/08/2060	सूर्य	17/02/2062
शनि	15/10/2057	बुध	12/10/2058	केतु	15/09/2059	शुक्र	12/10/2060	चंद्र	29/05/2062
बुध	09/12/2057	केतु	01/11/2058	शुक्र	22/11/2059	सूर्य	30/10/2060	मंगल	09/08/2062
केतु	31/12/2057	शुक्र	28/12/2058	सूर्य	12/12/2059	चंद्र	29/11/2060	राहु	07/02/2063
शुक्र	05/03/2058	सूर्य	14/01/2059	चंद्र	15/01/2060	मंगल	20/12/2060	गुरु	19/07/2063
सूर्य	24/03/2058	चंद्र	11/02/2059	मंगल	07/02/2060	राहु	13/02/2061	शनि	28/01/2064
चंद्र	25/04/2058	मंगल	03/03/2059	राहु	08/04/2060	गुरु	02/04/2061	बुध	19/07/2064
मंगल	17/05/2058	राहु	23/04/2059	गुरु	01/06/2060	शनि	29/05/2061	केतु	28/09/2064

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
28/09/2064		28/09/2065		30/05/2067		29/07/2068		30/07/2071	
28/09/2065		30/05/2067		29/07/2068		30/07/2071		30/03/2074	
सूर्य	16/10/2064	चंद्र	18/11/2065	मंगल	24/06/2067	राहु	09/01/2069	गुरु	06/12/2071
चंद्र	15/11/2064	मंगल	23/12/2065	राहु	27/08/2067	गुरु	04/06/2069	शनि	09/05/2072
मंगल	07/12/2064	राहु	25/03/2066	गुरु	22/10/2067	शनि	25/11/2069	बुध	24/09/2072
राहु	31/01/2065	गुरु	14/06/2066	शनि	29/12/2067	बुध	29/04/2070	केतु	20/11/2072
गुरु	20/03/2065	शनि	18/09/2066	बुध	27/02/2068	केतु	02/07/2070	शुक्र	01/05/2073
शनि	17/05/2065	बुध	13/12/2066	केतु	23/03/2068	शुक्र	01/01/2071	सूर्य	19/06/2073
बुध	08/07/2065	केतु	18/01/2067	शुक्र	02/06/2068	सूर्य	24/02/2071	चंद्र	08/09/2073
केतु	29/07/2065	शुक्र	29/04/2067	सूर्य	23/06/2068	चंद्र	27/05/2071	मंगल	04/11/2073
शुक्र	28/09/2065	सूर्य	30/05/2067	चंद्र	29/07/2068	मंगल	30/07/2071	राहु	30/03/2074

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
30/03/2074		29/05/2077		29/03/2080		29/05/2081		16/09/2081	
29/05/2077		29/03/2080		29/05/2081		16/09/2081		17/03/2082	
शनि	29/09/2074	बुध	23/10/2077	केतु	23/04/2080	सूर्य	04/06/2081	चंद्र	01/10/2081
बुध	12/03/2075	केतु	22/12/2077	शुक्र	03/07/2080	चंद्र	13/06/2081	मंगल	12/10/2081
केतु	18/05/2075	शुक्र	13/06/2078	सूर्य	24/07/2080	मंगल	19/06/2081	राहु	08/11/2081
शुक्र	27/11/2075	सूर्य	03/08/2078	चंद्र	29/08/2080	राहु	06/07/2081	गुरु	02/12/2081
सूर्य	24/01/2076	चंद्र	29/10/2078	मंगल	23/09/2080	गुरु	20/07/2081	शनि	31/12/2081
चंद्र	29/04/2076	मंगल	28/12/2078	राहु	26/11/2080	शनि	07/08/2081	बुध	26/01/2082
मंगल	06/07/2076	राहु	01/06/2079	गुरु	21/01/2081	बुध	22/08/2081	केतु	06/02/2082
राहु	26/12/2076	गुरु	17/10/2079	शनि	30/03/2081	केतु	29/08/2081	शुक्र	08/03/2082
गुरु	29/05/2077	शनि	29/03/2080	बुध	29/05/2081	शुक्र	16/09/2081	सूर्य	17/03/2082

Sample

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
17/03/2082		23/07/2082		17/06/2083		04/04/2084		17/03/2085	
23/07/2082		17/06/2083		04/04/2084		17/03/2085		22/01/2086	
मंगल	25/03/2082	राहु	11/09/2082	गुरु	26/07/2083	शनि	29/05/2084	बुध	30/04/2085
राहु	13/04/2082	गुरु	24/10/2082	शनि	10/09/2083	बुध	17/07/2084	केतु	18/05/2085
गुरु	30/04/2082	शनि	15/12/2082	बुध	22/10/2083	केतु	07/08/2084	शुक्र	09/07/2085
शनि	20/05/2082	बुध	31/01/2083	केतु	08/11/2083	शुक्र	03/10/2084	सूर्य	25/07/2085
बुध	07/06/2082	केतु	19/02/2083	शुक्र	26/12/2083	सूर्य	21/10/2084	चंद्र	19/08/2085
केतु	15/06/2082	शुक्र	15/04/2083	सूर्य	10/01/2084	चंद्र	19/11/2084	मंगल	07/09/2085
शुक्र	06/07/2082	सूर्य	01/05/2083	चंद्र	03/02/2084	मंगल	09/12/2084	राहु	23/10/2085
सूर्य	13/07/2082	चंद्र	29/05/2083	मंगल	20/02/2084	राहु	30/01/2085	गुरु	03/12/2085
चंद्र	23/07/2082	मंगल	17/06/2083	राहु	04/04/2084	गुरु	17/03/2085	शनि	22/01/2086

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
22/01/2086		29/05/2086		30/05/2087		29/03/2088		28/10/2088	
29/05/2086		30/05/2087		29/03/2088		28/10/2088		29/04/2090	
केतु	29/01/2086	शुक्र	29/07/2086	चंद्र	24/06/2087	मंगल	11/04/2088	राहु	18/01/2089
शुक्र	19/02/2086	सूर्य	17/08/2086	मंगल	12/07/2087	राहु	13/05/2088	गुरु	01/04/2089
सूर्य	26/02/2086	चंद्र	16/09/2086	राहु	27/08/2087	गुरु	10/06/2088	शनि	27/06/2089
चंद्र	08/03/2086	मंगल	07/10/2086	गुरु	06/10/2087	शनि	14/07/2088	बुध	13/09/2089
मंगल	16/03/2086	राहु	01/12/2086	शनि	23/11/2087	बुध	13/08/2088	केतु	15/10/2089
राहु	04/04/2086	गुरु	19/01/2087	बुध	05/01/2088	केतु	25/08/2088	शुक्र	14/01/2090
गुरु	21/04/2086	शनि	18/03/2087	केतु	23/01/2088	शुक्र	30/09/2088	सूर्य	10/02/2090
शनि	11/05/2086	बुध	08/05/2087	शुक्र	14/03/2088	सूर्य	10/10/2088	चंद्र	28/03/2090
बुध	29/05/2086	केतु	30/05/2087	सूर्य	29/03/2088	चंद्र	28/10/2088	मंगल	29/04/2090

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
29/04/2090		29/08/2091		29/03/2093		29/08/2094		30/03/2095	
29/08/2091		29/03/2093		29/08/2094		30/03/2095		28/11/2096	
गुरु	03/07/2090	शनि	29/11/2091	बुध	11/06/2093	केतु	10/09/2094	शुक्र	09/07/2095
शनि	18/09/2090	बुध	19/02/2092	केतु	11/07/2093	शुक्र	16/10/2094	सूर्य	09/08/2095
बुध	26/11/2090	केतु	23/03/2092	शुक्र	05/10/2093	सूर्य	26/10/2094	चंद्र	28/09/2095
केतु	24/12/2090	शुक्र	28/06/2092	सूर्य	31/10/2093	चंद्र	13/11/2094	मंगल	03/11/2095
शुक्र	16/03/2091	सूर्य	27/07/2092	चंद्र	13/12/2093	मंगल	26/11/2094	राहु	02/02/2096
सूर्य	09/04/2091	चंद्र	13/09/2092	मंगल	12/01/2094	राहु	28/12/2094	गुरु	23/04/2096
चंद्र	20/05/2091	मंगल	17/10/2092	राहु	31/03/2094	गुरु	25/01/2095	शनि	29/07/2096
मंगल	17/06/2091	राहु	11/01/2093	गुरु	08/06/2094	शनि	28/02/2095	बुध	23/10/2096
राहु	29/08/2091	गुरु	29/03/2093	शनि	29/08/2094	बुध	30/03/2095	केतु	28/11/2096

Sample

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
28/11/2096		29/05/2097		25/10/2097		13/11/2098		20/10/2099	
29/05/2097		25/10/2097		13/11/2098		20/10/2099		29/11/2100	
सूर्य	07/12/2096	मंगल	07/06/2097	राहु	22/12/2097	गुरु	28/12/2098	शनि	23/12/2099
चंद्र	22/12/2096	राहु	29/06/2097	गुरु	11/02/2098	शनि	20/02/2099	बुध	18/02/2100
मंगल	02/01/2097	गुरु	19/07/2097	शनि	13/04/2098	बुध	10/04/2099	केतु	14/03/2100
राहु	29/01/2097	शनि	12/08/2097	बुध	06/06/2098	केतु	30/04/2099	शुक्र	20/05/2100
गुरु	22/02/2097	बुध	02/09/2097	केतु	28/06/2098	शुक्र	25/06/2099	सूर्य	10/06/2100
शनि	23/03/2097	केतु	11/09/2097	शुक्र	31/08/2098	सूर्य	12/07/2099	चंद्र	13/07/2100
बुध	18/04/2097	शुक्र	06/10/2097	सूर्य	20/09/2098	चंद्र	10/08/2099	मंगल	06/08/2100
केतु	29/04/2097	सूर्य	13/10/2097	चंद्र	22/10/2098	मंगल	30/08/2099	राहु	06/10/2100
शुक्र	29/05/2097	चंद्र	25/10/2097	मंगल	13/11/2098	राहु	20/10/2099	गुरु	29/11/2100

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
29/11/2100		26/11/2101		24/04/2102		24/06/2103		30/10/2103	
26/11/2101		24/04/2102		24/06/2103		30/10/2103		30/05/2104	
बुध	19/01/2101	केतु	05/12/2101	शुक्र	04/07/2102	सूर्य	30/06/2103	चंद्र	17/11/2103
केतु	09/02/2101	शुक्र	29/12/2101	सूर्य	25/07/2102	चंद्र	11/07/2103	मंगल	29/11/2103
शुक्र	10/04/2101	सूर्य	06/01/2102	चंद्र	30/08/2102	मंगल	19/07/2103	राहु	31/12/2103
सूर्य	29/04/2101	चंद्र	18/01/2102	मंगल	24/09/2102	राहु	07/08/2103	गुरु	28/01/2104
चंद्र	29/05/2101	मंगल	27/01/2102	राहु	27/11/2102	गुरु	24/08/2103	शनि	02/03/2104
मंगल	19/06/2101	राहु	18/02/2102	गुरु	22/01/2103	शनि	13/09/2103	बुध	01/04/2104
राहु	12/08/2101	गुरु	10/03/2102	शनि	31/03/2103	बुध	01/10/2103	केतु	14/04/2104
गुरु	29/09/2101	शनि	03/04/2102	बुध	30/05/2103	केतु	09/10/2103	शुक्र	19/05/2104
शनि	26/11/2101	बुध	24/04/2102	केतु	24/06/2103	शुक्र	30/10/2103	सूर्य	30/05/2104

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
30/05/2104		10/02/2107		06/07/2109		12/05/2112		29/11/2114	
10/02/2107		06/07/2109		12/05/2112		29/11/2114		18/12/2115	
राहु	25/10/2104	गुरु	07/06/2107	शनि	18/12/2109	बुध	21/09/2112	केतु	21/12/2114
गुरु	05/03/2105	शनि	24/10/2107	बुध	14/05/2110	केतु	14/11/2112	शुक्र	23/02/2115
शनि	09/08/2105	बुध	25/02/2108	केतु	14/07/2110	शुक्र	18/04/2113	सूर्य	15/03/2115
बुध	26/12/2105	केतु	16/04/2108	शुक्र	03/01/2111	सूर्य	04/06/2113	चंद्र	16/04/2115
केतु	22/02/2106	शुक्र	09/09/2108	सूर्य	24/02/2111	चंद्र	20/08/2113	मंगल	08/05/2115
शुक्र	05/08/2106	सूर्य	23/10/2108	चंद्र	22/05/2111	मंगल	14/10/2113	राहु	04/07/2115
सूर्य	23/09/2106	चंद्र	04/01/2109	मंगल	22/07/2111	राहु	02/03/2114	गुरु	25/08/2115
चंद्र	15/12/2106	मंगल	24/02/2109	राहु	25/12/2111	गुरु	05/07/2114	शनि	24/10/2115
मंगल	10/02/2107	राहु	06/07/2109	गुरु	12/05/2112	शनि	29/11/2114	बुध	18/12/2115

Sample

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शनि - राहु	
25/07/2020 11:05	
06/01/2021 06:44	
राहु	19/08/2020 04:26
गुरु	10/09/2020 03:51
शनि	06/10/2020 06:10
बुध	29/10/2020 14:33
केतु	08/11/2020 05:18
शुक्र	05/12/2020 16:34
सूर्य	13/12/2020 22:21
चंद्र	27/12/2020 16:00
मंगल	06/01/2021 06:44

शनि - शनि - गुरु	
06/01/2021 06:44	
01/06/2021 18:53	
गुरु	25/01/2021 19:34
शनि	18/02/2021 00:17
बुध	10/03/2021 18:24
केतु	19/03/2021 07:31
शुक्र	12/04/2021 17:32
सूर्य	20/04/2021 01:20
चंद्र	02/05/2021 06:21
मंगल	10/05/2021 19:28
राहु	01/06/2021 18:53

शनि - बुध - बुध	
01/06/2021 18:53	
19/10/2021 01:32	
बुध	21/06/2021 12:25
केतु	29/06/2021 15:25
शुक्र	22/07/2021 20:31
सूर्य	29/07/2021 19:39
चंद्र	10/08/2021 10:12
मंगल	18/08/2021 13:11
राहु	08/09/2021 10:35
गुरु	27/09/2021 00:16
शनि	19/10/2021 01:32

शनि - बुध - केतु	
19/10/2021 01:32	
15/12/2021 09:55	
केतु	22/10/2021 09:49
शुक्र	31/10/2021 23:13
सूर्य	03/11/2021 20:02
चंद्र	08/11/2021 14:44
मंगल	11/11/2021 23:01
राहु	20/11/2021 13:29
गुरु	28/11/2021 05:00
शनि	07/12/2021 06:55
बुध	15/12/2021 09:55

शनि - बुध - शुक्र	
15/12/2021 09:55	
28/05/2022 06:26	
शुक्र	11/01/2022 17:20
सूर्य	19/01/2022 21:57
चंद्र	02/02/2022 13:40
मंगल	12/02/2022 03:04
राहु	08/03/2022 16:57
गुरु	30/03/2022 13:17
शनि	25/04/2022 11:56
बुध	18/05/2022 17:02
केतु	28/05/2022 06:26

शनि - बुध - सूर्य	
28/05/2022 06:26	
16/07/2022 10:12	
सूर्य	30/05/2022 17:25
चंद्र	03/06/2022 19:44
मंगल	06/06/2022 16:33
राहु	14/06/2022 01:31
गुरु	20/06/2022 14:49
शनि	28/06/2022 09:37
बुध	05/07/2022 08:45
केतु	08/07/2022 05:34
शुक्र	16/07/2022 10:12

शनि - बुध - चंद्र	
16/07/2022 10:12	
06/10/2022 08:27	
चंद्र	23/07/2022 06:03
मंगल	28/07/2022 00:45
राहु	09/08/2022 07:41
गुरु	20/08/2022 05:51
शनि	02/09/2022 05:11
बुध	13/09/2022 19:44
केतु	18/09/2022 14:26
शुक्र	02/10/2022 06:09
सूर्य	06/10/2022 08:27

शनि - बुध - मंगल	
06/10/2022 08:27	
02/12/2022 16:50	
मंगल	09/10/2022 16:45
राहु	18/10/2022 07:12
गुरु	25/10/2022 22:43
शनि	04/11/2022 00:39
बुध	12/11/2022 03:38
केतु	15/11/2022 11:55
शुक्र	25/11/2022 01:19
सूर्य	27/11/2022 22:08
चंद्र	02/12/2022 16:50

शनि - बुध - राहु	
02/12/2022 16:50	
29/04/2023 04:07	
राहु	24/12/2022 19:44
गुरु	13/01/2023 11:38
शनि	05/02/2023 20:01
बुध	26/02/2023 17:25
केतु	07/03/2023 07:52
शुक्र	31/03/2023 21:45
सूर्य	08/04/2023 06:43
चंद्र	20/04/2023 13:39
मंगल	29/04/2023 04:07

शनि - बुध - गुरु	
29/04/2023 04:07	
07/09/2023 06:08	
गुरु	16/05/2023 15:35
शनि	06/06/2023 09:42
बुध	24/06/2023 23:23
केतु	02/07/2023 14:54
शुक्र	24/07/2023 11:14
सूर्य	31/07/2023 00:33
चंद्र	10/08/2023 22:43
मंगल	18/08/2023 14:14
राहु	07/09/2023 06:08

शनि - बुध - शनि	
07/09/2023 06:08	
09/02/2024 22:02	
शनि	01/10/2023 21:39
बुध	23/10/2023 22:54
केतु	02/11/2023 00:50
शुक्र	27/11/2023 23:29
सूर्य	05/12/2023 18:16
चंद्र	18/12/2023 17:36
मंगल	27/12/2023 19:32
राहु	20/01/2024 03:55
गुरु	09/02/2024 22:02

शनि - केतु - केतु	
09/02/2024 22:02	
04/03/2024 12:47	
केतु	11/02/2024 07:05
शुक्र	15/02/2024 05:33
सूर्य	16/02/2024 09:53
चंद्र	18/02/2024 09:07
मंगल	19/02/2024 18:10
राहु	23/02/2024 07:11
गुरु	26/02/2024 10:45
शनि	01/03/2024 04:29
बुध	04/03/2024 12:47

Sample

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - केतु - शुक्र	
04/03/2024 12:47	
11/05/2024 00:03	
शुक्र	15/03/2024 18:39
सूर्य	19/03/2024 03:37
चंद्र	24/03/2024 18:34
मंगल	28/03/2024 17:01
राहु	07/04/2024 19:54
गुरु	16/04/2024 19:49
शनि	27/04/2024 12:12
बुध	07/05/2024 01:36
केतु	11/05/2024 00:03

शनि - केतु - सूर्य	
11/05/2024 00:03	
31/05/2024 05:50	
सूर्य	12/05/2024 00:20
चंद्र	13/05/2024 16:49
मंगल	14/05/2024 21:10
राहु	17/05/2024 22:02
गुरु	20/05/2024 14:48
शनि	23/05/2024 19:43
बुध	26/05/2024 16:32
केतु	27/05/2024 20:52
शुक्र	31/05/2024 05:50

शनि - केतु - चंद्र	
31/05/2024 05:50	
03/07/2024 23:28	
चंद्र	03/06/2024 01:18
मंगल	05/06/2024 00:32
राहु	10/06/2024 01:59
गुरु	14/06/2024 13:56
शनि	19/06/2024 22:07
बुध	24/06/2024 16:49
केतु	26/06/2024 16:03
शुक्र	02/07/2024 06:59
सूर्य	03/07/2024 23:28

शनि - केतु - मंगल	
03/07/2024 23:28	
27/07/2024 14:13	
मंगल	05/07/2024 08:32
राहु	08/07/2024 21:33
गुरु	12/07/2024 01:07
शनि	15/07/2024 18:51
बुध	19/07/2024 03:08
केतु	20/07/2024 12:12
शुक्र	24/07/2024 10:39
सूर्य	25/07/2024 14:59
चंद्र	27/07/2024 14:13

शनि - केतु - राहु	
27/07/2024 14:13	
26/09/2024 07:34	
राहु	05/08/2024 16:49
गुरु	13/08/2024 19:08
शनि	23/08/2024 09:53
बुध	01/09/2024 00:20
केतु	04/09/2024 13:21
शुक्र	14/09/2024 16:14
सूर्य	17/09/2024 17:06
चंद्र	22/09/2024 18:33
मंगल	26/09/2024 07:34

शनि - केतु - गुरु	
26/09/2024 07:34	
19/11/2024 06:59	
गुरु	03/10/2024 12:17
शनि	12/10/2024 01:24
बुध	19/10/2024 16:55
केतु	22/10/2024 20:29
शुक्र	31/10/2024 20:23
सूर्य	03/11/2024 13:09
चंद्र	08/11/2024 01:06
मंगल	11/11/2024 04:40
राहु	19/11/2024 06:59

शनि - केतु - शनि	
19/11/2024 06:59	
22/01/2025 09:18	
शनि	29/11/2024 10:33
बुध	08/12/2024 12:29
केतु	12/12/2024 06:13
शुक्र	22/12/2024 22:36
सूर्य	26/12/2024 03:31
चंद्र	31/12/2024 11:42
मंगल	04/01/2025 05:26
राहु	13/01/2025 20:11
गुरु	22/01/2025 09:18

शनि - केतु - बुध	
22/01/2025 09:18	
20/03/2025 17:41	
बुध	30/01/2025 12:17
केतु	02/02/2025 20:34
शुक्र	12/02/2025 09:58
सूर्य	15/02/2025 06:47
चंद्र	20/02/2025 01:29
मंगल	23/02/2025 09:47
राहु	04/03/2025 00:14
गुरु	11/03/2025 15:45
शनि	20/03/2025 17:41

शनि - शुक्र - शुक्र	
20/03/2025 17:41	
29/09/2025 12:11	
शुक्र	21/04/2025 20:46
सूर्य	01/05/2025 12:05
चंद्र	17/05/2025 13:38
मंगल	28/05/2025 19:31
राहु	26/06/2025 17:29
गुरु	22/07/2025 10:21
शनि	21/08/2025 22:53
बुध	18/09/2025 06:18
केतु	29/09/2025 12:11

शनि - शुक्र - सूर्य	
29/09/2025 12:11	
26/11/2025 08:08	
सूर्य	02/10/2025 09:35
चंद्र	07/10/2025 05:14
मंगल	10/10/2025 14:12
राहु	19/10/2025 06:24
गुरु	26/10/2025 23:27
शनि	05/11/2025 03:13
बुध	13/11/2025 07:50
केतु	16/11/2025 16:48
शुक्र	26/11/2025 08:08

शनि - शुक्र - चंद्र	
26/11/2025 08:08	
02/03/2026 17:23	
चंद्र	04/12/2025 08:54
मंगल	09/12/2025 23:50
राहु	24/12/2025 10:50
गुरु	06/01/2026 07:16
शनि	21/01/2026 13:32
बुध	04/02/2026 05:14
केतु	09/02/2026 20:11
शुक्र	25/02/2026 21:43
सूर्य	02/03/2026 17:23

शनि - शुक्र - मंगल	
02/03/2026 17:23	
09/05/2026 04:39	
मंगल	06/03/2026 15:50
राहु	16/03/2026 18:44
गुरु	25/03/2026 18:38
शनि	05/04/2026 11:01
बुध	15/04/2026 00:25
केतु	18/04/2026 22:52
शुक्र	30/04/2026 04:45
सूर्य	03/05/2026 13:43
चंद्र	09/05/2026 04:39

Sample

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शुक्र - राहु	
09/05/2026 04:39	
29/10/2026 16:30	
राहु	04/06/2026 05:14
गुरु	27/06/2026 08:25
शनि	24/07/2026 19:41
बुध	18/08/2026 09:34
केतु	28/08/2026 12:28
शुक्र	26/09/2026 10:26
सूर्य	05/10/2026 02:38
चंद्र	19/10/2026 13:37
मंगल	29/10/2026 16:30

शनि - शुक्र - गुरु	
29/10/2026 16:30	
01/04/2027 21:42	
गुरु	19/11/2026 06:00
शनि	13/12/2026 16:01
बुध	04/01/2027 12:21
केतु	13/01/2027 12:16
शुक्र	08/02/2027 05:08
सूर्य	15/02/2027 22:11
चंद्र	28/02/2027 18:37
मंगल	09/03/2027 18:31
राहु	01/04/2027 21:42

शनि - शुक्र - शनि	
01/04/2027 21:42	
02/10/2027 00:53	
शनि	30/04/2027 21:36
बुध	26/05/2027 20:15
केतु	06/06/2027 12:39
शुक्र	07/07/2027 01:10
सूर्य	16/07/2027 04:56
चंद्र	31/07/2027 11:12
मंगल	11/08/2027 03:35
राहु	07/09/2027 14:51
गुरु	02/10/2027 00:53

शनि - शुक्र - बुध	
02/10/2027 00:53	
13/03/2028 21:24	
बुध	25/10/2027 05:59
केतु	03/11/2027 19:23
शुक्र	01/12/2027 02:48
सूर्य	09/12/2027 07:26
चंद्र	22/12/2027 23:09
मंगल	01/01/2028 12:32
राहु	26/01/2028 02:25
गुरु	16/02/2028 22:45
शनि	13/03/2028 21:24

शनि - शुक्र - केतु	
13/03/2028 21:24	
20/05/2028 08:41	
केतु	17/03/2028 19:52
शुक्र	29/03/2028 01:45
सूर्य	01/04/2028 10:42
चंद्र	07/04/2028 01:39
मंगल	11/04/2028 00:06
राहु	21/04/2028 03:00
गुरु	30/04/2028 02:54
शनि	10/05/2028 19:17
बुध	20/05/2028 08:41

शनि - सूर्य - सूर्य	
20/05/2028 08:41	
06/06/2028 17:04	
सूर्य	21/05/2028 05:30
चंद्र	22/05/2028 16:12
मंगल	23/05/2028 16:29
राहु	26/05/2028 06:57
गुरु	28/05/2028 14:28
शनि	31/05/2028 08:23
बुध	02/06/2028 19:23
केतु	03/06/2028 19:40
शुक्र	06/06/2028 17:04

शनि - सूर्य - चंद्र	
06/06/2028 17:04	
05/07/2028 15:02	
चंद्र	09/06/2028 02:54
मंगल	10/06/2028 19:23
राहु	15/06/2028 03:28
गुरु	19/06/2028 00:00
शनि	23/06/2028 13:53
बुध	27/06/2028 16:12
केतु	29/06/2028 08:41
शुक्र	04/07/2028 04:20
सूर्य	05/07/2028 15:02

शनि - सूर्य - मंगल	
05/07/2028 15:02	
25/07/2028 20:49	
मंगल	06/07/2028 19:23
राहु	09/07/2028 20:15
गुरु	12/07/2028 13:01
शनि	15/07/2028 17:56
बुध	18/07/2028 14:45
केतु	19/07/2028 19:05
शुक्र	23/07/2028 04:03
सूर्य	24/07/2028 04:20
चंद्र	25/07/2028 20:49

शनि - सूर्य - राहु	
25/07/2028 20:49	
15/09/2028 21:59	
राहु	02/08/2028 16:12
गुरु	09/08/2028 14:45
शनि	17/08/2028 20:32
बुध	25/08/2028 05:30
केतु	28/08/2028 06:22
शुक्र	05/09/2028 22:33
सूर्य	08/09/2028 13:01
चंद्र	12/09/2028 21:07
मंगल	15/09/2028 21:59

शनि - सूर्य - गुरु	
15/09/2028 21:59	
01/11/2028 04:20	
गुरु	22/09/2028 02:02
शनि	29/09/2028 09:50
बुध	05/10/2028 23:08
केतु	08/10/2028 15:54
शुक्र	16/10/2028 08:58
सूर्य	18/10/2028 16:29
चंद्र	22/10/2028 13:01
मंगल	25/10/2028 05:47
राहु	01/11/2028 04:20

शनि - सूर्य - शनि	
01/11/2028 04:20	
26/12/2028 02:53	
शनि	09/11/2028 21:06
बुध	17/11/2028 15:54
केतु	20/11/2028 20:49
शुक्र	30/11/2028 00:35
सूर्य	02/12/2028 18:30
चंद्र	07/12/2028 08:23
मंगल	10/12/2028 13:18
राहु	18/12/2028 19:05
गुरु	26/12/2028 02:53

शनि - सूर्य - बुध	
26/12/2028 02:53	
13/02/2029 06:39	
बुध	02/01/2029 02:01
केतु	04/01/2029 22:50
शुक्र	13/01/2029 03:28
सूर्य	15/01/2029 14:27
चंद्र	19/01/2029 16:46
मंगल	22/01/2029 13:35
राहु	29/01/2029 22:33
गुरु	05/02/2029 11:51
शनि	13/02/2029 06:39

Sample

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - सूर्य - केतु	
13/02/2029 06:39	
05/03/2029 12:26	
केतु	14/02/2029 10:59
शुक्र	17/02/2029 19:57
सूर्य	18/02/2029 20:14
चंद्र	20/02/2029 12:43
मंगल	21/02/2029 17:03
राहु	24/02/2029 17:55
गुरु	27/02/2029 10:42
शनि	02/03/2029 15:37
बुध	05/03/2029 12:26

शनि - सूर्य - शुक्र	
05/03/2029 12:26	
02/05/2029 08:23	
शुक्र	15/03/2029 03:45
सूर्य	18/03/2029 01:09
चंद्र	22/03/2029 20:49
मंगल	26/03/2029 05:47
राहु	03/04/2029 21:58
गुरु	11/04/2029 15:02
शनि	20/04/2029 18:47
बुध	28/04/2029 23:25
केतु	02/05/2029 08:23

शनि - चंद्र - चंद्र	
02/05/2029 08:23	
19/06/2029 13:00	
चंद्र	06/05/2029 08:46
मंगल	09/05/2029 04:14
राहु	16/05/2029 09:44
गुरु	22/05/2029 19:57
शनि	30/05/2029 11:05
बुध	06/06/2029 06:56
केतु	09/06/2029 02:24
शुक्र	17/06/2029 03:10
सूर्य	19/06/2029 13:00

शनि - चंद्र - मंगल	
19/06/2029 13:00	
23/07/2029 06:39	
मंगल	21/06/2029 12:14
राहु	26/06/2029 13:41
गुरु	01/07/2029 01:38
शनि	06/07/2029 09:49
बुध	11/07/2029 04:31
केतु	13/07/2029 03:45
शुक्र	18/07/2029 18:41
सूर्य	20/07/2029 11:10
चंद्र	23/07/2029 06:39

शनि - चंद्र - राहु	
23/07/2029 06:39	
18/10/2029 00:34	
राहु	05/08/2029 06:56
गुरु	16/08/2029 20:31
शनि	30/08/2029 14:10
बुध	11/09/2029 21:06
केतु	16/09/2029 22:33
शुक्र	01/10/2029 09:32
सूर्य	05/10/2029 17:38
चंद्र	12/10/2029 23:07
मंगल	18/10/2029 00:34

शनि - चंद्र - गुरु	
18/10/2029 00:34	
03/01/2030 03:10	
गुरु	28/10/2029 07:19
शनि	09/11/2029 12:20
बुध	20/11/2029 10:30
केतु	24/11/2029 22:27
शुक्र	07/12/2029 18:53
सूर्य	11/12/2029 15:25
चंद्र	18/12/2029 01:38
मंगल	22/12/2029 13:35
राहु	03/01/2030 03:10

शनि - चंद्र - शनि	
03/01/2030 03:10	
04/04/2030 16:45	
शनि	17/01/2030 15:07
बुध	30/01/2030 14:27
केतु	04/02/2030 22:38
शुक्र	20/02/2030 04:54
सूर्य	24/02/2030 18:47
चंद्र	04/03/2030 09:55
मंगल	09/03/2030 18:06
राहु	23/03/2030 11:45
गुरु	04/04/2030 16:45

शनि - चंद्र - बुध	
04/04/2030 16:45	
25/06/2030 15:01	
बुध	16/04/2030 07:19
केतु	21/04/2030 02:00
शुक्र	04/05/2030 17:43
सूर्य	08/05/2030 20:02
चंद्र	15/05/2030 15:53
मंगल	20/05/2030 10:35
राहु	01/06/2030 17:31
गुरु	12/06/2030 15:42
शनि	25/06/2030 15:01

शनि - चंद्र - केतु	
25/06/2030 15:01	
29/07/2030 08:39	
केतु	27/06/2030 14:15
शुक्र	03/07/2030 05:11
सूर्य	04/07/2030 21:40
चंद्र	07/07/2030 17:08
मंगल	09/07/2030 16:22
राहु	14/07/2030 17:49
गुरु	19/07/2030 05:46
शनि	24/07/2030 13:57
बुध	29/07/2030 08:39

शनि - चंद्र - शुक्र	
29/07/2030 08:39	
02/11/2030 17:54	
शुक्र	14/08/2030 10:12
सूर्य	19/08/2030 05:52
चंद्र	27/08/2030 06:38
मंगल	01/09/2030 21:34
राहु	16/09/2030 08:33
गुरु	29/09/2030 04:59
शनि	14/10/2030 11:15
बुध	28/10/2030 02:58
केतु	02/11/2030 17:54

शनि - चंद्र - सूर्य	
02/11/2030 17:54	
01/12/2030 15:53	
सूर्य	04/11/2030 04:36
चंद्र	06/11/2030 14:26
मंगल	08/11/2030 06:55
राहु	12/11/2030 15:01
गुरु	16/11/2030 11:33
शनि	21/11/2030 01:25
बुध	25/11/2030 03:44
केतु	26/11/2030 20:13
शुक्र	01/12/2030 15:53

शनि - मंगल - मंगल	
01/12/2030 15:53	
25/12/2030 06:38	
मंगल	03/12/2030 00:56
राहु	06/12/2030 13:57
गुरु	09/12/2030 17:31
शनि	13/12/2030 11:15
बुध	16/12/2030 19:33
केतु	18/12/2030 04:36
शुक्र	22/12/2030 03:04
सूर्य	23/12/2030 07:24
चंद्र	25/12/2030 06:38

Sample

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - शनि - राहु - शुक्र	
08/11/2020 05:18	
05/12/2020 16:34	
शुक्र	12/11/2020 19:11
सूर्य	14/11/2020 04:08
चंद्र	16/11/2020 11:05
मंगल	18/11/2020 01:32
राहु	22/11/2020 04:26
गुरु	25/11/2020 20:20
शनि	30/11/2020 04:43
बुध	04/12/2020 02:07
केतु	05/12/2020 16:34

शनि - शनि - राहु - सूर्य	
05/12/2020 16:34	
13/12/2020 22:21	
सूर्य	06/12/2020 02:28
चंद्र	06/12/2020 18:57
मंगल	07/12/2020 06:29
राहु	08/12/2020 12:09
गुरु	09/12/2020 14:31
शनि	10/12/2020 21:50
बुध	12/12/2020 01:51
केतु	12/12/2020 13:23
शुक्र	13/12/2020 22:21

शनि - शनि - राहु - चंद्र	
13/12/2020 22:21	
27/12/2020 16:00	
चंद्र	15/12/2020 01:49
मंगल	15/12/2020 21:03
राहु	17/12/2020 22:30
गुरु	19/12/2020 18:27
शनि	21/12/2020 22:39
बुध	23/12/2020 21:21
केतु	24/12/2020 16:34
शुक्र	26/12/2020 23:31
सूर्य	27/12/2020 16:00

शनि - शनि - राहु - मंगल	
27/12/2020 16:00	
06/01/2021 06:44	
मंगल	28/12/2020 05:27
राहु	29/12/2020 16:04
गुरु	30/12/2020 22:50
शनि	01/01/2021 11:22
बुध	02/01/2021 20:03
केतु	03/01/2021 09:31
शुक्र	04/01/2021 23:58
सूर्य	05/01/2021 11:31
चंद्र	06/01/2021 06:44

शनि - शनि - गुरु - गुरु	
06/01/2021 06:44	
25/01/2021 19:34	
गुरु	08/01/2021 21:15
शनि	11/01/2021 23:29
बुध	14/01/2021 17:54
केतु	15/01/2021 21:15
शुक्र	19/01/2021 03:23
सूर्य	20/01/2021 02:49
चंद्र	21/01/2021 17:53
मंगल	22/01/2021 21:14
राहु	25/01/2021 19:34

शनि - शनि - गुरु - शनि	
25/01/2021 19:34	
18/02/2021 00:17	
शनि	29/01/2021 11:42
बुध	01/02/2021 18:35
केतु	03/02/2021 03:03
शुक्र	06/02/2021 23:50
सूर्य	08/02/2021 03:40
चंद्र	10/02/2021 02:04
मंगल	11/02/2021 10:33
राहु	14/02/2021 22:03
गुरु	18/02/2021 00:17

शनि - शनि - गुरु - बुध	
18/02/2021 00:17	
10/03/2021 18:24	
बुध	20/02/2021 22:51
केतु	22/02/2021 03:54
शुक्र	25/02/2021 14:55
सूर्य	26/02/2021 15:50
चंद्र	28/02/2021 09:20
मंगल	01/03/2021 14:24
राहु	04/03/2021 17:07
गुरु	07/03/2021 11:32
शनि	10/03/2021 18:24

शनि - शनि - गुरु - केतु	
10/03/2021 18:24	
19/03/2021 07:31	
केतु	11/03/2021 06:22
शुक्र	12/03/2021 16:33
सूर्य	13/03/2021 02:48
चंद्र	13/03/2021 19:54
मंगल	14/03/2021 07:52
राहु	15/03/2021 14:38
गुरु	16/03/2021 17:59
शनि	18/03/2021 02:27
बुध	19/03/2021 07:31

शनि - शनि - गुरु - शुक्र	
19/03/2021 07:31	
12/04/2021 17:32	
शुक्र	23/03/2021 09:11
सूर्य	24/03/2021 14:29
चंद्र	26/03/2021 15:19
मंगल	28/03/2021 01:30
राहु	31/03/2021 17:24
गुरु	03/04/2021 23:32
शनि	07/04/2021 20:20
बुध	11/04/2021 07:21
केतु	12/04/2021 17:32

शनि - शनि - गुरु - सूर्य	
12/04/2021 17:32	
20/04/2021 01:20	
सूर्य	13/04/2021 02:19
चंद्र	13/04/2021 16:58
मंगल	14/04/2021 03:14
राहु	15/04/2021 05:36
गुरु	16/04/2021 05:02
शनि	17/04/2021 08:53
बुध	18/04/2021 09:47
केतु	18/04/2021 20:02
शुक्र	20/04/2021 01:20

शनि - शनि - गुरु - चंद्र	
20/04/2021 01:20	
02/05/2021 06:21	
चंद्र	21/04/2021 01:45
मंगल	21/04/2021 18:51
राहु	23/04/2021 14:48
गुरु	25/04/2021 05:52
शनि	27/04/2021 04:16
बुध	28/04/2021 21:46
केतु	29/04/2021 14:52
शुक्र	01/05/2021 15:42
सूर्य	02/05/2021 06:21

शनि - शनि - गुरु - मंगल	
02/05/2021 06:21	
10/05/2021 19:28	
मंगल	02/05/2021 18:19
राहु	04/05/2021 01:05
गुरु	05/05/2021 04:26
शनि	06/05/2021 12:54
बुध	07/05/2021 17:58
केतु	08/05/2021 05:56
शुक्र	09/05/2021 16:07
सूर्य	10/05/2021 02:22
चंद्र	10/05/2021 19:28

Sample

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - शनि - गुरु - राहु	
10/05/2021 19:28	
01/06/2021 18:53	
राहु	14/05/2021 02:34
गुरु	17/05/2021 00:54
शनि	20/05/2021 12:24
बुध	23/05/2021 15:07
केतु	24/05/2021 21:53
शुक्र	28/05/2021 13:47
सूर्य	29/05/2021 16:10
चंद्र	31/05/2021 12:07
मंगल	01/06/2021 18:53

शनि - बुध - बुध - बुध	
01/06/2021 18:53	
21/06/2021 12:25	
बुध	04/06/2021 13:58
केतु	05/06/2021 17:35
शुक्र	09/06/2021 00:31
सूर्य	10/06/2021 00:11
चंद्र	11/06/2021 15:39
मंगल	12/06/2021 19:16
राहु	15/06/2021 18:18
गुरु	18/06/2021 09:27
शनि	21/06/2021 12:25

शनि - बुध - बुध - केतु	
21/06/2021 12:25	
29/06/2021 15:25	
केतु	21/06/2021 23:48
शुक्र	23/06/2021 08:18
सूर्य	23/06/2021 18:03
चंद्र	24/06/2021 10:18
मंगल	24/06/2021 21:40
राहु	26/06/2021 02:55
गुरु	27/06/2021 04:55
शनि	28/06/2021 11:47
बुध	29/06/2021 15:25

शनि - बुध - बुध - शुक्र	
29/06/2021 15:25	
22/07/2021 20:31	
शुक्र	03/07/2021 12:16
सूर्य	04/07/2021 16:07
चंद्र	06/07/2021 14:32
मंगल	07/07/2021 23:02
राहु	11/07/2021 10:36
गुरु	14/07/2021 12:53
शनि	18/07/2021 05:06
बुध	21/07/2021 12:01
केतु	22/07/2021 20:31

शनि - बुध - बुध - सूर्य	
22/07/2021 20:31	
29/07/2021 19:39	
सूर्य	23/07/2021 04:52
चंद्र	23/07/2021 18:48
मंगल	24/07/2021 04:33
राहु	25/07/2021 05:37
गुरु	26/07/2021 03:54
शनि	27/07/2021 06:22
बुध	28/07/2021 06:03
केतु	28/07/2021 15:48
शुक्र	29/07/2021 19:39

शनि - बुध - बुध - चंद्र	
29/07/2021 19:39	
10/08/2021 10:12	
चंद्र	30/07/2021 18:52
मंगल	31/07/2021 11:07
राहु	02/08/2021 04:54
गुरु	03/08/2021 18:02
शनि	05/08/2021 14:08
बुध	07/08/2021 05:36
केतु	07/08/2021 21:51
शुक्र	09/08/2021 20:17
सूर्य	10/08/2021 10:12

शनि - बुध - बुध - मंगल	
10/08/2021 10:12	
18/08/2021 13:11	
मंगल	10/08/2021 21:35
राहु	12/08/2021 02:50
गुरु	13/08/2021 04:49
शनि	14/08/2021 11:42
बुध	15/08/2021 15:19
केतु	16/08/2021 02:42
शुक्र	17/08/2021 11:12
सूर्य	17/08/2021 20:57
चंद्र	18/08/2021 13:11

शनि - बुध - बुध - राहु	
18/08/2021 13:11	
08/09/2021 10:35	
राहु	21/08/2021 16:24
गुरु	24/08/2021 11:15
शनि	27/08/2021 18:38
बुध	30/08/2021 17:40
केतु	31/08/2021 22:55
शुक्र	04/09/2021 10:29
सूर्य	05/09/2021 11:33
चंद्र	07/09/2021 05:20
मंगल	08/09/2021 10:35

शनि - बुध - बुध - गुरु	
08/09/2021 10:35	
27/09/2021 00:16	
गुरु	10/09/2021 22:01
शनि	13/09/2021 20:35
बुध	16/09/2021 11:43
केतु	17/09/2021 13:43
शुक्र	20/09/2021 16:00
सूर्य	21/09/2021 14:17
चंद्र	23/09/2021 03:25
मंगल	24/09/2021 05:25
राहु	27/09/2021 00:16

शनि - बुध - बुध - शनि	
27/09/2021 00:16	
19/10/2021 01:32	
शनि	30/09/2021 12:04
बुध	03/10/2021 15:03
केतु	04/10/2021 21:55
शुक्र	08/10/2021 14:08
सूर्य	09/10/2021 16:36
चंद्र	11/10/2021 12:42
मंगल	12/10/2021 19:34
राहु	16/10/2021 02:58
गुरु	19/10/2021 01:32

शनि - बुध - केतु - केतु	
19/10/2021 01:32	
22/10/2021 09:49	
केतु	19/10/2021 06:13
शुक्र	19/10/2021 19:35
सूर्य	19/10/2021 23:36
चंद्र	20/10/2021 06:18
मंगल	20/10/2021 10:59
राहु	20/10/2021 23:01
गुरु	21/10/2021 09:44
शनि	21/10/2021 22:26
बुध	22/10/2021 09:49

शनि - बुध - केतु - शुक्र	
22/10/2021 09:49	
31/10/2021 23:13	
शुक्र	24/10/2021 00:03
सूर्य	24/10/2021 11:31
चंद्र	25/10/2021 06:38
मंगल	25/10/2021 20:01
राहु	27/10/2021 06:26
गुरु	28/10/2021 13:01
शनि	30/10/2021 01:20
बुध	31/10/2021 09:50
केतु	31/10/2021 23:13

Sample

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 11 वर्ष 8 मास 23 दिन

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष	
25/12/2007		18/09/2019		17/09/2030		17/09/2042		18/09/2055	
18/09/2019		17/09/2030		17/09/2042		18/09/2055		17/09/2069	
	00/00/0000	सूर्य	03/10/2020	मंगल	15/12/2031	गुरु	02/03/2044	शनि	27/05/2057
	25/12/2007	मंगल	22/11/2021	गुरु	19/04/2033	शनि	27/09/2045	केतु	19/03/2059
मंगल	28/01/2008	गुरु	15/02/2023	शनि	30/09/2034	केतु	03/06/2047	चंद्र	21/02/2061
गुरु	03/02/2010	शनि	14/06/2024	केतु	19/04/2036	चंद्र	18/03/2049	बुध	13/03/2063
शनि	06/04/2012	केतु	16/11/2025	चंद्र	14/12/2037	बुध	12/02/2051	शुक्र	14/05/2065
केतु	04/08/2014	चंद्र	24/05/2027	बुध	18/09/2039	शुक्र	18/02/2053	सूर्य	11/09/2066
चंद्र	27/01/2017	बुध	02/01/2029	शुक्र	29/07/2041	सूर्य	14/05/2054	मंगल	22/02/2068
बुध	18/09/2019	शुक्र	17/09/2030	सूर्य	17/09/2042	मंगल	18/09/2055	गुरु	17/09/2069

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष	
17/09/2069		17/09/2084		18/09/2100		18/09/2117	
17/09/2084		18/09/2100		18/09/2117		00/00/0000	
केतु	27/08/2071	चंद्र	02/12/2086	बुध	17/03/2103	शुक्र	04/07/2120
चंद्र	20/09/2073	बुध	06/04/2089	शुक्र	04/11/2105	सूर्य	20/03/2122
बुध	02/12/2075	शुक्र	30/09/2091	सूर्य	16/06/2107	मंगल	26/12/2123
शुक्र	31/03/2078	सूर्य	06/04/2093	मंगल	19/03/2109		00/00/0000
सूर्य	02/09/2079	मंगल	02/12/2094	गुरु	13/02/2111		00/00/0000
मंगल	22/03/2081	गुरु	17/09/2096	शनि	04/03/2113		00/00/0000
गुरु	26/11/2082	शनि	23/08/2098	केतु	16/05/2115		00/00/0000
शनि	17/09/2084	केतु	18/09/2100	चंद्र	18/09/2117		00/00/0000

नोट उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Sample

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल	
25/12/2007	
28/01/2008	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	25/12/2007
सूर्य	28/01/2008

शुक्र - गुरु	
28/01/2008	
03/02/2010	
गुरु	19/04/2008
शनि	17/07/2008
केतु	21/10/2008
चंद्र	30/01/2009
बुध	18/05/2009
शुक्र	10/09/2009
सूर्य	18/11/2009
मंगल	03/02/2010

शुक्र - शनि	
03/02/2010	
06/04/2012	
शनि	09/05/2010
केतु	20/08/2010
चंद्र	07/12/2010
बुध	03/04/2011
शुक्र	04/08/2011
सूर्य	18/10/2011
मंगल	08/01/2012
गुरु	06/04/2012

शुक्र - केतु	
06/04/2012	
04/08/2014	
केतु	25/07/2012
चंद्र	19/11/2012
बुध	24/03/2013
शुक्र	03/08/2013
सूर्य	22/10/2013
मंगल	18/01/2014
गुरु	24/04/2014
शनि	04/08/2014

शुक्र - चंद्र	
04/08/2014	
27/01/2017	
चंद्र	07/12/2014
बुध	19/04/2015
शुक्र	07/09/2015
सूर्य	02/12/2015
मंगल	05/03/2016
गुरु	14/06/2016
शनि	02/10/2016
केतु	27/01/2017

शुक्र - बुध	
27/01/2017	
18/09/2019	
बुध	17/06/2017
शुक्र	14/11/2017
सूर्य	13/02/2018
मंगल	24/05/2018
गुरु	09/09/2018
शनि	03/01/2019
केतु	08/05/2019
चंद्र	18/09/2019

सूर्य - सूर्य	
18/09/2019	
03/10/2020	
सूर्य	24/10/2019
मंगल	02/12/2019
गुरु	14/01/2020
शनि	29/02/2020
केतु	18/04/2020
चंद्र	10/06/2020
बुध	04/08/2020
शुक्र	03/10/2020

सूर्य - मंगल	
03/10/2020	
22/11/2021	
मंगल	15/11/2020
गुरु	31/12/2020
शनि	19/02/2021
केतु	14/04/2021
चंद्र	10/06/2021
बुध	10/08/2021
शुक्र	14/10/2021
सूर्य	22/11/2021

सूर्य - गुरु	
22/11/2021	
15/02/2023	
गुरु	12/01/2022
शनि	07/03/2022
केतु	04/05/2022
चंद्र	05/07/2022
बुध	09/09/2022
शुक्र	18/11/2022
सूर्य	31/12/2022
मंगल	15/02/2023

सूर्य - शनि	
15/02/2023	
14/06/2024	
शनि	15/04/2023
केतु	17/06/2023
चंद्र	23/08/2023
बुध	02/11/2023
शुक्र	16/01/2024
सूर्य	02/03/2024
मंगल	21/04/2024
गुरु	14/06/2024

सूर्य - केतु	
14/06/2024	
16/11/2025	
केतु	21/08/2024
चंद्र	31/10/2024
बुध	15/01/2025
शुक्र	06/04/2025
सूर्य	25/05/2025
मंगल	18/07/2025
गुरु	14/09/2025
शनि	16/11/2025

सूर्य - चंद्र	
16/11/2025	
24/05/2027	
चंद्र	31/01/2026
बुध	23/04/2026
शुक्र	18/07/2026
सूर्य	08/09/2026
मंगल	04/11/2026
गुरु	06/01/2027
शनि	13/03/2027
केतु	24/05/2027

सूर्य - बुध	
24/05/2027	
02/01/2029	
बुध	18/08/2027
शुक्र	18/11/2027
सूर्य	13/01/2028
मंगल	13/03/2028
गुरु	18/05/2028
शनि	29/07/2028
केतु	13/10/2028
चंद्र	02/01/2029

सूर्य - शुक्र	
02/01/2029	
17/09/2030	
शुक्र	09/04/2029
सूर्य	07/06/2029
मंगल	10/08/2029
गुरु	19/10/2029
शनि	02/01/2030
केतु	24/03/2030
चंद्र	18/06/2030
बुध	17/09/2030

मंगल - मंगल	
17/09/2030	
15/12/2031	
मंगल	03/11/2030
गुरु	24/12/2030
शनि	17/02/2031
केतु	16/04/2031
चंद्र	18/06/2031
बुध	23/08/2031
शुक्र	02/11/2031
सूर्य	15/12/2031

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध	
15/12/2031		19/04/2033		30/09/2034		19/04/2036		14/12/2037	
19/04/2033		30/09/2034		19/04/2036		14/12/2037		18/09/2039	
गुरु	08/02/2032	शनि	22/06/2033	केतु	12/12/2034	चंद्र	11/07/2036	बुध	18/03/2038
शनि	07/04/2032	केतु	29/08/2033	चंद्र	28/02/2035	बुध	08/10/2036	शुक्र	26/06/2038
केतु	10/06/2032	चंद्र	10/11/2033	बुध	22/05/2035	शुक्र	09/01/2037	सूर्य	26/08/2038
चंद्र	16/08/2032	बुध	27/01/2034	शुक्र	18/08/2035	सूर्य	08/03/2037	मंगल	31/10/2038
बुध	27/10/2032	शुक्र	19/04/2034	सूर्य	11/10/2035	मंगल	09/05/2037	गुरु	11/01/2039
शुक्र	12/01/2033	सूर्य	08/06/2034	मंगल	09/12/2035	गुरु	16/07/2037	शनि	30/03/2039
सूर्य	27/02/2033	मंगल	02/08/2034	गुरु	10/02/2036	शनि	27/09/2037	केतु	21/06/2039
मंगल	19/04/2033	गुरु	30/09/2034	शनि	19/04/2036	केतु	14/12/2037	चंद्र	18/09/2039

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु	
18/09/2039		29/07/2041		17/09/2042		02/03/2044		27/09/2045	
29/07/2041		17/09/2042		02/03/2044		27/09/2045		03/06/2047	
शुक्र	01/01/2040	सूर्य	06/09/2041	गुरु	16/11/2042	शनि	11/05/2044	केतु	15/12/2045
सूर्य	06/03/2040	मंगल	19/10/2041	शनि	19/01/2043	केतु	24/07/2044	चंद्र	10/03/2046
मंगल	15/05/2040	गुरु	05/12/2041	केतु	29/03/2043	चंद्र	11/10/2044	बुध	08/06/2046
गुरु	30/07/2040	शनि	24/01/2042	चंद्र	10/06/2043	बुध	03/01/2045	शुक्र	11/09/2046
शनि	20/10/2040	केतु	19/03/2042	बुध	27/08/2043	शुक्र	02/04/2045	सूर्य	08/11/2046
केतु	16/01/2041	चंद्र	15/05/2042	शुक्र	18/11/2043	सूर्य	26/05/2045	मंगल	11/01/2047
चंद्र	20/04/2041	बुध	15/07/2042	सूर्य	07/01/2044	मंगल	24/07/2045	गुरु	20/03/2047
बुध	29/07/2041	शुक्र	17/09/2042	मंगल	02/03/2044	गुरु	27/09/2045	शनि	03/06/2047

गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल	
03/06/2047		18/03/2049		12/02/2051		18/02/2053		14/05/2054	
18/03/2049		12/02/2051		18/02/2053		14/05/2054		18/09/2055	
चंद्र	01/09/2047	बुध	28/06/2049	शुक्र	07/06/2051	सूर्य	02/04/2053	मंगल	04/07/2054
बुध	06/12/2047	शुक्र	14/10/2049	सूर्य	16/08/2051	मंगल	18/05/2053	गुरु	28/08/2054
शुक्र	16/03/2048	सूर्य	19/12/2049	मंगल	31/10/2051	गुरु	08/07/2053	शनि	27/10/2054
सूर्य	18/05/2048	मंगल	01/03/2050	गुरु	21/01/2052	शनि	31/08/2053	केतु	29/12/2054
मंगल	24/07/2048	गुरु	18/05/2050	शनि	19/04/2052	केतु	28/10/2053	चंद्र	07/03/2055
गुरु	06/10/2048	शनि	10/08/2050	केतु	23/07/2052	चंद्र	30/12/2053	बुध	18/05/2055
शनि	24/12/2048	केतु	08/11/2050	चंद्र	02/11/2052	बुध	05/03/2054	शुक्र	02/08/2055
केतु	18/03/2049	चंद्र	12/02/2051	बुध	18/02/2053	शुक्र	14/05/2054	सूर्य	18/09/2055

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र	
18/09/2055		27/05/2057		19/03/2059		21/02/2061		13/03/2063	
27/05/2057		19/03/2059		21/02/2061		13/03/2063		14/05/2065	
शनि	01/12/2055	केतु	20/08/2057	चंद्र	24/06/2059	बुध	11/06/2061	शुक्र	14/07/2063
केतु	19/02/2056	चंद्र	19/11/2057	बुध	06/10/2059	शुक्र	05/10/2061	सूर्य	27/09/2063
चंद्र	14/05/2056	बुध	24/02/2058	शुक्र	23/01/2060	सूर्य	15/12/2061	मंगल	18/12/2063
बुध	12/08/2056	शुक्र	07/06/2058	सूर्य	30/03/2060	मंगल	03/03/2062	गुरु	16/03/2064
शुक्र	16/11/2056	सूर्य	09/08/2058	मंगल	11/06/2060	गुरु	26/05/2062	शनि	20/06/2064
सूर्य	14/01/2057	मंगल	16/10/2058	गुरु	29/08/2060	शनि	24/08/2062	केतु	30/09/2064
मंगल	19/03/2057	गुरु	29/12/2058	शनि	22/11/2060	केतु	29/11/2062	चंद्र	18/01/2065
गुरु	27/05/2057	शनि	19/03/2059	केतु	21/02/2061	चंद्र	13/03/2063	बुध	14/05/2065

शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र	
14/05/2065		11/09/2066		22/02/2068		17/09/2069		27/08/2071	
11/09/2066		22/02/2068		17/09/2069		27/08/2071		20/09/2073	
सूर्य	29/06/2065	मंगल	05/11/2066	गुरु	26/04/2068	केतु	18/12/2069	चंद्र	09/12/2071
मंगल	18/08/2065	गुरु	03/01/2067	शनि	04/07/2068	चंद्र	25/03/2070	बुध	29/03/2072
गुरु	12/10/2065	शनि	08/03/2067	केतु	16/09/2068	बुध	07/07/2070	शुक्र	24/07/2072
शनि	09/12/2065	केतु	15/05/2067	चंद्र	05/12/2068	शुक्र	25/10/2070	सूर्य	03/10/2072
केतु	10/02/2066	चंद्र	27/07/2067	बुध	27/02/2069	सूर्य	31/12/2070	मंगल	21/12/2072
चंद्र	18/04/2066	बुध	13/10/2067	शुक्र	26/05/2069	मंगल	15/03/2071	गुरु	15/03/2073
बुध	28/06/2066	शुक्र	03/01/2068	सूर्य	20/07/2069	गुरु	02/06/2071	शनि	14/06/2073
शुक्र	11/09/2066	सूर्य	22/02/2068	मंगल	17/09/2069	शनि	27/08/2071	केतु	20/09/2073

केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु	
20/09/2073		02/12/2075		31/03/2078		02/09/2079		22/03/2081	
02/12/2075		31/03/2078		02/09/2079		22/03/2081		26/11/2082	
बुध	16/01/2074	शुक्र	12/04/2076	सूर्य	20/05/2078	मंगल	30/10/2079	गुरु	29/05/2081
शुक्र	20/05/2074	सूर्य	02/07/2076	मंगल	12/07/2078	गुरु	02/01/2080	शनि	12/08/2081
सूर्य	05/08/2074	मंगल	28/09/2076	गुरु	09/09/2078	शनि	10/03/2080	केतु	30/10/2081
मंगल	27/10/2074	गुरु	01/01/2077	शनि	10/11/2078	केतु	23/05/2080	चंद्र	23/01/2082
गुरु	25/01/2075	शनि	13/04/2077	केतु	16/01/2079	चंद्र	09/08/2080	बुध	23/04/2082
शनि	02/05/2075	केतु	01/08/2077	चंद्र	29/03/2079	बुध	31/10/2080	शुक्र	27/07/2082
केतु	13/08/2075	चंद्र	27/11/2077	बुध	13/06/2079	शुक्र	27/01/2081	सूर्य	23/09/2082
चंद्र	02/12/2075	बुध	31/03/2078	शुक्र	02/09/2079	सूर्य	22/03/2081	मंगल	26/11/2082

Sample

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
26/11/2082		17/09/2084		02/12/2086		06/04/2089		30/09/2091	
17/09/2084		02/12/2086		06/04/2089		30/09/2091		06/04/2093	
शनि	13/02/2083	चंद्र	06/01/2085	बुध	06/04/2087	शुक्र	25/08/2089	सूर्य	22/11/2091
केतु	10/05/2083	बुध	04/05/2085	शुक्र	17/08/2087	सूर्य	19/11/2089	मंगल	18/01/2092
चंद्र	09/08/2083	शुक्र	06/09/2085	सूर्य	07/11/2087	मंगल	21/02/2090	गुरु	20/03/2092
बुध	14/11/2083	सूर्य	22/11/2085	मंगल	03/02/2088	गुरु	02/06/2090	शनि	26/05/2092
शुक्र	25/02/2084	मंगल	13/02/2086	गुरु	09/05/2088	शनि	20/09/2090	केतु	06/08/2092
सूर्य	27/04/2084	गुरु	14/05/2086	शनि	20/08/2088	केतु	15/01/2091	चंद्र	21/10/2092
मंगल	05/07/2084	शनि	20/08/2086	केतु	09/12/2088	चंद्र	20/05/2091	बुध	10/01/2093
गुरु	17/09/2084	केतु	02/12/2086	चंद्र	06/04/2089	बुध	30/09/2091	शुक्र	06/04/2093

चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध	
06/04/2093		02/12/2094		17/09/2096		23/08/2098		18/09/2100	
02/12/2094		17/09/2096		23/08/2098		18/09/2100		17/03/2103	
मंगल	08/06/2093	गुरु	13/02/2095	शनि	11/12/2096	केतु	29/11/2098	बुध	29/01/2101
गुरु	15/08/2093	शनि	03/05/2095	केतु	12/03/2097	चंद्र	13/03/2099	शुक्र	19/06/2101
शनि	27/10/2093	केतु	27/07/2095	चंद्र	17/06/2097	बुध	02/07/2099	सूर्य	14/09/2101
केतु	13/01/2094	चंद्र	25/10/2095	बुध	29/09/2097	शुक्र	27/10/2099	मंगल	17/12/2101
चंद्र	06/04/2094	बुध	29/01/2096	शुक्र	16/01/2098	सूर्य	07/01/2100	गुरु	29/03/2102
बुध	04/07/2094	शुक्र	10/05/2096	सूर्य	24/03/2098	मंगल	26/03/2100	शनि	17/07/2102
शुक्र	06/10/2094	सूर्य	11/07/2096	मंगल	05/06/2098	गुरु	19/06/2100	केतु	11/11/2102
सूर्य	02/12/2094	मंगल	17/09/2096	गुरु	23/08/2098	शनि	18/09/2100	चंद्र	17/03/2103

बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि	
17/03/2103		04/11/2105		16/06/2107		19/03/2109		13/02/2111	
04/11/2105		16/06/2107		19/03/2109		13/02/2111		04/03/2113	
शुक्र	13/08/2103	सूर्य	30/12/2105	मंगल	22/08/2107	गुरु	05/06/2109	शनि	15/05/2111
सूर्य	13/11/2103	मंगल	01/03/2106	गुरु	02/11/2107	शनि	28/08/2109	केतु	20/08/2111
मंगल	20/02/2104	गुरु	06/05/2106	शनि	18/01/2108	केतु	26/11/2109	चंद्र	01/12/2111
गुरु	07/06/2104	शनि	16/07/2106	केतु	10/04/2108	चंद्र	02/03/2110	बुध	20/03/2112
शनि	02/10/2104	केतु	30/09/2106	चंद्र	08/07/2108	बुध	12/06/2110	शुक्र	14/07/2112
केतु	03/02/2105	चंद्र	20/12/2106	बुध	10/10/2108	शुक्र	28/09/2110	सूर्य	23/09/2112
चंद्र	16/06/2105	बुध	17/03/2107	शुक्र	18/01/2109	सूर्य	03/12/2110	मंगल	10/12/2112
बुध	04/11/2105	शुक्र	16/06/2107	सूर्य	19/03/2109	मंगल	13/02/2111	गुरु	04/03/2113

Sample

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 6 वर्ष 11 मास 12 दिन

गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष	
25/12/2007		07/12/2014		07/08/2027		07/12/2038		07/08/2043	
07/12/2014		07/08/2027		07/12/2038		07/08/2043		06/12/2056	
	00/00/0000	शनि	09/12/2016	बुध	16/03/2029	केतु	16/03/2039	शुक्र	27/10/2045
	25/12/2007	बुध	25/09/2018	केतु	12/11/2029	शुक्र	25/12/2039	सूर्य	28/06/2046
बुध	20/11/2008	केतु	22/06/2019	शुक्र	03/10/2031	सूर्य	20/03/2040	चंद्र	07/08/2047
केतु	06/07/2009	शुक्र	01/08/2021	सूर्य	27/04/2032	चंद्र	09/08/2040	मंगल	18/05/2048
शुक्र	16/04/2011	सूर्य	20/03/2022	चंद्र	07/04/2033	मंगल	16/11/2040	राहु	18/05/2050
सूर्य	28/10/2011	चंद्र	10/04/2023	मंगल	05/12/2033	राहु	30/07/2041	गुरु	26/02/2052
चंद्र	16/09/2012	मंगल	05/01/2024	राहु	18/08/2035	गुरु	14/03/2042	शनि	07/04/2054
मंगल	02/05/2013	राहु	29/11/2025	गुरु	20/02/2037	शनि	09/12/2042	बुध	26/02/2056
राहु	07/12/2014	गुरु	07/08/2027	शनि	07/12/2038	बुध	07/08/2043	केतु	06/12/2056

सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष	
06/12/2056		06/12/2060		07/08/2067		07/04/2072		07/04/2084	
06/12/2060		07/08/2067		07/04/2072		07/04/2084		00/00/0000	
सूर्य	18/02/2057	चंद्र	27/06/2061	मंगल	15/11/2067	राहु	24/01/2074	गुरु	08/09/2085
चंद्र	19/06/2057	मंगल	16/11/2061	राहु	28/07/2068	गुरु	01/09/2075	शनि	18/05/2087
मंगल	12/09/2057	राहु	17/11/2062	गुरु	12/03/2069	शनि	26/07/2077	बुध	25/12/2087
राहु	20/04/2058	गुरु	07/10/2063	शनि	07/12/2069	बुध	08/04/2079		00/00/0000
गुरु	31/10/2058	शनि	27/10/2064	बुध	05/08/2070	केतु	19/12/2079		00/00/0000
शनि	20/06/2059	बुध	07/10/2065	केतु	13/11/2070	शुक्र	19/12/2081		00/00/0000
बुध	13/01/2060	केतु	26/02/2066	शुक्र	24/08/2071	सूर्य	26/07/2082		00/00/0000
केतु	07/04/2060	शुक्र	08/04/2067	सूर्य	17/11/2071	चंद्र	26/07/2083		00/00/0000
शुक्र	06/12/2060	सूर्य	07/08/2067	चंद्र	07/04/2072	मंगल	07/04/2084		00/00/0000

नोट उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Sample

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध
25/12/2007
20/11/2008

	00/00/0000
	00/00/0000
	25/12/2007
सूर्य	03/01/2008
चंद्र	18/02/2008
मंगल	21/03/2008
राहु	12/06/2008
गुरु	25/08/2008
शनि	20/11/2008

गुरु - केतु
20/11/2008
06/07/2009

केतु	03/12/2008
शुक्र	10/01/2009
सूर्य	22/01/2009
चंद्र	10/02/2009
मंगल	23/02/2009
राहु	29/03/2009
गुरु	28/04/2009
शनि	03/06/2009
बुध	06/07/2009

गुरु - शुक्र
06/07/2009
16/04/2011

शुक्र	22/10/2009
सूर्य	23/11/2009
चंद्र	16/01/2010
मंगल	23/02/2010
राहु	01/06/2010
गुरु	26/08/2010
शनि	07/12/2010
बुध	09/03/2011
केतु	16/04/2011

गुरु - सूर्य
16/04/2011
28/10/2011

सूर्य	26/04/2011
चंद्र	12/05/2011
मंगल	23/05/2011
राहु	21/06/2011
गुरु	17/07/2011
शनि	17/08/2011
बुध	14/09/2011
केतु	25/09/2011
शुक्र	28/10/2011

गुरु - चंद्र
28/10/2011
16/09/2012

चंद्र	24/11/2011
मंगल	13/12/2011
राहु	30/01/2012
गुरु	14/03/2012
शनि	04/05/2012
बुध	19/06/2012
केतु	08/07/2012
शुक्र	31/08/2012
सूर्य	16/09/2012

गुरु - मंगल
16/09/2012
02/05/2013

मंगल	30/09/2012
राहु	03/11/2012
गुरु	03/12/2012
शनि	08/01/2013
बुध	09/02/2013
केतु	22/02/2013
शुक्र	01/04/2013
सूर्य	13/04/2013
चंद्र	02/05/2013

गुरु - राहु
02/05/2013
07/12/2014

राहु	28/07/2013
गुरु	14/10/2013
शनि	15/01/2014
बुध	07/04/2014
केतु	12/05/2014
शुक्र	17/08/2014
सूर्य	15/09/2014
चंद्र	03/11/2014
मंगल	07/12/2014

शनि - शनि
07/12/2014
09/12/2016

शनि	02/04/2015
बुध	15/07/2015
केतु	26/08/2015
शुक्र	27/12/2015
सूर्य	01/02/2016
चंद्र	02/04/2016
मंगल	15/05/2016
राहु	02/09/2016
गुरु	09/12/2016

शनि - बुध
09/12/2016
25/09/2018

बुध	11/03/2017
केतु	19/04/2017
शुक्र	06/08/2017
सूर्य	08/09/2017
चंद्र	01/11/2017
मंगल	09/12/2017
राहु	18/03/2018
गुरु	13/06/2018
शनि	25/09/2018

शनि - केतु
25/09/2018
22/06/2019

केतु	11/10/2018
शुक्र	25/11/2018
सूर्य	08/12/2018
चंद्र	31/12/2018
मंगल	15/01/2019
राहु	25/02/2019
गुरु	02/04/2019
शनि	15/05/2019
बुध	22/06/2019

शनि - शुक्र
22/06/2019
01/08/2021

शुक्र	28/10/2019
सूर्य	06/12/2019
चंद्र	08/02/2020
मंगल	24/03/2020
राहु	18/07/2020
गुरु	29/10/2020
शनि	28/02/2021
बुध	17/06/2021
केतु	01/08/2021

शनि - सूर्य
01/08/2021
20/03/2022

सूर्य	12/08/2021
चंद्र	01/09/2021
मंगल	14/09/2021
राहु	19/10/2021
गुरु	19/11/2021
शनि	25/12/2021
बुध	27/01/2022
केतु	10/02/2022
शुक्र	20/03/2022

शनि - चंद्र
20/03/2022
10/04/2023

चंद्र	21/04/2022
मंगल	14/05/2022
राहु	11/07/2022
गुरु	31/08/2022
शनि	31/10/2022
बुध	25/12/2022
केतु	16/01/2023
शुक्र	21/03/2023
सूर्य	10/04/2023

शनि - मंगल
10/04/2023
05/01/2024

मंगल	25/04/2023
राहु	05/06/2023
गुरु	11/07/2023
शनि	23/08/2023
बुध	30/09/2023
केतु	16/10/2023
शुक्र	30/11/2023
सूर्य	13/12/2023
चंद्र	05/01/2024

शनि - राहु
05/01/2024
29/11/2025

राहु	18/04/2024
गुरु	19/07/2024
शनि	06/11/2024
बुध	12/02/2025
केतु	25/03/2025
शुक्र	19/07/2025
सूर्य	22/08/2025
चंद्र	19/10/2025
मंगल	29/11/2025

Sample

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
29/11/2025		07/08/2027		16/03/2029		12/11/2029		03/10/2031	
07/08/2027		16/03/2029		12/11/2029		03/10/2031		27/04/2032	
गुरु	19/02/2026	बुध	30/10/2027	केतु	30/03/2029	शुक्र	07/03/2030	सूर्य	14/10/2031
शनि	28/05/2026	केतु	03/12/2027	शुक्र	09/05/2029	सूर्य	11/04/2030	चंद्र	31/10/2031
बुध	23/08/2026	शुक्र	09/03/2028	सूर्य	21/05/2029	चंद्र	07/06/2030	मंगल	12/11/2031
केतु	28/09/2026	सूर्य	08/04/2028	चंद्र	10/06/2029	मंगल	18/07/2030	राहु	13/12/2031
शुक्र	09/01/2027	चंद्र	27/05/2028	मंगल	25/06/2029	राहु	29/10/2030	गुरु	10/01/2032
सूर्य	09/02/2027	मंगल	30/06/2028	राहु	31/07/2029	गुरु	29/01/2031	शनि	11/02/2032
चंद्र	01/04/2027	राहु	26/09/2028	गुरु	01/09/2029	शनि	18/05/2031	बुध	12/03/2032
मंगल	07/05/2027	गुरु	13/12/2028	शनि	09/10/2029	बुध	24/08/2031	केतु	24/03/2032
राहु	07/08/2027	शनि	16/03/2029	बुध	12/11/2029	केतु	03/10/2031	शुक्र	27/04/2032

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
27/04/2032		07/04/2033		05/12/2033		18/08/2035		20/02/2037	
07/04/2033		05/12/2033		18/08/2035		20/02/2037		07/12/2038	
चंद्र	26/05/2032	मंगल	21/04/2033	राहु	08/03/2034	गुरु	30/10/2035	शनि	03/06/2037
मंगल	15/06/2032	राहु	28/05/2033	गुरु	30/05/2034	शनि	26/01/2036	बुध	04/09/2037
राहु	06/08/2032	गुरु	29/06/2033	शनि	05/09/2034	बुध	13/04/2036	केतु	12/10/2037
गुरु	21/09/2032	शनि	06/08/2033	बुध	02/12/2034	केतु	15/05/2036	शुक्र	30/01/2038
शनि	14/11/2032	बुध	09/09/2033	केतु	07/01/2035	शुक्र	15/08/2036	सूर्य	03/03/2038
बुध	02/01/2033	केतु	23/09/2033	शुक्र	21/04/2035	सूर्य	12/09/2036	चंद्र	27/04/2038
केतु	22/01/2033	शुक्र	02/11/2033	सूर्य	22/05/2035	चंद्र	28/10/2036	मंगल	04/06/2038
शुक्र	21/03/2033	सूर्य	15/11/2033	चंद्र	12/07/2035	मंगल	29/11/2036	राहु	11/09/2038
सूर्य	07/04/2033	चंद्र	05/12/2033	मंगल	18/08/2035	राहु	20/02/2037	गुरु	07/12/2038

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
07/12/2038		16/03/2039		25/12/2039		20/03/2040		09/08/2040	
16/03/2039		25/12/2039		20/03/2040		09/08/2040		16/11/2040	
केतु	13/12/2038	शुक्र	03/05/2039	सूर्य	30/12/2039	चंद्र	01/04/2040	मंगल	15/08/2040
शुक्र	29/12/2038	सूर्य	17/05/2039	चंद्र	06/01/2040	मंगल	09/04/2040	राहु	29/08/2040
सूर्य	03/01/2039	चंद्र	10/06/2039	मंगल	11/01/2040	राहु	30/04/2040	गुरु	12/09/2040
चंद्र	12/01/2039	मंगल	26/06/2039	राहु	24/01/2040	गुरु	19/05/2040	शनि	27/09/2040
मंगल	17/01/2039	राहु	08/08/2039	गुरु	04/02/2040	शनि	11/06/2040	बुध	12/10/2040
राहु	01/02/2039	गुरु	15/09/2039	शनि	17/02/2040	बुध	01/07/2040	केतु	17/10/2040
गुरु	15/02/2039	शनि	30/10/2039	बुध	01/03/2040	केतु	09/07/2040	शुक्र	03/11/2040
शनि	02/03/2039	बुध	09/12/2039	केतु	06/03/2040	शुक्र	02/08/2040	सूर्य	08/11/2040
बुध	16/03/2039	केतु	25/12/2039	शुक्र	20/03/2040	सूर्य	09/08/2040	चंद्र	16/11/2040

Sample

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु	
16/11/2040	
30/07/2041	
राहु	25/12/2040
गुरु	28/01/2041
शनि	09/03/2041
बुध	14/04/2041
केतु	29/04/2041
शुक्र	11/06/2041
सूर्य	24/06/2041
चंद्र	15/07/2041
मंगल	30/07/2041

केतु - गुरु	
30/07/2041	
14/03/2042	
गुरु	29/08/2041
शनि	04/10/2041
बुध	05/11/2041
केतु	19/11/2041
शुक्र	26/12/2041
सूर्य	07/01/2042
चंद्र	26/01/2042
मंगल	08/02/2042
राहु	14/03/2042

केतु - शनि	
14/03/2042	
09/12/2042	
शनि	26/04/2042
बुध	03/06/2042
केतु	19/06/2042
शुक्र	03/08/2042
सूर्य	16/08/2042
चंद्र	08/09/2042
मंगल	24/09/2042
राहु	03/11/2042
गुरु	09/12/2042

केतु - बुध	
09/12/2042	
07/08/2043	
बुध	12/01/2043
केतु	26/01/2043
शुक्र	08/03/2043
सूर्य	20/03/2043
चंद्र	09/04/2043
मंगल	23/04/2043
राहु	29/05/2043
गुरु	30/06/2043
शनि	07/08/2043

शुक्र - शुक्र	
07/08/2043	
27/10/2045	
शुक्र	21/12/2043
सूर्य	30/01/2044
चंद्र	07/04/2044
मंगल	24/05/2044
राहु	23/09/2044
गुरु	09/01/2045
शनि	18/05/2045
बुध	10/09/2045
केतु	27/10/2045

शुक्र - सूर्य	
27/10/2045	
28/06/2046	
सूर्य	08/11/2045
चंद्र	29/11/2045
मंगल	13/12/2045
राहु	18/01/2046
गुरु	20/02/2046
शनि	30/03/2046
बुध	04/05/2046
केतु	18/05/2046
शुक्र	28/06/2046

शुक्र - चंद्र	
28/06/2046	
07/08/2047	
चंद्र	31/07/2046
मंगल	24/08/2046
राहु	24/10/2046
गुरु	17/12/2046
शनि	19/02/2047
बुध	18/04/2047
केतु	12/05/2047
शुक्र	18/07/2047
सूर्य	07/08/2047

शुक्र - मंगल	
07/08/2047	
18/05/2048	
मंगल	24/08/2047
राहु	06/10/2047
गुरु	13/11/2047
शनि	28/12/2047
बुध	06/02/2048
केतु	22/02/2048
शुक्र	10/04/2048
सूर्य	24/04/2048
चंद्र	18/05/2048

शुक्र - राहु	
18/05/2048	
18/05/2050	
राहु	04/09/2048
गुरु	11/12/2048
शनि	05/04/2049
बुध	18/07/2049
केतु	29/08/2049
शुक्र	29/12/2049
सूर्य	04/02/2050
चंद्र	05/04/2050
मंगल	18/05/2050

शुक्र - गुरु	
18/05/2050	
26/02/2052	
गुरु	13/08/2050
शनि	23/11/2050
बुध	23/02/2051
केतु	02/04/2051
शुक्र	20/07/2051
सूर्य	21/08/2051
चंद्र	14/10/2051
मंगल	21/11/2051
राहु	26/02/2052

शुक्र - शनि	
26/02/2052	
07/04/2054	
शनि	27/06/2052
बुध	15/10/2052
केतु	29/11/2052
शुक्र	06/04/2053
सूर्य	15/05/2053
चंद्र	18/07/2053
मंगल	01/09/2053
राहु	26/12/2053
गुरु	07/04/2054

शुक्र - बुध	
07/04/2054	
26/02/2056	
बुध	14/07/2054
केतु	23/08/2054
शुक्र	16/12/2054
सूर्य	20/01/2055
चंद्र	18/03/2055
मंगल	28/04/2055
राहु	09/08/2055
गुरु	09/11/2055
शनि	26/02/2056

शुक्र - केतु	
26/02/2056	
06/12/2056	
केतु	14/03/2056
शुक्र	30/04/2056
सूर्य	15/05/2056
चंद्र	07/06/2056
मंगल	24/06/2056
राहु	05/08/2056
गुरु	12/09/2056
शनि	27/10/2056
बुध	06/12/2056

सूर्य - सूर्य	
06/12/2056	
18/02/2057	
सूर्य	10/12/2056
चंद्र	16/12/2056
मंगल	20/12/2056
राहु	31/12/2056
गुरु	10/01/2057
शनि	22/01/2057
बुध	01/02/2057
केतु	05/02/2057
शुक्र	18/02/2057

सूर्य - चंद्र	
18/02/2057	
19/06/2057	
चंद्र	28/02/2057
मंगल	07/03/2057
राहु	25/03/2057
गुरु	10/04/2057
शनि	30/04/2057
बुध	17/05/2057
केतु	24/05/2057
शुक्र	13/06/2057
सूर्य	19/06/2057

Sample

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
19/06/2057		12/09/2057		20/04/2058		31/10/2058		20/06/2059	
12/09/2057		20/04/2058		31/10/2058		20/06/2059		13/01/2060	
मंगल	24/06/2057	राहु	15/10/2057	गुरु	16/05/2058	शनि	07/12/2058	बुध	19/07/2059
राहु	07/07/2057	गुरु	14/11/2057	शनि	15/06/2058	बुध	09/01/2059	केतु	31/07/2059
गुरु	18/07/2057	शनि	18/12/2057	बुध	13/07/2058	केतु	22/01/2059	शुक्र	04/09/2059
शनि	01/08/2057	बुध	18/01/2058	केतु	24/07/2058	शुक्र	02/03/2059	सूर्य	14/09/2059
बुध	13/08/2057	केतु	31/01/2058	शुक्र	26/08/2058	सूर्य	13/03/2059	चंद्र	01/10/2059
केतु	18/08/2057	शुक्र	09/03/2058	सूर्य	05/09/2058	चंद्र	02/04/2059	मंगल	13/10/2059
शुक्र	01/09/2057	सूर्य	20/03/2058	चंद्र	21/09/2058	मंगल	15/04/2059	राहु	13/11/2059
सूर्य	05/09/2057	चंद्र	07/04/2058	मंगल	02/10/2058	राहु	20/05/2059	गुरु	11/12/2059
चंद्र	12/09/2057	मंगल	20/04/2058	राहु	31/10/2058	गुरु	20/06/2059	शनि	13/01/2060

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
13/01/2060		07/04/2060		06/12/2060		27/06/2061		16/11/2061	
07/04/2060		06/12/2060		27/06/2061		16/11/2061		17/11/2062	
केतु	18/01/2060	शुक्र	18/05/2060	चंद्र	23/12/2060	मंगल	06/07/2061	राहु	10/01/2062
शुक्र	01/02/2060	सूर्य	30/05/2060	मंगल	04/01/2061	राहु	27/07/2061	गुरु	28/02/2062
सूर्य	05/02/2060	चंद्र	19/06/2060	राहु	04/02/2061	गुरु	15/08/2061	शनि	27/04/2062
चंद्र	12/02/2060	मंगल	03/07/2060	गुरु	03/03/2061	शनि	06/09/2061	बुध	17/06/2062
मंगल	17/02/2060	राहु	09/08/2060	शनि	04/04/2061	बुध	27/09/2061	केतु	09/07/2062
राहु	01/03/2060	गुरु	10/09/2060	बुध	03/05/2061	केतु	05/10/2061	शुक्र	08/09/2062
गुरु	12/03/2060	शनि	19/10/2060	केतु	14/05/2061	शुक्र	28/10/2061	सूर्य	26/09/2062
शनि	26/03/2060	बुध	22/11/2060	शुक्र	17/06/2061	सूर्य	05/11/2061	चंद्र	26/10/2062
बुध	07/04/2060	केतु	06/12/2060	सूर्य	27/06/2061	चंद्र	16/11/2061	मंगल	17/11/2062

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
17/11/2062		07/10/2063		27/10/2064		07/10/2065		26/02/2066	
07/10/2063		27/10/2064		07/10/2065		26/02/2066		08/04/2067	
गुरु	30/12/2062	शनि	07/12/2063	बुध	15/12/2064	केतु	15/10/2065	शुक्र	05/05/2066
शनि	19/02/2063	बुध	31/01/2064	केतु	04/01/2065	शुक्र	08/11/2065	सूर्य	25/05/2066
बुध	06/04/2063	केतु	22/02/2064	शुक्र	02/03/2065	सूर्य	15/11/2065	चंद्र	28/06/2066
केतु	25/04/2063	शुक्र	27/04/2064	सूर्य	20/03/2065	चंद्र	27/11/2065	मंगल	21/07/2066
शुक्र	18/06/2063	सूर्य	16/05/2064	चंद्र	17/04/2065	मंगल	05/12/2065	राहु	20/09/2066
सूर्य	05/07/2063	चंद्र	17/06/2064	मंगल	07/05/2065	राहु	26/12/2065	गुरु	13/11/2066
चंद्र	01/08/2063	मंगल	10/07/2064	राहु	28/06/2065	गुरु	14/01/2066	शनि	17/01/2067
मंगल	20/08/2063	राहु	05/09/2064	गुरु	13/08/2065	शनि	06/02/2066	बुध	15/03/2067
राहु	07/10/2063	गुरु	27/10/2064	शनि	07/10/2065	बुध	26/02/2066	केतु	08/04/2067

Sample

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
08/04/2067		07/08/2067		15/11/2067		28/07/2068		12/03/2069	
07/08/2067		15/11/2067		28/07/2068		12/03/2069		07/12/2069	
सूर्य	14/04/2067	मंगल	13/08/2067	राहु	23/12/2067	गुरु	27/08/2068	शनि	24/04/2069
चंद्र	24/04/2067	राहु	28/08/2067	गुरु	26/01/2068	शनि	02/10/2068	बुध	01/06/2069
मंगल	01/05/2067	गुरु	10/09/2067	शनि	07/03/2068	बुध	03/11/2068	केतु	17/06/2069
राहु	19/05/2067	शनि	26/09/2067	बुध	12/04/2068	केतु	16/11/2068	शुक्र	01/08/2069
गुरु	05/06/2067	बुध	10/10/2067	केतु	27/04/2068	शुक्र	24/12/2068	सूर्य	14/08/2069
शनि	24/06/2067	केतु	16/10/2067	शुक्र	09/06/2068	सूर्य	05/01/2069	चंद्र	06/09/2069
बुध	11/07/2067	शुक्र	02/11/2067	सूर्य	21/06/2068	चंद्र	23/01/2069	मंगल	21/09/2069
केतु	18/07/2067	सूर्य	07/11/2067	चंद्र	13/07/2068	मंगल	06/02/2069	राहु	01/11/2069
शुक्र	07/08/2067	चंद्र	15/11/2067	मंगल	28/07/2068	राहु	12/03/2069	गुरु	07/12/2069

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
07/12/2069		05/08/2070		13/11/2070		24/08/2071		17/11/2071	
05/08/2070		13/11/2070		24/08/2071		17/11/2071		07/04/2072	
बुध	10/01/2070	केतु	11/08/2070	शुक्र	30/12/2070	सूर्य	28/08/2071	चंद्र	29/11/2071
केतु	24/01/2070	शुक्र	28/08/2070	सूर्य	13/01/2071	चंद्र	04/09/2071	मंगल	07/12/2071
शुक्र	05/03/2070	सूर्य	02/09/2070	चंद्र	06/02/2071	मंगल	09/09/2071	राहु	28/12/2071
सूर्य	17/03/2070	चंद्र	10/09/2070	मंगल	22/02/2071	राहु	22/09/2071	गुरु	16/01/2072
चंद्र	06/04/2070	मंगल	16/09/2070	राहु	06/04/2071	गुरु	03/10/2071	शनि	08/02/2072
मंगल	21/04/2070	राहु	01/10/2070	गुरु	14/05/2071	शनि	17/10/2071	बुध	28/02/2072
राहु	27/05/2070	गुरु	14/10/2070	शनि	28/06/2071	बुध	29/10/2071	केतु	07/03/2072
गुरु	28/06/2070	शनि	30/10/2070	बुध	07/08/2071	केतु	03/11/2071	शुक्र	31/03/2072
शनि	05/08/2070	बुध	13/11/2070	केतु	24/08/2071	शुक्र	17/11/2071	सूर्य	07/04/2072

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
07/04/2072		24/01/2074		01/09/2075		26/07/2077		08/04/2079	
24/01/2074		01/09/2075		26/07/2077		08/04/2079		19/12/2079	
राहु	15/07/2072	गुरु	12/04/2074	शनि	20/12/2075	बुध	22/10/2077	केतु	23/04/2079
गुरु	10/10/2072	शनि	14/07/2074	बुध	27/03/2076	केतु	27/11/2077	शुक्र	04/06/2079
शनि	22/01/2073	बुध	05/10/2074	केतु	06/05/2076	शुक्र	10/03/2078	सूर्य	17/06/2079
बुध	25/04/2073	केतु	08/11/2074	शुक्र	30/08/2076	सूर्य	11/04/2078	चंद्र	08/07/2079
केतु	03/06/2073	शुक्र	13/02/2075	सूर्य	04/10/2076	चंद्र	01/06/2078	मंगल	23/07/2079
शुक्र	20/09/2073	सूर्य	14/03/2075	चंद्र	01/12/2076	मंगल	07/07/2078	राहु	31/08/2079
सूर्य	23/10/2073	चंद्र	02/05/2075	मंगल	10/01/2077	राहु	09/10/2078	गुरु	04/10/2079
चंद्र	17/12/2073	मंगल	05/06/2075	राहु	24/04/2077	गुरु	30/12/2078	शनि	13/11/2079
मंगल	24/01/2074	राहु	01/09/2075	गुरु	26/07/2077	शनि	08/04/2079	बुध	19/12/2079

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 9 वर्ष 11 मास 9 दिन

चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
25/12/2007		04/12/2017		04/12/2025		04/12/2042		04/12/2052	
04/12/2017		04/12/2025		04/12/2042		04/12/2052		04/12/2071	
	00/00/0000	मंगल	08/07/2018	बुध	07/08/2028	शनि	07/11/2043	गुरु	08/04/2056
	25/12/2007	बुध	11/10/2019	शनि	05/03/2030	गुरु	11/08/2045	राहु	19/05/2058
बुध	24/06/2008	शनि	08/07/2020	गुरु	02/03/2033	राहु	21/09/2046	शुक्र	27/01/2062
शनि	14/11/2009	गुरु	04/12/2021	राहु	21/01/2035	शुक्र	31/08/2048	सूर्य	17/02/2063
गुरु	04/07/2012	राहु	25/10/2022	शुक्र	12/05/2038	सूर्य	22/03/2049	चंद्र	07/10/2065
राहु	05/03/2014	शुक्र	15/05/2024	सूर्य	22/04/2039	चंद्र	11/08/2050	मंगल	05/03/2067
शुक्र	03/02/2017	सूर्य	24/10/2024	चंद्र	31/08/2041	मंगल	09/05/2051	बुध	02/03/2070
सूर्य	04/12/2017	चंद्र	04/12/2025	मंगल	04/12/2042	बुध	04/12/2052	शनि	04/12/2071

राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
04/12/2071		04/12/2083		05/12/2104		05/12/2110	
04/12/2083		05/12/2104		05/12/2110		00/00/0000	
राहु	04/04/2073	शुक्र	04/01/2088	सूर्य	05/04/2105	चंद्र	04/01/2113
शुक्र	05/08/2075	सूर्य	05/03/2089	चंद्र	04/02/2106	मंगल	14/02/2114
सूर्य	04/04/2076	चंद्र	03/02/2092	मंगल	16/07/2106	बुध	26/12/2115
चंद्र	04/12/2077	मंगल	24/08/2093	बुध	26/06/2107		00/00/0000
मंगल	25/10/2078	बुध	14/12/2096	शनि	15/01/2108		00/00/0000
बुध	14/09/2080	शनि	24/11/2098	गुरु	04/02/2109		00/00/0000
शनि	24/10/2081	गुरु	05/08/2102	राहु	05/10/2109		00/00/0000
गुरु	04/12/2083	राहु	05/12/2104	शुक्र	05/12/2110		00/00/0000

नोट उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Sample

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र	
25/12/2007		24/06/2008		14/11/2009		04/07/2012		05/03/2014	
24/06/2008		14/11/2009		04/07/2012		05/03/2014		03/02/2017	
	00/00/0000	शनि	10/08/2008	गुरु	02/05/2010	राहु	10/09/2012	शुक्र	28/09/2014
	00/00/0000	गुरु	08/11/2008	राहु	17/08/2010	शुक्र	07/01/2013	सूर्य	27/11/2014
	00/00/0000	राहु	03/01/2009	शुक्र	21/02/2011	सूर्य	09/02/2013	चंद्र	24/04/2015
	00/00/0000	शुक्र	12/04/2009	सूर्य	15/04/2011	चंद्र	05/05/2013	मंगल	11/07/2015
	00/00/0000	सूर्य	10/05/2009	चंद्र	27/08/2011	मंगल	19/06/2013	बुध	26/12/2015
	25/12/2007	चंद्र	19/07/2009	मंगल	07/11/2011	बुध	23/09/2013	शनि	03/04/2016
चंद्र	21/04/2008	मंगल	26/08/2009	बुध	06/04/2012	शनि	18/11/2013	गुरु	07/10/2016
मंगल	24/06/2008	बुध	14/11/2009	शनि	04/07/2012	गुरु	05/03/2014	राहु	03/02/2017

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु	
03/02/2017		04/12/2017		08/07/2018		11/10/2019		08/07/2020	
04/12/2017		08/07/2018		11/10/2019		08/07/2020		04/12/2021	
सूर्य	19/02/2017	मंगल	20/12/2017	बुध	19/09/2018	शनि	05/11/2019	गुरु	06/10/2020
चंद्र	03/04/2017	बुध	23/01/2018	शनि	31/10/2018	गुरु	23/12/2019	राहु	02/12/2020
मंगल	25/04/2017	शनि	12/02/2018	गुरु	20/01/2019	राहु	22/01/2020	शुक्र	12/03/2021
बुध	12/06/2017	गुरु	22/03/2018	राहु	12/03/2019	शुक्र	15/03/2020	सूर्य	10/04/2021
शनि	10/07/2017	राहु	15/04/2018	शुक्र	10/06/2019	सूर्य	30/03/2020	चंद्र	20/06/2021
गुरु	02/09/2017	शुक्र	27/05/2018	सूर्य	05/07/2019	चंद्र	06/05/2020	मंगल	28/07/2021
राहु	06/10/2017	सूर्य	08/06/2018	चंद्र	07/09/2019	मंगल	26/05/2020	बुध	17/10/2021
शुक्र	04/12/2017	चंद्र	08/07/2018	मंगल	11/10/2019	बुध	08/07/2020	शनि	04/12/2021

मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध	
04/12/2021		25/10/2022		15/05/2024		24/10/2024		04/12/2025	
25/10/2022		15/05/2024		24/10/2024		04/12/2025		07/08/2028	
राहु	09/01/2022	शुक्र	12/02/2023	सूर्य	24/05/2024	चंद्र	19/12/2024	बुध	07/05/2026
शुक्र	13/03/2022	सूर्य	16/03/2023	चंद्र	15/06/2024	मंगल	19/01/2025	शनि	05/08/2026
सूर्य	31/03/2022	चंद्र	03/06/2023	मंगल	27/06/2024	बुध	23/03/2025	गुरु	24/01/2027
चंद्र	15/05/2022	मंगल	15/07/2023	बुध	23/07/2024	शनि	30/04/2025	राहु	13/05/2027
मंगल	08/06/2022	बुध	12/10/2023	शनि	07/08/2024	गुरु	10/07/2025	शुक्र	19/11/2027
बुध	29/07/2022	शनि	04/12/2023	गुरु	04/09/2024	राहु	24/08/2025	सूर्य	12/01/2028
शनि	28/08/2022	गुरु	13/03/2024	राहु	23/09/2024	शुक्र	11/11/2025	चंद्र	27/05/2028
गुरु	25/10/2022	राहु	15/05/2024	शुक्र	24/10/2024	सूर्य	04/12/2025	मंगल	07/08/2028

Sample

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
07/08/2028		05/03/2030		02/03/2033		21/01/2035		12/05/2038	
05/03/2030		02/03/2033		21/01/2035		12/05/2038		22/04/2039	
शनि	30/09/2028	गुरु	13/09/2030	राहु	17/05/2033	शुक्र	12/09/2035	सूर्य	31/05/2038
गुरु	09/01/2029	राहु	13/01/2031	शुक्र	28/09/2033	सूर्य	18/11/2035	चंद्र	18/07/2038
राहु	14/03/2029	शुक्र	13/08/2031	सूर्य	06/11/2033	चंद्र	04/05/2036	मंगल	13/08/2038
शुक्र	03/07/2029	सूर्य	13/10/2031	चंद्र	10/02/2034	मंगल	01/08/2036	बुध	06/10/2038
सूर्य	04/08/2029	चंद्र	13/03/2032	मंगल	02/04/2034	बुध	08/02/2037	शनि	07/11/2038
चंद्र	23/10/2029	मंगल	02/06/2032	बुध	19/07/2034	शनि	30/05/2037	गुरु	06/01/2039
मंगल	05/12/2029	बुध	20/11/2032	शनि	21/09/2034	गुरु	29/12/2037	राहु	14/02/2039
बुध	05/03/2030	शनि	02/03/2033	गुरु	21/01/2035	राहु	12/05/2038	शुक्र	22/04/2039

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु	
22/04/2039		31/08/2041		04/12/2042		07/11/2043		11/08/2045	
31/08/2041		04/12/2042		07/11/2043		11/08/2045		21/09/2046	
चंद्र	20/08/2039	मंगल	04/10/2041	शनि	04/01/2043	गुरु	28/02/2044	राहु	25/09/2045
मंगल	23/10/2039	बुध	16/12/2041	गुरु	05/03/2043	राहु	10/05/2044	शुक्र	13/12/2045
बुध	06/03/2040	शनि	27/01/2042	राहु	12/04/2043	शुक्र	12/09/2044	सूर्य	04/01/2046
शनि	25/05/2040	गुरु	18/04/2042	शुक्र	16/06/2043	सूर्य	17/10/2044	चंद्र	02/03/2046
गुरु	24/10/2040	राहु	08/06/2042	सूर्य	05/07/2043	चंद्र	15/01/2045	मंगल	01/04/2046
राहु	28/01/2041	शुक्र	06/09/2042	चंद्र	21/08/2043	मंगल	03/03/2045	बुध	04/06/2046
शुक्र	14/07/2041	सूर्य	01/10/2042	मंगल	15/09/2043	बुध	12/06/2045	शनि	11/07/2046
सूर्य	31/08/2041	चंद्र	04/12/2042	बुध	07/11/2043	शनि	11/08/2045	गुरु	21/09/2046

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध	
21/09/2046		31/08/2048		22/03/2049		11/08/2050		09/05/2051	
31/08/2048		22/03/2049		11/08/2050		09/05/2051		04/12/2052	
शुक्र	06/02/2047	सूर्य	11/09/2048	चंद्र	31/05/2049	मंगल	31/08/2050	बुध	07/08/2051
सूर्य	17/03/2047	चंद्र	09/10/2048	मंगल	08/07/2049	बुध	13/10/2050	शनि	29/09/2051
चंद्र	24/06/2047	मंगल	24/10/2048	बुध	26/09/2049	शनि	07/11/2050	गुरु	09/01/2052
मंगल	16/08/2047	बुध	25/11/2048	शनि	12/11/2049	गुरु	24/12/2050	राहु	13/03/2052
बुध	05/12/2047	शनि	14/12/2048	गुरु	09/02/2050	राहु	24/01/2051	शुक्र	02/07/2052
शनि	09/02/2048	गुरु	19/01/2049	राहु	06/04/2050	शुक्र	17/03/2051	सूर्य	03/08/2052
गुरु	13/06/2048	राहु	10/02/2049	शुक्र	14/07/2050	सूर्य	01/04/2051	चंद्र	22/10/2052
राहु	31/08/2048	शुक्र	22/03/2049	सूर्य	11/08/2050	चंद्र	09/05/2051	मंगल	04/12/2052

Sample

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
04/12/2052		08/04/2056		19/05/2058		27/01/2062		17/02/2063	
08/04/2056		19/05/2058		27/01/2062		17/02/2063		07/10/2065	
गुरु	06/07/2053	राहु	02/07/2056	शुक्र	05/02/2059	सूर्य	17/02/2062	चंद्र	30/06/2063
राहु	19/11/2053	शुक्र	29/11/2056	सूर्य	21/04/2059	चंद्र	12/04/2062	मंगल	10/09/2063
शुक्र	15/07/2054	सूर्य	11/01/2057	चंद्र	25/10/2059	मंगल	11/05/2062	बुध	09/02/2064
सूर्य	20/09/2054	चंद्र	28/04/2057	मंगल	02/02/2060	बुध	10/07/2062	शनि	08/05/2064
चंद्र	09/03/2055	मंगल	24/06/2057	बुध	02/09/2060	शनि	15/08/2062	गुरु	24/10/2064
मंगल	07/06/2055	बुध	24/10/2057	शनि	05/01/2061	गुरु	22/10/2062	राहु	08/02/2065
बुध	17/12/2055	शनि	03/01/2058	गुरु	30/08/2061	राहु	04/12/2062	शुक्र	15/08/2065
शनि	08/04/2056	गुरु	19/05/2058	राहु	27/01/2062	शुक्र	17/02/2063	सूर्य	07/10/2065

गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र	
07/10/2065		05/03/2067		02/03/2070		04/12/2071		04/04/2073	
05/03/2067		02/03/2070		04/12/2071		04/04/2073		05/08/2075	
मंगल	15/11/2065	बुध	24/08/2067	शनि	30/04/2070	राहु	28/01/2072	शुक्र	17/09/2073
बुध	03/02/2066	शनि	04/12/2067	गुरु	21/08/2070	शुक्र	01/05/2072	सूर्य	03/11/2073
शनि	23/03/2066	गुरु	13/06/2068	राहु	01/11/2070	सूर्य	28/05/2072	चंद्र	02/03/2074
गुरु	21/06/2066	राहु	12/10/2068	शुक्र	06/03/2071	चंद्र	04/08/2072	मंगल	04/05/2074
राहु	18/08/2066	शुक्र	13/05/2069	सूर्य	10/04/2071	मंगल	09/09/2072	बुध	15/09/2074
शुक्र	26/11/2066	सूर्य	12/07/2069	चंद्र	09/07/2071	बुध	25/11/2072	शनि	03/12/2074
सूर्य	24/12/2066	चंद्र	11/12/2069	मंगल	25/08/2071	शनि	09/01/2073	गुरु	02/05/2075
चंद्र	05/03/2067	मंगल	02/03/2070	बुध	04/12/2071	गुरु	04/04/2073	राहु	05/08/2075

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि	
05/08/2075		04/04/2076		04/12/2077		25/10/2078		14/09/2080	
04/04/2076		04/12/2077		25/10/2078		14/09/2080		24/10/2081	
सूर्य	18/08/2075	चंद्र	28/06/2076	मंगल	28/12/2077	बुध	10/02/2079	शनि	21/10/2080
चंद्र	21/09/2075	मंगल	12/08/2076	बुध	17/02/2078	शनि	15/04/2079	गुरु	31/12/2080
मंगल	09/10/2075	बुध	16/11/2076	शनि	19/03/2078	गुरु	14/08/2079	राहु	15/02/2081
बुध	16/11/2075	शनि	11/01/2077	गुरु	15/05/2078	राहु	30/10/2079	शुक्र	04/05/2081
शनि	09/12/2075	गुरु	28/04/2077	राहु	20/06/2078	शुक्र	12/03/2080	सूर्य	27/05/2081
गुरु	21/01/2076	राहु	05/07/2077	शुक्र	22/08/2078	सूर्य	20/04/2080	चंद्र	22/07/2081
राहु	17/02/2076	शुक्र	31/10/2077	सूर्य	10/09/2078	चंद्र	24/07/2080	मंगल	21/08/2081
शुक्र	04/04/2076	सूर्य	04/12/2077	चंद्र	25/10/2078	मंगल	14/09/2080	बुध	24/10/2081

Sample

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
24/10/2081		**04/12/2083**		**04/01/2088**		**05/03/2089**		**03/02/2092**	
04/12/2083		**04/01/2088**		**05/03/2089**		**03/02/2092**		**24/08/2093**	
गुरु	09/03/2082	शुक्र	19/09/2084	सूर्य	28/01/2088	चंद्र	31/07/2089	मंगल	16/03/2092
राहु	03/06/2082	सूर्य	11/12/2084	चंद्र	27/03/2088	मंगल	18/10/2089	बुध	14/06/2092
शुक्र	31/10/2082	चंद्र	06/07/2085	मंगल	27/04/2088	बुध	04/04/2090	शनि	05/08/2092
सूर्य	12/12/2082	मंगल	25/10/2085	बुध	03/07/2088	शनि	11/07/2090	गुरु	13/11/2092
चंद्र	30/03/2083	बुध	17/06/2086	शनि	12/08/2088	गुरु	15/01/2091	राहु	16/01/2093
मंगल	26/05/2083	शनि	02/11/2086	गुरु	26/10/2088	राहु	13/05/2091	शुक्र	06/05/2093
बुध	24/09/2083	गुरु	22/07/2087	राहु	12/12/2088	शुक्र	06/12/2091	सूर्य	07/06/2093
शनि	04/12/2083	राहु	04/01/2088	शुक्र	05/03/2089	सूर्य	03/02/2092	चंद्र	24/08/2093

शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य	
24/08/2093		**14/12/2096**		**24/11/2098**		**05/08/2102**		**05/12/2104**	
14/12/2096		**24/11/2098**		**05/08/2102**		**05/12/2104**		**05/04/2105**	
बुध	03/03/2094	शनि	18/02/2097	गुरु	19/07/2099	राहु	08/11/2102	सूर्य	11/12/2104
शनि	22/06/2094	गुरु	23/06/2097	राहु	16/12/2099	शुक्र	23/04/2103	चंद्र	28/12/2104
गुरु	21/01/2095	राहु	09/09/2097	शुक्र	05/09/2100	सूर्य	09/06/2103	मंगल	06/01/2105
राहु	04/06/2095	शुक्र	26/01/2098	सूर्य	19/11/2100	चंद्र	06/10/2103	बुध	26/01/2105
शुक्र	25/01/2096	सूर्य	06/03/2098	चंद्र	25/05/2101	मंगल	08/12/2103	शनि	06/02/2105
सूर्य	01/04/2096	चंद्र	13/06/2098	मंगल	02/09/2101	बुध	20/04/2104	गुरु	27/02/2105
चंद्र	15/09/2096	मंगल	04/08/2098	बुध	02/04/2102	शनि	08/07/2104	राहु	13/03/2105
मंगल	14/12/2096	बुध	24/11/2098	शनि	05/08/2102	गुरु	05/12/2104	शुक्र	05/04/2105

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु	
05/04/2105		**04/02/2106**		**16/07/2106**		**26/06/2107**		**15/01/2108**	
04/02/2106		**16/07/2106**		**26/06/2107**		**15/01/2108**		**04/02/2109**	
चंद्र	18/05/2105	मंगल	16/02/2106	बुध	08/09/2106	शनि	15/07/2107	गुरु	23/03/2108
मंगल	09/06/2105	बुध	13/03/2106	शनि	10/10/2106	गुरु	20/08/2107	राहु	05/05/2108
बुध	27/07/2105	शनि	28/03/2106	गुरु	10/12/2106	राहु	11/09/2107	शुक्र	19/07/2108
शनि	24/08/2105	गुरु	26/04/2106	राहु	17/01/2107	शुक्र	21/10/2107	सूर्य	09/08/2108
गुरु	17/10/2105	राहु	14/05/2106	शुक्र	25/03/2107	सूर्य	01/11/2107	चंद्र	02/10/2108
राहु	20/11/2105	शुक्र	15/06/2106	सूर्य	14/04/2107	चंद्र	29/11/2107	मंगल	30/10/2108
शुक्र	18/01/2106	सूर्य	24/06/2106	चंद्र	01/06/2107	मंगल	14/12/2107	बुध	30/12/2108
सूर्य	04/02/2106	चंद्र	16/07/2106	मंगल	26/06/2107	बुध	15/01/2108	शनि	04/02/2109

Sample

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : पिंगला 1 वर्ष 3 मास 19 दिन

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
25/12/2007		**14/04/2009**		**14/04/2012**		**14/04/2016**		**14/04/2021**	
14/04/2009		**14/04/2012**		**14/04/2016**		**14/04/2021**		**14/04/2027**	
	00/00/0000	धांय	14/07/2009	भ्राम	23/09/2012	भद्रि	23/12/2016	उल्क	14/04/2022
	00/00/0000	भ्राम	13/11/2009	भद्रि	14/04/2013	उल्क	24/10/2017	सिद्ध	14/06/2023
	25/12/2007	भद्रि	14/04/2010	उल्क	13/12/2013	सिद्ध	14/10/2018	संक	13/10/2024
भद्रि	24/01/2008	उल्क	14/10/2010	सिद्ध	24/09/2014	संक	24/11/2019	मंग	13/12/2024
उल्क	24/05/2008	सिद्ध	15/05/2011	संक	14/08/2015	मंग	13/01/2020	पिंग	14/04/2025
सिद्ध	13/10/2008	संक	13/01/2012	मंग	24/09/2015	पिंग	24/04/2020	धांय	14/10/2025
संक	25/03/2009	मंग	13/02/2012	पिंग	14/12/2015	धांय	23/09/2020	भ्राम	14/06/2026
मंग	14/04/2009	पिंग	14/04/2012	धांय	14/04/2016	भ्राम	14/04/2021	भद्रि	14/04/2027

सि ा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
14/04/2027		**14/04/2034**		**14/04/2042**		**14/04/2043**		**14/04/2045**	
14/04/2034		**14/04/2042**		**14/04/2043**		**14/04/2045**		**14/04/2048**	
सिद्ध	24/08/2028	संक	24/01/2036	मंग	24/04/2042	पिंग	25/05/2043	धांय	14/07/2045
संक	15/03/2030	मंग	14/04/2036	पिंग	15/05/2042	धांय	25/07/2043	भ्राम	13/11/2045
मंग	25/05/2030	पिंग	23/09/2036	धांय	14/06/2042	भ्राम	14/10/2043	भद्रि	14/04/2046
पिंग	14/10/2030	धांय	25/05/2037	भ्राम	25/07/2042	भद्रि	24/01/2044	उल्क	14/10/2046
धांय	15/05/2031	भ्राम	14/04/2038	भद्रि	13/09/2042	उल्क	24/05/2044	सिद्ध	15/05/2047
भ्राम	23/02/2032	भद्रि	25/05/2039	उल्क	13/11/2042	सिद्ध	13/10/2044	संक	13/01/2048
भद्रि	12/02/2033	उल्क	23/09/2040	सिद्ध	23/01/2043	संक	25/03/2045	मंग	13/02/2048
उल्क	14/04/2034	सिद्ध	14/04/2042	संक	14/04/2043	मंग	14/04/2045	पिंग	14/04/2048

नोट – योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं –

मंगला	:	चन्द्र	पिंगला	:	सूर्य	धान्या	:	गुरु	भ्रामरी	:	मंगल
भद्रिका	:	बुध	उल्का	:	शनि	सि ा	:	शुक्र	संकटा	:	राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Sample

योगिनी दशा

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सि ा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
14/04/2048		**14/04/2052**		**14/04/2057**		**14/04/2063**		**14/04/2070**	
14/04/2052		**14/04/2057**		**14/04/2063**		**14/04/2070**		**14/04/2078**	
भ्राम	23/09/2048	भद्रि	23/12/2052	उल्क	14/04/2058	सिद्ध	24/08/2064	संक	24/01/2072
भद्रि	14/04/2049	उल्क	24/10/2053	सिद्ध	14/06/2059	संक	15/03/2066	मंग	14/04/2072
उल्क	13/12/2049	सिद्ध	14/10/2054	संक	13/10/2060	मंग	25/05/2066	पिंग	23/09/2072
सिद्ध	24/09/2050	संक	24/11/2055	मंग	13/12/2060	पिंग	14/10/2066	धांय	25/05/2073
संक	14/08/2051	मंग	13/01/2056	पिंग	14/04/2061	धांय	15/05/2067	भ्राम	14/04/2074
मंग	24/09/2051	पिंग	24/04/2056	धांय	14/10/2061	भ्राम	23/02/2068	भद्रि	25/05/2075
पिंग	14/12/2051	धांय	23/09/2056	भ्राम	14/06/2062	भद्रि	12/02/2069	उल्क	23/09/2076
धांय	14/04/2052	भ्राम	14/04/2057	भद्रि	14/04/2063	उल्क	14/04/2070	सिद्ध	14/04/2078

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
14/04/2078		**14/04/2079**		**14/04/2081**		**14/04/2084**		**14/04/2088**	
14/04/2079		**14/04/2081**		**14/04/2084**		**14/04/2088**		**14/04/2093**	
मंग	24/04/2078	पिंग	25/05/2079	धांय	14/07/2081	भ्राम	23/09/2084	भद्रि	23/12/2088
पिंग	15/05/2078	धांय	25/07/2079	भ्राम	13/11/2081	भद्रि	14/04/2085	उल्क	24/10/2089
धांय	14/06/2078	भ्राम	14/10/2079	भद्रि	14/04/2082	उल्क	13/12/2085	सिद्ध	14/10/2090
भ्राम	25/07/2078	भद्रि	24/01/2080	उल्क	14/10/2082	सिद्ध	24/09/2086	संक	24/11/2091
भद्रि	13/09/2078	उल्क	24/05/2080	सिद्ध	15/05/2083	संक	14/08/2087	मंग	13/01/2092
उल्क	13/11/2078	सिद्ध	13/10/2080	संक	13/01/2084	मंग	24/09/2087	पिंग	24/04/2092
सिद्ध	23/01/2079	संक	25/03/2081	मंग	13/02/2084	पिंग	14/12/2087	धांय	23/09/2092
संक	14/04/2079	मंग	14/04/2081	पिंग	14/04/2084	धांय	14/04/2088	भ्राम	14/04/2093

उल्का 6 वर्ष		सि ा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
14/04/2093		**14/04/2099**		**15/04/2106**		**15/04/2114**		**15/04/2115**	
14/04/2099		**15/04/2106**		**15/04/2114**		**15/04/2115**		**00/00/0000**	
उल्क	14/04/2094	सिद्ध	25/08/2100	संक	25/01/2108	मंग	25/04/2114	पिंग	26/05/2115
सिद्ध	14/06/2095	संक	16/03/2102	मंग	15/04/2108	पिंग	16/05/2114	धांय	26/07/2115
संक	13/10/2096	मंग	26/05/2102	पिंग	24/09/2108	धांय	15/06/2114	भ्राम	15/10/2115
मंग	13/12/2096	पिंग	15/10/2102	धांय	26/05/2109	भ्राम	26/07/2114	भद्रि	26/12/2115
पिंग	14/04/2097	धांय	16/05/2103	भ्राम	15/04/2110	भद्रि	14/09/2114		00/00/0000
धांय	14/10/2097	भ्राम	24/02/2104	भद्रि	26/05/2111	उल्क	14/11/2114		00/00/0000
भ्राम	14/06/2098	भद्रि	13/02/2105	उल्क	24/09/2112	सिद्ध	24/01/2115		00/00/0000
भद्रि	14/04/2099	उल्क	15/04/2106	सिद्ध	15/04/2114	संक	15/04/2115		00/00/0000

Sample

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 7 वर्ष 6 मास 29 दिन
कुल दशाकाल : 85 वर्ष
तिथि : पुनर्वसु - 2 सव्य
देह : मकर जीव : मिथुन

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष	
25/12/2007		24/07/2015		24/07/2024		24/07/2045		24/07/2050	
24/07/2015		24/07/2024		24/07/2045		24/07/2050		24/07/2059	
	00/00/0000	कन्या	07/07/2016	कर्क	01/10/2029	सिंह	08/11/2045	मिथु	07/07/2051
	25/12/2007	कर्क	27/09/2018	सिंह	26/12/2030	मिथु	21/05/2046	मक	09/12/2051
कर्क	21/03/2008	सिंह	08/04/2019	मिथु	17/03/2033	मक	15/08/2046	कुंभ	12/05/2052
सिंह	28/02/2009	मिथु	21/03/2020	मक	13/03/2034	कुंभ	09/11/2046	मीन	02/06/2053
मिथु	09/11/2010	मक	23/08/2020	कुंभ	09/03/2035	मीन	11/06/2047	वृश्चि	28/02/2054
मक	11/08/2011	कुंभ	24/01/2021	मीन	27/08/2037	वृश्चि	09/11/2047	तुला	09/11/2055
कुंभ	12/05/2012	मीन	15/02/2022	वृश्चि	21/05/2039	तुला	18/10/2048	कन्या	22/10/2056
मीन	30/03/2014	वृश्चि	13/11/2022	तुला	04/05/2043	कन्या	29/04/2049	कर्क	12/01/2059
वृश्चि	24/07/2015	तुला	24/07/2024	कन्या	24/07/2045	कर्क	24/07/2050	सिंह	24/07/2059

मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
24/07/2059		24/07/2063		24/07/2067		24/07/2077		24/07/2084	
24/07/2063		24/07/2067		24/07/2077		24/07/2084		00/00/0000	
मक	01/10/2059	कुंभ	01/10/2063	मीन	26/09/2068	वृश्चि	20/02/2078	तुला	29/07/2087
कुंभ	09/12/2059	मीन	21/03/2064	वृश्चि	24/07/2069	तुला	16/06/2079	कन्या	08/04/2089
मीन	29/05/2060	वृश्चि	19/07/2064	तुला	11/06/2071	कन्या	12/03/2080	कर्क	24/12/2092
वृश्चि	26/09/2060	तुला	20/04/2065	कन्या	02/07/2072	कर्क	04/12/2081		00/00/0000
तुला	28/06/2061	कन्या	22/09/2065	कर्क	22/12/2074	सिंह	04/05/2082		00/00/0000
कन्या	30/11/2061	कर्क	18/09/2066	सिंह	24/07/2075	मिथु	29/01/2083		00/00/0000
कर्क	26/11/2062	सिंह	13/12/2066	मिथु	14/08/2076	मक	30/05/2083		00/00/0000
सिंह	20/02/2063	मिथु	17/05/2067	मक	02/02/2077	कुंभ	27/09/2083		00/00/0000
मिथु	24/07/2063	मक	24/07/2067	कुंभ	24/07/2077	मीन	24/07/2084		00/00/0000

नोट उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

Sample

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - कुंभ		कन्या - मीन		कन्या - वृश्चि		कन्या - तुला		कर्क - कर्क	
23/08/2020		24/01/2021		15/02/2022		13/11/2022		24/07/2024	
24/01/2021		15/02/2022		13/11/2022		24/07/2024		01/10/2029	
कुंभ	30/08/2020	मीन	11/03/2021	वृश्चि	10/03/2022	तुला	09/03/2023	कर्क	04/11/2025
मीन	17/09/2020	वृश्चि	12/04/2021	तुला	29/04/2022	कन्या	14/05/2023	सिंह	23/02/2026
वृश्चि	30/09/2020	तुला	24/06/2021	कन्या	28/05/2022	कर्क	14/10/2023	मिथु	12/09/2026
तुला	29/10/2020	कन्या	04/08/2021	कर्क	03/08/2022	सिंह	19/11/2023	मक	10/12/2026
कन्या	14/11/2020	कर्क	07/11/2021	सिंह	19/08/2022	मिथु	24/01/2024	कुंभ	09/03/2027
कर्क	23/12/2020	सिंह	30/11/2021	मिथु	17/09/2022	मक	22/02/2024	मीन	18/10/2027
सिंह	01/01/2021	मिथु	10/01/2022	मक	29/09/2022	कुंभ	22/03/2024	वृश्चि	22/03/2028
मिथु	17/01/2021	मक	28/01/2022	कुंभ	12/10/2022	मीन	03/06/2024	तुला	14/03/2029
मक	24/01/2021	कुंभ	15/02/2022	मीन	13/11/2022	वृश्चि	24/07/2024	कन्या	01/10/2029

कर्क - सिंह		कर्क - मिथु		कर्क - मक		कर्क - कुंभ		कर्क - मीन	
01/10/2029		26/12/2030		17/03/2033		13/03/2034		09/03/2035	
26/12/2030		17/03/2033		13/03/2034		09/03/2035		27/08/2037	
सिंह	27/10/2029	मिथु	22/03/2031	मक	03/04/2033	कुंभ	30/03/2034	मीन	23/06/2035
मिथु	14/12/2029	मक	29/04/2031	कुंभ	20/04/2033	मीन	11/05/2034	वृश्चि	05/09/2035
मक	04/01/2030	कुंभ	06/06/2031	मीन	01/06/2033	वृश्चि	10/06/2034	तुला	22/02/2036
कुंभ	25/01/2030	मीन	10/09/2031	वृश्चि	01/07/2033	तुला	17/08/2034	कन्या	28/05/2036
मीन	20/03/2030	वृश्चि	16/11/2031	तुला	07/09/2033	कन्या	24/09/2034	कर्क	06/01/2037
वृश्चि	26/04/2030	तुला	17/04/2032	कन्या	15/10/2033	कर्क	23/12/2034	सिंह	28/02/2037
तुला	20/07/2030	कन्या	12/07/2032	कर्क	13/01/2034	सिंह	13/01/2035	मिथु	03/06/2037
कन्या	05/09/2030	कर्क	28/01/2033	सिंह	03/02/2034	मिथु	20/02/2035	मक	16/07/2037
कर्क	26/12/2030	सिंह	17/03/2033	मिथु	13/03/2034	मक	09/03/2035	कुंभ	27/08/2037

कर्क - वृश्चि		कर्क - तुला		कर्क - कन्या		सिंह - सिंह		सिंह - मिथु	
27/08/2037		21/05/2039		04/05/2043		24/07/2045		08/11/2045	
21/05/2039		04/05/2043		24/07/2045		08/11/2045		21/05/2046	
वृश्चि	18/10/2037	तुला	17/02/2040	कन्या	29/07/2043	सिंह	30/07/2045	मिथु	29/11/2045
तुला	14/02/2038	कन्या	19/07/2040	कर्क	14/02/2044	मिथु	11/08/2045	मक	08/12/2045
कन्या	22/04/2038	कर्क	10/07/2041	सिंह	02/04/2044	मक	16/08/2045	कुंभ	17/12/2045
कर्क	25/09/2038	सिंह	03/10/2041	मिथु	27/06/2044	कुंभ	21/08/2045	मीन	09/01/2046
सिंह	01/11/2038	मिथु	05/03/2042	मक	04/08/2044	मीन	02/09/2045	वृश्चि	25/01/2046
मिथु	07/01/2039	मक	12/05/2042	कुंभ	12/09/2044	वृश्चि	11/09/2045	तुला	02/03/2046
मक	06/02/2039	कुंभ	19/07/2042	मीन	16/12/2044	तुला	01/10/2045	कन्या	23/03/2046
कुंभ	08/03/2039	मीन	05/01/2043	वृश्चि	21/02/2045	कन्या	13/10/2045	कर्क	09/05/2046
मीन	21/05/2039	वृश्चि	04/05/2043	तुला	24/07/2045	कर्क	08/11/2045	सिंह	21/05/2046

Sample

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

सिंह - मक		सिंह - कुंभ		सिंह - मीन		सिंह - वृश्चि		सिंह - तुला	
21/05/2046		15/08/2046		09/11/2046		11/06/2047		09/11/2047	
15/08/2046		09/11/2046		11/06/2047		09/11/2047		18/10/2048	
मक	25/05/2046	कुंभ	19/08/2046	मीन	04/12/2046	वृश्चि	24/06/2047	तुला	13/01/2048
कुंभ	29/05/2046	मीन	29/08/2046	वृश्चि	22/12/2046	तुला	22/07/2047	कन्या	18/02/2048
मीन	08/06/2046	वृश्चि	05/09/2046	तुला	31/01/2047	कन्या	07/08/2047	कर्क	13/05/2048
वृश्चि	15/06/2046	तुला	21/09/2046	कन्या	23/02/2047	कर्क	13/09/2047	सिंह	02/06/2048
तुला	01/07/2046	कन्या	30/09/2046	कर्क	17/04/2047	सिंह	22/09/2047	मिथु	09/07/2048
कन्या	10/07/2046	कर्क	21/10/2046	सिंह	30/04/2047	मिथु	08/10/2047	मक	25/07/2048
कर्क	01/08/2046	सिंह	26/10/2046	मिथु	22/05/2047	मक	15/10/2047	कुंभ	10/08/2048
सिंह	06/08/2046	मिथु	05/11/2046	मक	01/06/2047	कुंभ	22/10/2047	मीन	19/09/2048
मिथु	15/08/2046	मक	09/11/2046	कुंभ	11/06/2047	मीन	09/11/2047	वृश्चि	18/10/2048

सिंह - कन्या		सिंह - कर्क		मिथु - मिथु		मिथु - मक		मिथु - कुंभ	
18/10/2048		29/04/2049		24/07/2050		07/07/2051		09/12/2051	
29/04/2049		24/07/2050		07/07/2051		09/12/2051		12/05/2052	
कन्या	07/11/2048	कर्क	18/08/2049	मिथु	30/08/2050	मक	15/07/2051	कुंभ	16/12/2051
कर्क	25/12/2048	सिंह	14/09/2049	मक	15/09/2050	कुंभ	22/07/2051	मीन	03/01/2052
सिंह	05/01/2049	मिथु	01/11/2049	कुंभ	02/10/2050	मीन	09/08/2051	वृश्चि	16/01/2052
मिथु	26/01/2049	मक	22/11/2049	मीन	12/11/2050	वृश्चि	22/08/2051	तुला	14/02/2052
मक	04/02/2049	कुंभ	13/12/2049	वृश्चि	10/12/2050	तुला	20/09/2051	कन्या	02/03/2052
कुंभ	13/02/2049	मीन	04/02/2050	तुला	14/02/2051	कन्या	06/10/2051	कर्क	09/04/2052
मीन	08/03/2049	वृश्चि	13/03/2050	कन्या	23/03/2051	कर्क	13/11/2051	सिंह	18/04/2052
वृश्चि	24/03/2049	तुला	06/06/2050	कर्क	17/06/2051	सिंह	23/11/2051	मिथु	04/05/2052
तुला	29/04/2049	कन्या	24/07/2050	सिंह	07/07/2051	मिथु	09/12/2051	मक	12/05/2052

मिथु - मीन		मिथु - वृश्चि		मिथु - तुला		मिथु - कन्या		मिथु - कर्क	
12/05/2052		02/06/2053		28/02/2054		09/11/2055		22/10/2056	
02/06/2053		28/02/2054		09/11/2055		22/10/2056		12/01/2059	
मीन	26/06/2052	वृश्चि	25/06/2053	तुला	25/06/2054	कन्या	16/12/2055	कर्क	11/05/2057
वृश्चि	28/07/2052	तुला	15/08/2053	कन्या	29/08/2054	कर्क	11/03/2056	सिंह	27/06/2057
तुला	09/10/2052	कन्या	12/09/2053	कर्क	29/01/2055	सिंह	31/03/2056	मिथु	21/09/2057
कन्या	19/11/2052	कर्क	18/11/2053	सिंह	06/03/2055	मिथु	07/05/2056	मक	30/10/2057
कर्क	22/02/2053	सिंह	04/12/2053	मिथु	11/05/2055	मक	23/05/2056	कुंभ	07/12/2057
सिंह	17/03/2053	मिथु	02/01/2054	मक	09/06/2055	कुंभ	09/06/2056	मीन	12/03/2058
मिथु	27/04/2053	मक	15/01/2054	कुंभ	08/07/2055	मीन	20/07/2056	वृश्चि	18/05/2058
मक	15/05/2053	कुंभ	27/01/2054	मीन	19/09/2055	वृश्चि	17/08/2056	तुला	18/10/2058
कुंभ	02/06/2053	मीन	28/02/2054	वृश्चि	09/11/2055	तुला	22/10/2056	कन्या	12/01/2059

Sample

चर दशा

भोग्य दशा काल : मकर 5 वर्ष 0 मास 0 दिन

मकर 5 वर्ष		धनु 12 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 12 वर्ष	
25/12/2007		24/12/2012		24/12/2024		25/12/2031	
24/12/2012		24/12/2024		25/12/2031		25/12/2043	
धनु	25/05/2008	वृश्चि	24/12/2013	तुला	25/07/2025	वृश्चि	24/12/2032
वृश्चि	24/10/2008	तुला	25/12/2014	कन्या	23/02/2026	धनु	24/12/2033
तुला	25/03/2009	कन्या	25/12/2015	सिंह	24/09/2026	मक	25/12/2034
कन्या	25/08/2009	सिंह	24/12/2016	कर्क	25/04/2027	कुंभ	25/12/2035
सिंह	24/01/2010	कर्क	24/12/2017	मिथु	24/11/2027	मीन	24/12/2036
कर्क	25/06/2010	मिथु	25/12/2018	वृष	25/06/2028	मेष	24/12/2037
मिथु	24/11/2010	वृष	25/12/2019	मेष	24/01/2029	वृष	25/12/2038
वृष	25/04/2011	मेष	24/12/2020	मीन	25/08/2029	मिथु	25/12/2039
मेष	25/09/2011	मीन	24/12/2021	कुंभ	26/03/2030	कर्क	24/12/2040
मीन	24/02/2012	कुंभ	25/12/2022	मक	25/10/2030	सिंह	24/12/2041
कुंभ	25/07/2012	मक	25/12/2023	धनु	26/05/2031	कन्या	25/12/2042
मक	24/12/2012	धनु	24/12/2024	वृश्चि	25/12/2031	तुला	25/12/2043

कन्या 9 वर्ष		सिंह 8 वर्ष		कर्क 1 वर्ष		मिथुन 6 वर्ष	
25/12/2043		24/12/2052		24/12/2060		24/12/2061	
24/12/2052		24/12/2060		24/12/2061		25/12/2067	
तुला	24/09/2044	कन्या	25/08/2053	मिथु	24/01/2061	वृष	25/06/2062
वृश्चि	25/06/2045	तुला	25/04/2054	वृष	23/02/2061	मेष	25/12/2062
धनु	26/03/2046	वृश्चि	25/12/2054	मेष	25/03/2061	मीन	25/06/2063
मक	25/12/2046	धनु	25/08/2055	मीन	25/04/2061	कुंभ	25/12/2063
कुंभ	25/09/2047	मक	25/04/2056	कुंभ	25/05/2061	मक	25/06/2064
मीन	25/06/2048	कुंभ	24/12/2056	मक	25/06/2061	धनु	24/12/2064
मेष	25/03/2049	मीन	25/08/2057	धनु	25/07/2061	वृश्चि	25/06/2065
वृष	24/12/2049	मेष	25/04/2058	वृश्चि	25/08/2061	तुला	24/12/2065
मिथु	24/09/2050	वृष	25/12/2058	तुला	24/09/2061	कन्या	25/06/2066
कर्क	25/06/2051	मिथु	25/08/2059	कन्या	25/10/2061	सिंह	25/12/2066
सिंह	25/03/2052	कर्क	25/04/2060	सिंह	24/11/2061	कर्क	25/06/2067
कन्या	24/12/2052	सिंह	24/12/2060	कर्क	24/12/2061	मिथु	25/12/2067

वृष 5 वर्ष		मेष 2 वर्ष		मीन 3 वर्ष		कुम्भ 6 वर्ष	
25/12/2067		24/12/2072		25/12/2074		24/12/2077	
24/12/2072		25/12/2074		24/12/2077		25/12/2083	
मेष	25/05/2068	वृष	23/02/2073	मेष	26/03/2075	मीन	25/06/2078
मीन	24/10/2068	मिथु	25/04/2073	वृष	25/06/2075	मेष	25/12/2078
कुंभ	25/03/2069	कर्क	25/06/2073	मिथु	25/09/2075	वृष	25/06/2079
मक	25/08/2069	सिंह	25/08/2073	कर्क	25/12/2075	मिथु	25/12/2079
धनु	24/01/2070	कन्या	25/10/2073	सिंह	25/03/2076	कर्क	25/06/2080
वृश्चि	25/06/2070	तुला	24/12/2073	कन्या	25/06/2076	सिंह	24/12/2080
तुला	24/11/2070	वृश्चि	23/02/2074	तुला	24/09/2076	कन्या	25/06/2081
कन्या	25/04/2071	धनु	25/04/2074	वृश्चि	24/12/2076	तुला	24/12/2081
सिंह	25/09/2071	मक	25/06/2074	धनु	25/03/2077	वृश्चि	25/06/2082
कर्क	24/02/2072	कुंभ	25/08/2074	मक	25/06/2077	धनु	25/12/2082
मिथु	25/07/2072	मीन	25/10/2074	कुंभ	24/09/2077	मक	25/06/2083
वृष	24/12/2072	मेष	25/12/2074	मीन	24/12/2077	कुंभ	25/12/2083

नोट उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

Sample

चर दशा - प्रत्यन्तर

धनु - मेष	
25/12/2019	
24/12/2020	
वृष	24/01/2020
मिथु	24/02/2020
कर्क	25/03/2020
सिंह	25/04/2020
कन्या	25/05/2020
तुला	25/06/2020
वृश्चि	25/07/2020
धनु	24/08/2020
मक	24/09/2020
कुंभ	24/10/2020
मीन	24/11/2020
मेष	24/12/2020

धनु - मीन	
24/12/2020	
24/12/2021	
मेष	24/01/2021
वृष	23/02/2021
मिथु	25/03/2021
कर्क	25/04/2021
सिंह	25/05/2021
कन्या	25/06/2021
तुला	25/07/2021
वृश्चि	25/08/2021
धनु	24/09/2021
मक	25/10/2021
कुंभ	24/11/2021
मीन	24/12/2021

धनु - कुंभ	
24/12/2021	
25/12/2022	
मीन	24/01/2022
मेष	23/02/2022
वृष	26/03/2022
मिथु	25/04/2022
कर्क	26/05/2022
सिंह	25/06/2022
कन्या	25/07/2022
तुला	25/08/2022
वृश्चि	24/09/2022
धनु	25/10/2022
मक	24/11/2022
कुंभ	25/12/2022

धनु - मक	
25/12/2022	
25/12/2023	
धनु	24/01/2023
वृश्चि	24/02/2023
तुला	26/03/2023
कन्या	25/04/2023
सिंह	26/05/2023
कर्क	25/06/2023
मिथु	26/07/2023
वृष	25/08/2023
मेष	25/09/2023
मीन	25/10/2023
कुंभ	24/11/2023
मक	25/12/2023

धनु - धनु	
25/12/2023	
24/12/2024	
वृश्चि	24/01/2024
तुला	24/02/2024
कन्या	25/03/2024
सिंह	25/04/2024
कर्क	25/05/2024
मिथु	25/06/2024
वृष	25/07/2024
मेष	24/08/2024
मीन	24/09/2024
कुंभ	24/10/2024
मक	24/11/2024
धनु	24/12/2024

वृश्चि - तुला	
24/12/2024	
25/07/2025	
वृश्चि	11/01/2025
धनु	29/01/2025
मक	15/02/2025
कुंभ	05/03/2025
मीन	23/03/2025
मेष	10/04/2025
वृष	27/04/2025
मिथु	15/05/2025
कर्क	02/06/2025
सिंह	20/06/2025
कन्या	07/07/2025
तुला	25/07/2025

वृश्चि - कन्या	
25/07/2025	
23/02/2026	
तुला	12/08/2025
वृश्चि	30/08/2025
धनु	17/09/2025
मक	04/10/2025
कुंभ	22/10/2025
मीन	09/11/2025
मेष	27/11/2025
वृष	14/12/2025
मिथु	01/01/2026
कर्क	19/01/2026
सिंह	06/02/2026
कन्या	23/02/2026

वृश्चि - सिंह	
23/02/2026	
24/09/2026	
कन्या	13/03/2026
तुला	31/03/2026
वृश्चि	18/04/2026
धनु	05/05/2026
मक	23/05/2026
कुंभ	10/06/2026
मीन	28/06/2026
मेष	15/07/2026
वृष	02/08/2026
मिथु	20/08/2026
कर्क	07/09/2026
सिंह	24/09/2026

वृश्चि - कर्क	
24/09/2026	
25/04/2027	
मिथु	12/10/2026
वृष	30/10/2026
मेष	17/11/2026
मीन	04/12/2026
कुंभ	22/12/2026
मक	09/01/2027
धनु	27/01/2027
वृश्चि	13/02/2027
तुला	03/03/2027
कन्या	21/03/2027
सिंह	08/04/2027
कर्क	25/04/2027

वृश्चि - मिथु	
25/04/2027	
24/11/2027	
वृष	13/05/2027
मेष	31/05/2027
मीन	18/06/2027
कुंभ	05/07/2027
मक	23/07/2027
धनु	10/08/2027
वृश्चि	28/08/2027
तुला	14/09/2027
कन्या	02/10/2027
सिंह	20/10/2027
कर्क	07/11/2027
मिथु	24/11/2027

वृश्चि - वृष	
24/11/2027	
25/06/2028	
मेष	12/12/2027
मीन	30/12/2027
कुंभ	17/01/2028
मक	04/02/2028
धनु	21/02/2028
वृश्चि	10/03/2028
तुला	28/03/2028
कन्या	15/04/2028
सिंह	02/05/2028
कर्क	20/05/2028
मिथु	07/06/2028
वृष	25/06/2028

वृश्चि - मेष	
25/06/2028	
24/01/2029	
वृष	12/07/2028
मिथु	30/07/2028
कर्क	17/08/2028
सिंह	04/09/2028
कन्या	21/09/2028
तुला	09/10/2028
वृश्चि	27/10/2028
धनु	14/11/2028
मक	01/12/2028
कुंभ	19/12/2028
मीन	06/01/2029
मेष	24/01/2029

वृश्चि - मीन	
24/01/2029	
25/08/2029	
मेष	10/02/2029
वृष	28/02/2029
मिथु	18/03/2029
कर्क	05/04/2029
सिंह	22/04/2029
कन्या	10/05/2029
तुला	28/05/2029
वृश्चि	15/06/2029
धनु	02/07/2029
मक	20/07/2029
कुंभ	07/08/2029
मीन	25/08/2029

वृश्चि - कुंभ	
25/08/2029	
26/03/2030	
मीन	11/09/2029
मेष	29/09/2029
वृष	17/10/2029
मिथु	04/11/2029
कर्क	21/11/2029
सिंह	09/12/2029
कन्या	27/12/2029
तुला	14/01/2030
वृश्चि	31/01/2030
धनु	18/02/2030
मक	08/03/2030
कुंभ	26/03/2030

वृश्चि - मक	
26/03/2030	
25/10/2030	
धनु	12/04/2030
वृश्चि	30/04/2030
तुला	18/05/2030
कन्या	05/06/2030
सिंह	23/06/2030
कर्क	10/07/2030
मिथु	28/07/2030
वृष	15/08/2030
मेष	02/09/2030
मीन	19/09/2030
कुंभ	07/10/2030
मक	25/10/2030

Sample

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृश्चिक - धनु		वृश्चिक - वृश्चिक		तुला - वृश्चिक		तुला - धनु		तुला - मक	
25/10/2030		**26/05/2031**		**25/12/2031**		**24/12/2032**		**24/12/2033**	
26/05/2031		**25/12/2031**		**24/12/2032**		**24/12/2033**		**25/12/2034**	
वृश्चिक	12/11/2030	तुला	13/06/2031	तुला	24/01/2032	वृश्चिक	24/01/2033	धनु	24/01/2034
तुला	29/11/2030	कन्या	30/06/2031	कन्या	24/02/2032	तुला	23/02/2033	वृश्चिक	23/02/2034
कन्या	17/12/2030	सिंह	18/07/2031	सिंह	25/03/2032	कन्या	25/03/2033	तुला	26/03/2034
सिंह	04/01/2031	कर्क	05/08/2031	कर्क	25/04/2032	सिंह	25/04/2033	कन्या	25/04/2034
कर्क	22/01/2031	मिथु	23/08/2031	मिथु	25/05/2032	कर्क	25/05/2033	सिंह	26/05/2034
मिथु	08/02/2031	वृष	09/09/2031	वृष	25/06/2032	मिथु	25/06/2033	कर्क	25/06/2034
वृष	26/02/2031	मेष	27/09/2031	मेष	25/07/2032	वृष	25/07/2033	मिथु	25/07/2034
मेष	16/03/2031	मीन	15/10/2031	मीन	24/08/2032	मेष	25/08/2033	वृष	25/08/2034
मीन	03/04/2031	कुंभ	02/11/2031	कुंभ	24/09/2032	मीन	24/09/2033	मेष	24/09/2034
कुंभ	20/04/2031	मक	19/11/2031	मक	24/10/2032	कुंभ	25/10/2033	मीन	25/10/2034
मक	08/05/2031	धनु	07/12/2031	धनु	24/11/2032	मक	24/11/2033	कुंभ	24/11/2034
धनु	26/05/2031	वृश्चिक	25/12/2031	वृश्चिक	24/12/2032	धनु	24/12/2033	मक	25/12/2034

तुला - कुंभ		तुला - मीन		तुला - मेष		तुला - वृष		तुला - मिथु	
25/12/2034		**25/12/2035**		**24/12/2036**		**24/12/2037**		**25/12/2038**	
25/12/2035		**24/12/2036**		**24/12/2037**		**25/12/2038**		**25/12/2039**	
मीन	24/01/2035	मेष	24/01/2036	वृष	24/01/2037	मेष	24/01/2038	वृष	24/01/2039
मेष	24/02/2035	वृष	24/02/2036	मिथु	23/02/2037	मीन	23/02/2038	मेष	24/02/2039
वृष	26/03/2035	मिथु	25/03/2036	कर्क	25/03/2037	कुंभ	26/03/2038	मीन	26/03/2039
मिथु	25/04/2035	कर्क	25/04/2036	सिंह	25/04/2037	मक	25/04/2038	कुंभ	25/04/2039
कर्क	26/05/2035	सिंह	25/05/2036	कन्या	25/05/2037	धनु	26/05/2038	मक	26/05/2039
सिंह	25/06/2035	कन्या	25/06/2036	तुला	25/06/2037	वृश्चिक	25/06/2038	धनु	25/06/2039
कन्या	26/07/2035	तुला	25/07/2036	वृश्चिक	25/07/2037	तुला	25/07/2038	वृश्चिक	26/07/2039
तुला	25/08/2035	वृश्चिक	24/08/2036	धनु	25/08/2037	कन्या	25/08/2038	तुला	25/08/2039
वृश्चिक	25/09/2035	धनु	24/09/2036	मक	24/09/2037	सिंह	24/09/2038	कन्या	25/09/2039
धनु	25/10/2035	मक	24/10/2036	कुंभ	25/10/2037	कर्क	25/10/2038	सिंह	25/10/2039
मक	24/11/2035	कुंभ	24/11/2036	मीन	24/11/2037	मिथु	24/11/2038	कर्क	24/11/2039
कुंभ	25/12/2035	मीन	24/12/2036	मेष	24/12/2037	वृष	25/12/2038	मिथु	25/12/2039

तुला - कर्क		तुला - सिंह		तुला - कन्या		तुला - तुला		कन्या - तुला	
25/12/2039		**24/12/2040**		**24/12/2041**		**25/12/2042**		**25/12/2043**	
24/12/2040		**24/12/2041**		**25/12/2042**		**25/12/2043**		**24/09/2044**	
मिथु	24/01/2040	कन्या	24/01/2041	तुला	24/01/2042	वृश्चिक	24/01/2043	वृश्चिक	17/01/2044
वृष	24/02/2040	तुला	23/02/2041	वृश्चिक	23/02/2042	धनु	24/02/2043	धनु	09/02/2044
मेष	25/03/2040	वृश्चिक	25/03/2041	धनु	26/03/2042	मक	26/03/2043	मक	02/03/2044
मीन	25/04/2040	धनु	25/04/2041	मक	25/04/2042	कुंभ	25/04/2043	कुंभ	25/03/2044
कुंभ	25/05/2040	मक	25/05/2041	कुंभ	26/05/2042	मीन	26/05/2043	मीन	17/04/2044
मक	25/06/2040	कुंभ	25/06/2041	मीन	25/06/2042	मेष	25/06/2043	मेष	10/05/2044
धनु	25/07/2040	मीन	25/07/2041	मेष	25/07/2042	वृष	26/07/2043	वृष	02/06/2044
वृश्चिक	24/08/2040	मेष	25/08/2041	वृष	25/08/2042	मिथु	25/08/2043	मिथु	25/06/2044
तुला	24/09/2040	वृष	24/09/2041	मिथु	24/09/2042	कर्क	25/09/2043	कर्क	17/07/2044
कन्या	24/10/2040	मिथु	25/10/2041	कर्क	25/10/2042	सिंह	25/10/2043	सिंह	09/08/2044
सिंह	24/11/2040	कर्क	24/11/2041	सिंह	24/11/2042	कन्या	24/11/2043	कन्या	01/09/2044
कर्क	24/12/2040	सिंह	24/12/2041	कन्या	25/12/2042	तुला	25/12/2043	तुला	24/09/2044

Sample

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	1
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 1
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

Sample

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	100%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
नीलम	शनि	64%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, धन
पन्ना	बुध	55%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	34%	शत्रु व रोग, ग्रह कलेश, हानि
गोमेद	राहु	28%	धन हानि, दुर्घटना
मोती	चंद्र	22%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यय, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	0%	व्यय, पराक्रम हानि
लहसुनिया	केतु	0%	दुर्घटना, व्यय

रत्न की शुभता

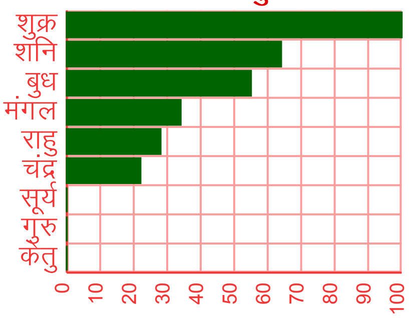

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	29/05/2018	0%	34%	47%	34%	2%	92%	64%	28%	0%
शनि	29/05/2037	0%	0%	9%	61%	0%	100%	77%	41%	0%
बुध	29/05/2054	0%	0%	34%	67%	0%	100%	64%	28%	0%
केतु	29/05/2061	0%	0%	47%	55%	0%	100%	52%	3%	6%
शुक्र	29/05/2081	0%	0%	34%	61%	0%	100%	70%	41%	0%
सूर्य	30/05/2087	0%	34%	47%	55%	0%	92%	52%	3%	0%
चंद्र	29/05/2097	0%	47%	34%	61%	0%	100%	64%	3%	0%
मंगल	30/05/2104	0%	34%	55%	34%	0%	100%	64%	3%	0%
राहु	30/05/2122	0%	0%	9%	55%	0%	100%	70%	52%	0%

Sample

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सि अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान–सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान–प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

Sample

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

हीरा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए नीलम एवं पन्ना रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा व गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

मोती, माणिक्य, पुखराज व लहसुनिया रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान–सम्मान में कमी, धन–धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :–

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभदायक सिद्ध होगा। यह रत्न आपके स्वभाव को शांत और मिलनसार बनाएगा। आपको विवादों से दूर रखेगा। इसकी शुभता से आपका नैतिक आचरण अच्छा रहेगा। आप धार्मिक और श्रद्धालु स्वभाव के होंगे। हीरे रत्न की शक्तियां आपकी दान पुण्य में रुचि बनाए रखेंगी। हीरे का शुभ प्रभाव से आप अच्छे वक्ता होंगे। धन–दौलत की आपको कोई कमी नहीं होगी। पद–प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। गायन, वादन, साहित्य रचना, चित्रकारी जैसी ललित कलाओं में आपकी अच्छी रुचि जागृत होगी।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं दशमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपको माता–पिता से सुख, शारीरिक सौंदर्य की वृद्धि, भू–संपति का सुख दिला सकता है। इस रत्न को धारण कर आप वाहन, राज्य व आजीविका क्षेत्र से शुभ फल प्राप्त हो सकते है। लाभ व प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते है। यह रत्न पंचमेश का होने के कारण आपको विद्या, बुद्धि एवं संतान सुख को अनुकूल करने में सहयोग कर सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे– चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। शनि ग्रह की सभी शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम आपको विद्वान वाकपटु और दयालु बनायेगा। नीलम शुभता से आप निर्भय चतुर और उदार प्रकृति के व्यक्ति बनेंगे। विवाह के माध्यम से आपको आर्थिक लाभ की प्राप्ति हो सकती है। रत्न शुभता से आपको उत्तराधिकार में जमीन की प्राप्ति हो सकती है। इसके अलावा नीलम रत्न की शुभता आपको गूढशास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने में सहयोगी सिद्ध होगी।

Sample

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वितीयेश है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप शनि के सभी शुभफल प्राप्त कर सकते है। यह नीलम रत्न आपको स्वभाव, शरीर आरोग्यता, आयु, यश एवं प्रतिष्ठा दे सकता है। इस रत्न को धारण करने से आपके संचित धन में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से स्वास्थ्य शुभ, व्यक्तित्व उज्जवल, अचल संपत्ति, कुटुंब, उत्तम भोजन, पारिवारिक सुख, वाणी की मधुरता एवं आरम्भिक शिक्षा उत्तम हो सकती है। नीलम रत्न प्रभाव से आपके परिवार में बढ़ोतरी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे– उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5–6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। आप बुध ग्रह की शुभता पाने के लिए पन्ना रत्न धारण करें। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान, विचारशील और विवेकी व्यक्ति बनेंगे। आपको धर्म के प्रति आस्थावान बनाएगा। यह रत्न आपको एक स्पष्ट वक्ता बनाएगा। बुध रत्न पन्ना से आपको आलस्य से बचाएगा। तथा रत्न शुभता से आप दूसरों के धन का लालच नहीं करेंगे। पन्ना रत्न शुभता आपको उच्च पद और प्रतिष्ठा देगा। बौद्धिक योग्यता से आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में भी यह रत्न शुभ फल प्रदान करेगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व षष्ठेश है। बुध रत्न पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण कर आप अपने भाग्य को प्रगतिशील बना सकते है। धर्म, कर्म और आध्यात्मिक विषयों से सहज जुड़ सकते है। पन्ना रत्न धारण से आप शत्रुओं को बुद्धिमानी से परास्त कर पायेंगे। यह रत्न आपको यथायोग्य सम्मान दिलाएगा। रत्न शुभता से आपके बाधित कार्य फिर से बनने लगेंगे। पन्ना रत्न की शुभता से आप अपने ऋणों का समय पर भुगतान करने में सफल रहेंगे। दैनिक व्यवसाय की कठिनाईयां रत्न शुभता से दूर हो सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड .वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे – मूंग,

Sample

कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपको प्रसिद्धि की प्रतिकूलता, विद्वानों से शत्रुता, तकनीकी विषयों में अरुचि हो सकती है। अत्यधिक साहस, जोखिम लेने का स्वभाव आपको शारीरिक कष्ट दे सकता है। विरोधियों से कष्ट आपके लिए बने रहेंगे। यह रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति को बाधित कर सकता है। प्रतियोगिताओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। मूंगा रत्न आपको अधीनस्थों के द्वारा पीड़ित कर सकता है। माता के सुख में कमी के योग बन सकते है। मूंगा रत्न आपको रक्त प्रवाह से संबंधित रोग दे सकता है। शक्ति का दुरुपयोग आपके द्वारा हो सकता है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं एकादशेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर भूमि–भवन के विषय सहजता से पूर्ण नहीं होंगे। मूंगा रत्न आपको संपत्ति के क्रय–विक्रय से संबंधित कार्यक्षेत्रों में हानि दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपको जन्मस्थान से दूर रहना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी माता, वाहन एवं समाज का सुख मार्ग बाधित कर सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद आप अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने क लिए प्रेरित हो सकते है। उच्चाभिलाषा की कामना आपको आंशिक रूप से स्वार्थी भी बना सकती है। मूंगा रत्न आपको जोश, साहस और जोखिम पूर्ण क्षेत्रों में आय व लाभार्जन की प्रवृति आपको दे सकता है।

गोमेद

आपकी कुंड़ली में राहु दूसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू का गोमेद रत्न धारण करने पर आप धन संचय के लिए असत्य वचन कह सकते है। आपके पारिवारिक कार्यो में अस्थिरता रहेगी। रत्न धारण से धनार्जन करना भी आपके लिए कष्टकारी रहेगा। घर में बने भोजन से अधिक आपको फास्ट फूड अधिक रुचिकर लग सकता है। संतान कम संख्या में हो सकती है। आपके कामों में अक्सर रुकावटें आ सकती हैं। आप असत्य बोलने में अधिक विश्वास कर सकते हैं। व्यर्थ बोलने की आपको आदत हो सकती है। रत्न प्रभाव से वाणी में किसी प्रकार का दोष हो सकता है। रत्न प्रभाव से किसी अखाद्य य अपेय का सेवन आपके द्वारा हो सकता हैं। आपके द्वारा पैतृक सम्पदा का विनाश हो सकता हैं। पैसों का दुरुपयोग हो सकता हैं। आप कुपात्रों पर धन खर्च कर सकते हैं।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि आठवें भाव में स्थित है। अतः गोमेद

रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान–सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरूसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्रमा का मोती रत्न धारण करने पर किसी विशेष मामले में आपको अपमानित होना पड सकता है। आपके अपने मामा–मौसी से संबंध प्रतिकूल हो सकते है। अपने शत्रुओं की पहचान करना आपके लिए सरल नहीं होगा। यह रत्न आपको कफ रोगी, नेत्र रोगी, अल्पायु, आसक्त, व्ययी बना सकता है। इसके प्रभाव से आप अस्वस्थ्यता का अनुभव करेंगें। बढ़ते कर्ज आपको मानसिक चिंताएं दे सकते है। कर्ज का भुगदान ज्यादा आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। कार्यो को शीघ्रता से करने की प्रवृत्ति कार्यो में गुणवत्ता का अभाव ला सकती है। मोती रत्न आपमें असंतोष का भाव ला सकता है। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में चंद्र सप्तम भाव के स्वामी है। सप्तमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करने पर आपके जीवन की मुख्य क्रियाएं वैवाहिक जीवन के इर्द–गिर्द केन्द्रित हो सकती है। जीवन साथी के प्रति विशेष अनुग्रह के कारण आप अपने अन्य दायित्वों के निर्वाह में चूक सकते है। रत्न की शुभता का पूर्ण सहयोग प्राप्त न होने के कारण आपका ग्रहस्थ सुख आंशिक रूप से कष्टपूर्ण हो सकता है। मोती रत्न आपको साझेदारी व्यापार में अनियमितता दे सकता है। मोती रत्न आपकी प्रसन्नता, सदबुद्धि तथा यश सम्मान में कमी कर सकता है। यह रत्न आपकी विदेश यात्राओं में बाधक का कार्य कर सकता है। आप भ्रमणशील हो सकते है। साथ ही यह रत्न धन–धान्य में भी कमी कर सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यो में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते है। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यो पर हो सकते है। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यो पर भी अधिक हो सकते है। आंखों के रोग आपको नज़र दोष दे सकते है। आपको चश्में का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी मकर लग्न की कुंड़ली में सूर्य अष्टमेश है। अष्टमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। इस रत्न में शुभता की कमी के कारण आप पदोन्नति के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करने का प्रयास कर सकते है। सरकारी क्षेत्रों से अपना काम निकलवाने के लिए भी आप अन्य स्त्रोतों का सहयोग लेने से पीछे नहीं हटेंगे। रत्न प्रभाव से आप अपनी अधिकारिक शक्तियों का आंशिक दुरुपयोग कर सकते है। रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं है। इसलिए यह रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आपको दीर्घकालीन रोग दे सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण कर आपमें आशावादिता भाव की कमी आ सकती है। दूसरों के लिए आपमें सहानुभूति तो बहुत होगी परन्तु आप चाहकर भी किसी के काम नहीं आ पाएंगे। कई बार आप दुष्ट लोगों पर भी सहानुभूति रखेंगे। पुखराज रत्न आपको जीवन में हानि करा सकता है। आर्थिक स्थिति में बढ़ोतरी के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। आपको सम्मान की कमी का सामना करना पड़ सकता है। पुखराज रत्न आपकी प्रसन्नता, सुख एवं सौभाग्य में कमी करेगा। यह रत्न रोग, ऋण और शत्रु आपके प्रबल कर सकता है। आयु और मातृ सुख में कमी कर सकता है। विदेश स्थानों से आपको धन हानि हो सकती है।

आपकी मकर लग्न के कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं द्वादशेश है। गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पुखराज रत्न पहनने पर अनिद्रा रोग प्रभावी होकर आपके स्वास्थ्य में कमी कर सकते है। कार्यो को पूर्ण करने के लिए आपको अधिक प्रयास करने पड़ सकते है। जिसके कारण आपको आराम के अवसर कम मिलेंगे। यह भी आपको अस्वस्थ करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप चिंता और अपमान से पीड़ित हो सकते है। मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को यह रत्न बाधित कर सकता है। पुखराज रत्न आपके विदेश भाव को प्रबल कर आपको व्यर्थ की यात्राएं दे सकता है। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आपको आर्थिक दंड के रूप में टैक्स (कर) देने पड़ सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने आप कुछ विषयों में आप लोभी और चालाक हो सकते है। आपके द्वारा दूसरों को शारीरिक और मानसिक कष्ट हो सकते है। अनजाने में आपसे पाप हो सकते है। आपके द्वारा किये गये कार्यो से विवेकहीनता परिलक्षित हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से आपको मुखरोग या दंत रोग हो सकता है। केतु रत्न आपको अकस्मात हानि करा सकता है। यह रत्न आपका ऑपरेशन करा सकता है। आपको विरासत मिलने में तकलीफ हो सकती है। सरकार के द्वारा आपकी धन हानि हो सकती है।

Sample

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

दशानुसार रत्न विचार

शनि
(29/05/2018 - 29/05/2037)

शनि की दशा में आपका हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, माणिक्य, मोती, पुखराज व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(29/05/2037 - 29/05/2054)

बुध की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, मोती, पुखराज व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(29/05/2054 - 29/05/2061)

केतु की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, गोमेद, माणिक्य, मोती व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(29/05/2061 - 29/05/2081)

शुक्र की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, मोती, पुखराज व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(29/05/2081 - 30/05/2087)

सूर्य की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व मोती रत्न नेष्ट हैं और गोमेद, माणिक्य, पुखराज व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(30/05/2087 - 29/05/2097)

चन्द्र की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और गोमेद, माणिक्य, पुखराज व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(29/05/2097 - 30/05/2104)

मंगल की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और गोमेद, माणिक्य, पुखराज व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(30/05/2104 - 30/05/2122)

राहु की दशा में आपका हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, माणिक्य, मोती, पुखराज व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

Sample

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4–1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	–––	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	–––	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

Sample

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रूद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग–अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रूद्राक्ष के बीचों–बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रूद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी–कभी 15 से 21 मुखी तक के रूद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग–अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है –

एक मुखी – सूर्य ग्रह – स्वास्थ्य, सफलता, मान–सम्मान, आत्म – विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी – चंद्र ग्रह– वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी – मंगल ग्रह– शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी – बुध ग्रह– शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि – विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी – गुरू ग्रह– शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी – शुक्र ग्रह – प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी – शनि ग्रह– शनि दोष निवारण, धन–संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी – राहू ग्रह– राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी – केतू ग्रह– केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख–शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी – भगवान महावीर– कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक–पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी – इंद्र ग्रह– आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी – भगवान विष्णु ग्रह– विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी – इंद्र ग्रह– सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश–कीर्ति, मान–प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी – शनि ग्रह– आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रूके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यो में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृति रखते है। साथ ही आप हंसमुख है। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता हैं। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हँसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप

Sample

अपनी समझदारी और सूझ–बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रूचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते है। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते है। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते है। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता हैं। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते है। कुंडली के षष्ट भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती हैं। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशनियों का विचार किया जाता हैं। अष्टमेश का किसी भी भाव–भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता हैं। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता हैं।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा–अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

बुध आपके षष्टेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन–हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हैं। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता हैं। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन–देन में बाधाएं आ सकती हैं।

मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। मंगल का रोग भाव में होने से आपके जीवन साथी से सुखों में न्यूनता, मित्रों से धोखा, संतान सुख में न्यूनता, स्वजनों से झगड़ा, रक्त–विकार, धन–नाश का कारण बन सकता हैं।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते है, यह योग मानसिक सुखो में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते है। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यो में लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन—धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उतम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि—चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सट्टा—जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपति का नाश और माता —पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 3, 5, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्‌भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

Sample

साढ `साती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पड्ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड्ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	--------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	--------------------------
साढेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	--------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	--------------------------	--------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	--------------------------	--------------------------

f तीय चक्र

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	--------------------------
साढेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	--------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

तृतीय चक्र

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	--------------------------	--------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	--------------------------
साढेसाती प्रथम ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढेसाती द्वितीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	--------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	--------------------------	--------------------------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	दाम्पत्य कलह

साढ `साती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म–पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं स शनैश्चराय नम ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं स ऊँ भूर्भुव स्व ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नम ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न–भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	शनि, शुक्र, बुध
		मारक	-	सूर्य, चंद्र, गुरु
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	शुक्र, राहु, गुरु
		मारक	-	केतु, मंगल, चंद्र

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	46%	कम खर्च, दुर्घटना से बचाव
चन्द्र	43%	शत्रु व रोग मुक्ति, दम्पति
मंगल	39%	शत्रु व रोग मुक्ति, सुख, धनार्जन
बुध	45%	कम खर्च, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
गुरु	51%	कम खर्च, पराक्रम
शुक्र	75%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
शनि	47%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, धन
राहु	60%	धन, दुर्घटना से बचाव
केतु	30%	दुर्घटना से बचाव, कम खर्च

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
गुरु	29/05/2018	85	52	50	60	88	43	58	48	50
शनि	29/05/2037	45	27	25	70	60	68	86	61	52
बुध	29/05/2054	85	27	38	85	75	68	58	48	50
केतु	29/05/2061	45	27	50	57	60	68	61	36	77
शुक्र	29/05/2081	29	44	54	53	44	100	54	77	46
सूर्य	30/05/2087	85	52	50	72	88	43	46	36	37
चन्द्र	29/05/2097	54	84	69	53	44	72	42	52	21
मंगल	30/05/2104	54	84	82	28	56	72	42	52	46
राहु	30/05/2122	29	44	42	41	44	85	54	92	21

Sample

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर–कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव उत्पन्न रहेगा। साथ ही मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित मात्रा में विलम्ब भी हो सकता है तथा यदा कदा विवाह संबंधी वार्तालापों में व्यवधान आएंगे परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही चतुर्थ भाव पर दृष्टि के कारण जीवन में आप भौतिक सुख संसाधन तथा जायदाद आदि भी प्राप्त करेंगे यद्यपि इसमें आपको थोड़ा परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव से वे तेज हो सकती है परन्तु इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा व्यवधानों एवं समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं अनुकूल बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाय। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा इच्छित भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी साथ ही चल एवं अचल सम्पति

Sample

के भी स्वामी बनेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा तथा धनऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे।

Sample

कालसर्प योग

अग्रे राहुरध केतु सर्वे मध्यगता ग्रहा ।
योगाऽयं कालसर्पाृयो शी ग्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Sample

नक्षत्रफल

आप पुनर्वसु नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, योनि मार्जार, देव गण तथा आद्य नाड़ी होगी नक्षत्र के चरणानुसार आप के जन्म नाम का प्रारम्भ "को" अक्षर से होगा।

आप नैसर्गिक रूप से ही शान्त प्रकृति के होंगे। किसी भी प्रकार के संकट काल से आप घबरायेंगे नहीं अपितु शान्ति पूर्वक उस समस्या का निदान सोचेंगे। आप आजीवन सांसारिक तथा भौतिक सुखों का आनन्दपूर्वक उपभोग करने में सफल होंगे। शारीरिक दृष्टि से आपका गौरवर्ण रहेगा तथा देखने में आप सुन्दर लगेंगे। सौभाग्य से आप हमेशा युक्त रहेंगे। आप अपने समाज में अपनी परोपकारी प्रकृति तथा सेवाभाव के द्वारा लोकप्रियता को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप हमेशा पुत्र तथा मित्रों से भी परिपूर्ण रहेंगे।

शान्त सुखी च सम्भोगी सुभगो जनबल्लभ ।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ।।
मानसागरी

अर्थात् पुनर्वसु नक्षत्र में उत्पन्न जातक, शान्त सुखी, भोगी, सुन्दर, लोकप्रिय तथा पुत्र एवं मित्रों से युक्त होता है।

आप अच्छे स्वभाव तथा उत्तम आचरण वाले होंगे। परन्तु कभी कभी आपकी बुद्धि भी दुष्टता की ओर प्रवृत होगी। आप हमेशा अन्य जनों के मध्य अपने को तृषातुर या अतृप्त सा अनुभव करेंगे जिससे आप के अन्दर व्याकुलता का अभिवर्द्धन होगा। परन्तु आप सन्तोषी स्वभाव के भी होंगे तथा किसी भी वस्तु की थोड़ी सी प्राप्ति में ही पूर्ण रूप से सन्तुष्टि का अनुभव करेंगे।

दान्त सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च।
अल्पेन च सन्तुष्ट पुनर्वसौ जायते मनुज ।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक क्लेश की स्थिति में भी सहनशील, सुखी, सुशील, दुष्टबुद्धिवाला, तृषाकुल तथा थोड़े से ही सन्तुष्ट होने वाला होता है।

अत्यन्त गूढ़ से गूढ़ विषयों का आपको आत्मज्ञान रहेगा तथा ऐश्वर्य का आपके पास कभी भी अभाव नहीं रहेगा तथा इसी के बल पर आप समाज में यश तथा प्रतिष्ठा को प्राप्त करेंगे। लेखन प्रतिभा से आप युक्त रहेंगे तथा आप में कामभावना की अधिकता रहेगी।

गूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलविख्यात कवि कामुक ।
जातकपारिजात

Sample

अर्थात पुनर्वसु में उत्पन्न जातक गूढात्मा, धन तथा बल से विख्यात, कवि तथा कामुक प्रकृति का होता है।

आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा समाज में बहुत से मित्र होंगे। साहित्य तथा शास्त्रों के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए आप सदैव प्रयत्नशील तथा अभ्यासरत रहेंगे। आप स्वर्ण एवं रत्नादि से निर्मित आभूषणों के भी स्वामी होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति से भी सुशोभित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अन्य कीमती पदार्थो तथा भूमि इत्यादि के स्वामित्व को भी प्राप्त करेंगे।

प्रभूतमित्र कृतशास्त्रयत्न सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्य ।
दाता धरित्री वसुभि समेत पुनर्वसु यस्य भवेत्प्रसूतौ।
जातकाभरणम

अर्थात् पुनर्वसु में उत्पन्न जातक अधिक मित्रों वाला, शास्त्रों का अभ्यास करने वाला, रत्नस्वर्णादि आभूषणों से परिपूर्ण, दान, द्रव्य एवं भूमि से युक्त होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीड़ित रहेंगे।

आप मिथुन राशि में उत्पन्न हुए हैं। अतः आप की आखें अल्प लालिमा से युक्त श्यामवर्ण की होंगी एवं सिर के बाल घुंघराले होंगे। आपके शरीर के सभी अंग कोमल पुष्ट या सुडौलता को प्राप्त होंगे तथा नासिका भी ऊंची होगी। विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के ज्ञान को प्राप्त करने की आपके मन में रूचि होगी फलतः आप इनके अध्ययन में परिश्रम करेंगे। सन्देशों के आदान प्रदान के कार्यों को आप कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा बुद्धि की इसी तीव्रता के कारण आप अन्य जनों की हृदय स्थित बातों को जान लेने में सफलता प्राप्त करेंगे। समाज के लोगों से आपको विनयशील सद्व्यवहार के द्वारा प्रशंसा प्राप्त होगी। आप अत्यन्त मधुर एवं मृदुवाणी बोलेंगे जिससे श्रोताओं के मन को प्रसन्नता प्राप्त होगी। हंसने तथा

Sample

हंसाने के कार्य में आप कुशल होगी तथा आजीवन इसका अनुपालन करेंगे। संगीत तथा नृत्य से आपका स्वाभाविक लगाव रहेगा तथा इनके विषय में भी आपको प्रचुर ज्ञान रहेगा।

स्त्रीलोल सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षण शास्त्राविद्।
दूत कुञ्चिद् मूर्धज पटुमति हास्योङ्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गा प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर का कद ऊंचा तथा नसें शरीर से बाहर दिखाई देंगी तथा आपकी हथेली में मछली के आकार का चिन्ह भी हो सकता हैं। आप देखने में सुन्दर तथा दर्शनीय होंगे। काव्य लेखन की प्रतिभा से आप युक्त रहेंगे तथा अच्छे साहित्य सृजन में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आप आजीवन समस्त सुखों का उपभोग करते हुए प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन करेंगे। परन्तु आप विषय वासनाओं के प्रति अधिक आकर्षित रहेंगे । साथ ही कामेच्छा का भी आप में बाहुल्य रहेगा। आप स्त्री से हमेशा हारे हुए रहेंगे तथा पूर्ण रूप से उसके वश में रहेंगे। साथ ही सौभाग्य भी हमेशा आप का भविष्य उज्जवल करेगा।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुि दक्ष सिराल ।।
कान्त सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुत स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्ट
सारावली

आपकी आयु पूर्णायु होगी तथा दीर्घकाल तक आप जीवित रहेंगे तथा जीवन भर हास्य प्रियता की प्रवृति से युक्त रहेंगे। आपकी इधर उधर घूमने या यात्रादि करने में भी रूचि रहेंगी तथा घर में रहकर भी से सन्तुष्टि तथा आनन्द की प्राप्ति करेंगे।

दीर्धायु सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजात

समाज के विभिन्न वर्गो में आप मान सम्मान के अधिकारी होंगे तथा सब के मध्य खूब लोक प्रिय रहेंगे। आप स्त्रियों के प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनके प्रति आपका अत्याधिक आकर्षण रहेगा। साथ ही अपनी योग्यता तथा बुद्धिमानी से आप समाज में यश तथा गौरव को भी प्राप्त करेंगे।

प्रियकर करमत्स्ययुतोनर सुरतसौख्यभरो युवतीप्रिय ।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरव ।।
जातकाभरणम्

Sample

आप अपने भाषणों तथा लेखो में श्लिष्टयुक्त स्पष्ट वाक्यों का अधिक संख्या में प्रयोग करेंगे तथा स्वजनों एवं अन्य सामाजिक प्राणियों की भलाई के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। आप श्रेष्ठाचरण से सुशोभित रहेंगे तथा कफपित्त प्रकृति से भी युक्त रहेंगे।

मृदुरूपचित्तगात्र शिलष्टविस्पष्टवाक्य ।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्त ।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्त ।।
जातक दीपिका

आपकी आखों में हमेशा चंचलता का भाव रहेगा । नृत्य एवं संगीत से आपका आत्मिक लगाव रहेगा तथा अपने धन ऐश्वर्य तथा अन्य कार्यों से आपकी कीर्ति भी व्याप्त रहेगी। भाषण देने की कला में भी आप अत्यन्त निपुण होंगे तथा दृढ़निश्चयी भी होंगे। किसी बात को एक बार सोच कर उसे पूरा करके ही छोड़ना आपकी प्रवृति होगी। इसके साथ ही आप न्यायवादी भी होंगे।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रिय ।
गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदी f पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रत ।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जन ।।
मानसागरी

आपका जन्म देवगण में हुआ हैं। अतः आप उत्तम मधुर तथा प्रियवाणी से युक्त होंगे। आपकी प्रियवाणी से सभी लोग आपसे आकर्षित रहेंगे। आप अत्यन्त सरल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा सादगी पूर्ण ढंग से अपने विचार व्यक्त करने की क्षमता से पूर्ण होगे तथा उतनी ही सादगी से अन्यों के विचार भी ग्रहण करने में समर्थ होंगे। आप शाकाहारी भोजन करना पसन्द करेंगे। गुणों के विषय में आपको विषद जानकारी होगी तथा स्वयं भी विद्वानों द्वारा वर्णित श्रेष्ठ गुणों से युक्त रहेंगे। धन, वैभव की आपके पास आजीवन कमी नहीं रहेगी।

आप सुन्दर तथा स्वस्थ शरीर से युक्त रहेंगे। आपकी प्रवृति स्वभाव से ही दानशील होगी तथा अवसरानुकूल आप इस प्रवृति का प्रदर्शन करते रहेंगे जिससे समाज में मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। आप दिखावे तथा ढोंग की हमेशा उपेक्षा करेंगे तथा सादा जीवन व्यतीत करने में विश्वास करेंगे। साथ ही आप एक उच्चकोटि के ज्ञानी भी हो सकते हैं।

सुस्वर सरलोक्तमति स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञ सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्य ।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में

भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आपका जन्म मार्जार योनि में हुआ हैं। अतः आप में वीरता के गुण नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेंगे। अपने समस्त कार्यों को आप चतुराई से सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपको मीठा भोजन तथा मीठा पेय भी अत्यन्तानन्दानुभूति करायेगा। आप निर्भय होंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके मन मस्तिष्क में नहीं रहेगा। परन्तु यदा कदा आपके स्वभाव में दुष्टता भी परिलक्षित होगी तथा आप दुष्कर्मो को करने को भी तैयार हो जाएंगे।

शूर स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षक ।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिज ।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यों को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार

Sample

आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघ योग, सोमवार तृतीय प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदाता हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, 2,7,12 तिथियों में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि का योग बनता है। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर एवं कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय पर आपको शारीरिक सुरक्षा तथा स्वस्थता का भी ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो। मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता,व्यापार में हानि, नौकरी प्राप्ति या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से प्रातः तथा सायं काल श्री गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के व्रत भी करने चाहिए। साथ ही हरित वस्त्र, पन्ना, मिश्री तथा कपूर आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से अशुभ फलों में न्यूनता तथा शुभ फलो में वृद्धि होगी। साथ ही पूर्ण रूप से मानसिक शान्ति भी प्राप्त होगी। इसके साथ ही बुध के तांत्रीय मंत्र के 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों स बुधाय नम ।
मंत्र– ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नम ।

Sample

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। ये विचारशीलता एवं गंभीरता के भाव से युक्त रहते हैं तथा अत्यंत ही परिश्रमी एवं कार्यशील होते है फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता अद्वितीय होती है तथा यही गुण जीवन में इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा परायणता का भाव भी रहता है तथा देश एवं समाज सेवा के कार्यों में प्रवृत रहते हैं। ये साहसी एवं निर्भीक होते हैं तथापि मन में यदा कदा उदासीनता की भावना विद्यमान रहती है जिससे सुख में खुशी तथा दुख में कष्ट की अनुभूति कम होती है। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण कम ही रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के ये इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये अनुसन्धान, विज्ञान एवं शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में आदरणीय रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ एवं बलवान व्यक्ति होंगे आपमें आदर्शवादिता का भाव भी होगा तथा अपने आदर्शो पर स्वतंत्र रूप से विचार करेंगे। साथ ही आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगे तथा शत्रु एवं प्रतिद्विन्दयों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव रहेगा फलतः वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अतः सदगुणों से सभी लोगों के मध्य आप आदरणीय रहेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे फलतः आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप रहेगी। कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपकी कर्तव्य परायणता तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी वर्ग या सहयोगी सन्तुष्ट होंगे। फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा परस्पर सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। उत्तम कार्यों को करने में भी आप रूचिशील होंगे फलतः समाज में एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी छवि रहेगी।

स्वव्यवसाय के प्रति आपकी इच्छा होगी तथा इसको सम्पन्न करके इसमें आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति मिलेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी उत्तम रहेगी जिससे धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे। साथ ही सुख संसाधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करेंगे। इससे लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे परन्तु यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्य कलाप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न

Sample

करेंगे। मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार परिश्रमी एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

Sample

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगे। साथ ही आप एक स्पष्ट वक्ता होंगे तथा जो कुछ भी मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगे। आपकी प्रवृति निस्वार्थी रहेगी तथा इसी भाव से आपके सांसारिक कार्य कलाप सम्पन्न होंगे परन्तु अन्य जनों की बातों से आप शीघ्र ही सहमत हो जाएंगे इससे यदा कदा अनावश्यक परेशानियां भी हो सकती हैं। आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार के प्रति आपका अत्यधिक लगाव रहेगा। साथ ही घर को भी आप हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पंसद करेंगे।

आप परिवार के ओर से सर्वदा चिन्तित रहेंगे तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से पारिवारिक सदस्यों से जुड़े रहेंगे। आप किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगे तथा अनावश्यक चंचलता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी। आपकी वाणी मधुर रहेगी तथा अन्य लोग वाणी से पूर्ण प्रभावित रहेंगे तथा आप स्पष्ट रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे। आपको विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना प्रिय लगेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा पारिवारिक जनों के साथ धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहेंगे इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित धनार्जन करेंगे तथा सज्जनों एवं महात्माओं का आदर सत्कार करते रहेंगे। साथ ही अवसरानुकूल परोपकार संबंधी कार्यो को भी आप सम्पन्न करते रहेंगे।

Sample

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा स्मृति भी तीव्र होगी एवं गहन से गहन विषय को भी स्मरण रखने में समर्थ रहेंगे। आप दर्शन शास्त्र, विज्ञान में उच्चशिक्षा या शोध कार्य के प्रति रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में यत्नपूर्वक सफलताएं अर्जित करते रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके प्रति वे आज्ञाकारी कर्तव्य परायण तथा सहानुभूति से युक्त रहेंगे तथा उन्नति के क्षेत्र में आपका परस्पर सहयोग रहेगा। लेकिन यदा कदा वैचारिक मतभेद हो सकता है फिर भी पारिवारिक शान्ति एवं प्रसन्नता के लिए एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आपमें नेतृत्व के गुण विद्यमान रहेंगे अतः सामाजिक मान सम्मान तथा ख्याति समय समय पर प्राप्त होती रहेगी। साथ ही परिवार का स्तर बढ़ाने में भी प्रयत्नशील रहेंगे। आप में संगठन शक्ति भी रहेगी तथा किसी भी कार्य को लाभदायक देखकर आप तुरंत ही उस कार्य को करने के लिए तत्पर हो जाएंगे तथा भौतिकता की प्राप्ति के लिए किसी भी वस्तु का सदुपयोग करने में समर्थ रहेंगे। संचार साधन टेलीफोन, टेलीविजन या वाहन आदि से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा कला में भी रिक्त समय प्रदान करेंगे। साथ ही दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ प्राप्त होता रहेगा। आप धार्मिक, सूचना संबंधी लेख या अच्छी पुस्तकों को पढ़ने के शौकीन रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धनवान, पुण्यात्मा, अतिथि सेवक तथा सर्वजनों के प्रिय होकर सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Sample

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। आप सांसारिक सुखों को अर्जित करेने में समर्थ होंगे तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगे। लेकिन सुखों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इनमें विलम्ब भी होगा। लेकिन आप परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति है। अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर होंगे।

जीवन में आपको चल एवं अचल समत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपको मिल सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समय समय पर धन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको कोई भी संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के भी योग बनेंगे।

आपका आवास स्थान मध्यम होगा परंतु आवश्यक सुख–सुविधाओं से भी सुसज्जित होगा। घर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से इच्छुक होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगे तथा संबंधों में औपचारिकता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें अनुकूलता आएगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकतवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे परंतु आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं से आप स्वपरिश्रम से कुछ अच्छी सफलता प्राप्त करनें में समर्थ होंगे परंतु स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

Sample

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी। जिससे आप समय समय पर वांछित लाभ एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी बुद्धि के द्वारा शीघ्र कर देंगे। अतः अन्य लोग भी आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरात्तव के क्षेत्र में आपका प्रबल आकर्षण एवं रूचि रखेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इन क्षेत्रों के ज्ञानार्जन में प्रयत्न शील होंगे तथा किसी नवीन सिद्धांत का भी प्रतिपादन कर सकते हैं जिससे आपके सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में वृष राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम–प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा ऐसे सम्बन्धों से आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी। प्रेम के क्षेत्र में भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। आपका प्रेम मर्यादा, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि –कोण से युक्त होगा। अतः इसकी परिणीति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति प्राप्त होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी। माता–पिता के प्रति उनके मन सामान्यतया आदर एवं सम्मान का भाव होगा परन्तु स्वतन्त्र प्रवृति के होने के कारण यदा–कदा वे किसी महत्वपूर्ण कार्य को बिना माता–पिता की सलाह या सहयोग से भी सम्पन्न कर सकते है लेकिन इससे आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए तथा उनकी योग्यता पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए। इससे आपकी सम्बन्धों में विश्वास, सदभाव एवं मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त वे वृद्धावस्था में आपकी श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इस प्रकार संतति पक्ष से सामान्यतया सुख एवं सहयोग ही अर्जित करेंगे तथा उनसे सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अध्ययन के क्षेत्र में वे योग्य एवं परिश्रमी होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक शिक्षा के क्षेत्र में वांछित उन्नति प्राप्त करके अपने उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा–दीक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इसके अतिरिक्त आपकी संतति पराक्रमी तेजस्वी एवं व्यवहार कुशल भी होगी तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य समाजिक जनों को भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ होगी फलतः सभी लोग उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। अतः बच्चों की उन्नति से आप सन्तुष्ट होंगे।

Sample

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप को रक्त सम्बन्धियों तथा घनिष्ट मित्रों से विरोध का सामना करना पड़ेगा। आपके शत्रु वर्ग उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति भी होंगे तथा समाज में कई क्षेत्रों में आपके शत्रु या विरोधी विद्यमान रहेंगे। वे आपकी प्रसिद्धि को पसन्द नहीं करेंगे तथा आपकी वैभवशालीनता को देखकर मन में ईर्ष्या का भाव रखेंगे। साथ ही वे समाज में मान हानि तथा अन्य प्रकार से आर्थिक हानि करने के लिए तत्पर रहेंगे। परन्तु आप एक बुद्धिमान चतुर प्रतिभाशाली तथा ईमानदार व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्यकलापों से शत्रु एवं विरोधी पक्ष को पराजित करने में समर्थ रहेंगे तथा अपनी समस्याओं तथा परेशानियों का समाधान करेंगे।

आप दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में भी लिप्त रहेंगे। इस कार्य को आपको चतुराई से करना चाहिए अन्यथा आर्थिक हानि की संभावना रहेगी। चूँकि आप अपने ही तरीके से किसी भी कार्य को क्रियान्वित करते है तथा दूसरों को इसमें कोई महत्व नहीं देंगे तथापि अन्त में आपको इनमें सफलता मिलेगी तथा ख्याति भी अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपके सेवक अच्छे होंगे तथा आपकी ईमानदारी से सेवा करेंगे साथ ही आपके आज्ञाकारी भी होंगे लेकिन यदा कदा वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य लोगों के समक्ष उजागर करेंगे जिससे आपकी मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः सेवक वर्ग के सम्मुख व्यक्तिगत मतभेदों को गुप्त ही रखें क्योंकि वे उनकी प्रवृत्ति बातूनी होगी। साथ ही नौकरों की पहुँच से कीमती सामान भी दूर रखें।

कई बार आप भौतिक उपकरणों तथा आराम पर अनावश्यक रूप से अधिक व्यय कर देंगे फलतः आपको ऋण आदि लेना पड़ेगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको उपेक्षा करनी चाहिए। आपके मामा मामी तथा अन्य संबन्धी आपके लिए अनुकूल रहेंगे। आपकी मामी क्रोधी स्वभाव की होंगी तथा सामान्यतया अस्वस्थ रहेंगी। लेकिन मामा से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आपको वे आवश्यकतानुसार इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। वृद्धावस्था में चिन्ता या रक्त चाप संबन्धी परेशानी भी हो सकती है अतः युवास्था से ही खान पान पर नियंत्रण रखना चाहिए।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है। वह सौम्य तथा कर्तव्य परायणता के भाव से युक्त रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील एवं शांत स्वभाव की होंगी। उनके अधिकांश कार्य कलाप पराक्रम एवं बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। तथा अपने बुद्धिमता पूर्ण कार्यो से वे अन्य जनों को प्रभावित करेंगी उनकी प्रवृति स्वाभिमानी होगी। परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी गौर वर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी परन्तु अन्य अंग एवं प्रत्यंग पुष्ट रहेंगे जिससे सौन्दर्य दर्शनीय होगा एवं व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। भौतिकता के प्रति उनका लगाव होगा तथा पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति में भी उनका रूझान रहेगा एवं कला के प्रति भी रूचि रहेगी।

सप्तम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा तथा अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा आप प्रेम विवाह भी कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा आकर्षण रहेगा। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा सांसारिक महत्व के कार्यों को आपसी सलाह से पूर्ण करेंगे जिससे परस्पर विश्वास प्रेम एवं आकर्षण का भाव बना रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से उनकी स्थिति सुदृढ होगी। प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी उपहार स्वरूप बहुमूल्य वस्तुएं एवं उपकरण प्राप्त होंगे। सास ससुर से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा दोनों ओर से औपचारिकताएं रहेंगी तथापि एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा तथा समयानुसार एक दूसरे को नैतिक या अन्य रूप से सहयोग के लिए तत्पर होंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान रखेंगी। साथ ही देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार एवं वाणी से सन्तुष्ट रहेंगे एवं उन्हें पूर्ण सम्मान तथा सहयोग देंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

Sample

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म या ज्योतिष आदि विषयों में श्रद्धा रखेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही इन विषयों में शोध कार्य करने के लिए भी तत्पर होंगे फलतः इस क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सफलता प्राप्त होगी एवं आपका अधिक से अधिक समय इस पर व्यतीत होगा। आपके पास अपनी सम्पत्ति रहेगी तथा पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होगी। अतः आपके पास विस्तृत भूमि तथा कई आवास स्थल हो सकते हैं। साथ ही जमीन जायदाद संबन्धी कार्य से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी हो सकता है। इस प्रकार चल अचल सम्पत्ति के स्वामी होकर समाज में आप आदरणीय समझें जाएंगे।

यद्यपि शादी के समय स्वयं किसी प्रकार के दहेज की मांग नहीं करेंगे परन्तु आपके ससुराल के लोग आपसे अत्यंत प्रभावित रहेंगे तथा आपको कुछ न कुछ धन उपहार स्वरूप आभूषण आदि अन्य बहुमूल्य वस्तुएं भेंट करेंगे जो आप मना नहीं कर पाएंगे। यह दहेज आपके दाम्पत्य जीवन के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होगा। साथ ही बीमा आदि से भी आपको समय समय पर न्यूनाधिक मात्रा में लाभ होता रहेगा। अतः आप अपना तथा अपनी बहुमूल्य वस्तुओं का बीमा कर सकते हैं। यह बीमा आपका सुरक्षित पूंजी निवेश होगा तथा इससे आपको उचित लाभ मिलेगा। आपकी कुंडली में कोई विशेष चोरी या दुर्घटना का योग नहीं है लेकिन यदि कोई ऐसी घटना होती है तो उससे कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आदर्श एवं दयालु प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों का पालन करेंगे। साथ ही ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा। धार्मिक प्रवृतियों का भी अनुपालन करेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में मन्दिर या तीर्थ स्थानों में जाएंगे। आप उपवास आदि भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। धर्म गुरूओं एवं महात्माओं का आप हार्दिक सत्कार करेंगे तथा धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करने में भी तत्पर रहेंगे।

आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी। अतः भविष्य वाणियां करने में भी आप समर्थ हो सकते हैं। आप आध्यात्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा के लिए तत्पर रहेंगे। आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए आप सामूहिक रूप से लोगों को संबोधित करेंगे तथा इसमें आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही भजन कीर्तन या अन्य कार्यकलापों को भी सम्पन्न करेंगे।आपकी व्यक्तिगत कार्यो की सिद्धि तथा इच्छित लाभार्जन के लिए लम्बी दूरी की यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा अपने धर्म के पवित्र ग्रंथों का भी अध्ययन करेंगे। आपकी प्रवृति उदार रहेगी तथा दीन दुःखियों की सेवा कार्य करने में तत्पर रहेंगे तथा दान आदि कार्य भी सम्पन्न करेंगे परन्तु ये सब कार्य आप धन की अपेक्षा तन मन से करना अधिक पंसद करेंगे। आपको पौत्र सुख प्राप्त होगा तथा वे आपको अपना पूर्ण सहयोग तथा सुख प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अपना दैनिक पूजन नित्य सम्पन्न करेंगे तथा मध्यआयु में आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। पूजा या ध्यान करने से आपको शान्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होगी तथा जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

Sample

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही शुक्र भी स्वराशि में स्थित होकर दशमभाव में ही स्थित है। तुला राशि वायुतत्व एवं शुक्र जलतत्व युक्त ग्रह है अतः उसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही इसमें आप समय समय पर परिवर्तन भी करते रहेंगे तथा ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होगा तथापि अधिक परिवर्तनशीलता की आपको उपेक्षा करनी चाहिए।

दशमभाव में तुलाराशिस्थ शुक्र के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र कला संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रोनिक्स, फिल्म निर्देशन, कम्प्यूटर, एयर लाइंस आदि विभाग शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इनमें कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा आपका भविष्य उज्जवल रहेगा। साथ ही उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का भी सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त विभागों में ही कार्य का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सोना, चांदी, हीरा आदि धातु एवं रत्नकार्य, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, सौन्दर्य प्रसाधन एवं आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, रेशमी या मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार या आयात निर्यात, कींमती मदिरा, इलैक्ट्रोनिक्स या कम्प्यूटर कनसलटेंसी एवं फिल्म निर्माण आदि के कार्य में भी आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ भी अर्जित होगा। अतः उपरोक्त वस्तुओं या क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करें।

दशमेश की दशमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में भी आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था के सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी हो सकते है एवं क्लबों आदि में भी आप आदर की दृष्टि से देखे जाएंगे। अतः अपनी उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता शिक्षित बुद्धिमान प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगे जिससे उन्हें सामाजिक सम्मान की प्राप्ति होगी। आपकी उच्च शिक्षा के प्रति वे पूर्ण जागृत होंगे तथा इसका उच्चस्तर पर प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाएंगे। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशिष्ट योगदान होगा। आप भी स्वपरिश्रम एवं योग्यता से प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की

Sample

सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति किसी भी क्षेत्र में अन्त तक संघर्ष करने की रहेगी जब तक की आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति न हो जाये। आप अपनी इसी संघर्षशील प्रवृति तथा पराक्रम से जीवन में अधिकांशरूप से अपनी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे इस प्रकार आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से ही जीवन में उन्नति करेंगे तथा किसी अन्य के सहयोग की अल्पता रहेगी।

आर्थिक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए आप सौभाग्यशाली रहेंगे। आप होटल व्यवसाय, सोने सुनारी का व्यवसाय अथवा भाइयों के द्वारा जीवन में लाभ अर्जित कर सकते है। इनसे आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करके धनऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगे। बड़े भाइयों का आपको पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा तथा जीवन में समय समय पर वे आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे ।

आप पराक्रमी, सक्रिय, बुद्धिमान एवं शिक्षित लोगों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगे। यद्यपि आपकी प्रवृति स्वच्छन्द रहेंगी तथापि अन्य जनों के साथ मिल कर कार्य करना पसन्द करेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र या समाज में एक प्रतिष्ठित पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अन्य जनों की सेवा तथा परोपकार संबंधी कार्यो को सम्पन्न करने में भी तन मन धन से अपना योगदान प्रदान करेंगे। लेकिन मूलतः व्यापारी वर्ग से आपको विशेष सामाजिक संबध बने रहेंगे। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

Sample

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में नाम, मान, सम्मान ख्याति तथा धन अर्जित करने के लिए सर्वदा इच्छुक रहेंगे। इसके लिए चाहे आपको कितना ही परिश्रम एवं संघर्ष क्यों न करना पड़े लेकिन आप निरन्तर अपने उद्‌देश्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहेंगे तथा इसमें आप किसी भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगे। आप धन के महत्व को जानेंगे अतः इसका अत्यंत सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक उपयोग करेंगे। साथ ही धन के विषय में आप कोई भी खतरा उठाना पसन्द नहीं करेंगे। अर्जित धन से भविष्य में लाभ किस प्रकार प्राप्त किया जाता है इसको भी आप अच्छी तरह जानते है अतः इसका सदुपयोग किसी आदर्श कार्य या बड़ी कम्पनी में पूंजीनिवेश के रूप में करेंगे साथ ही जायदाद संबंधी क्रय विक्रय पर भी व्यय कर सकते है आपकी प्रवृति धार्मिक होगी। अतः धार्मिक कार्य कलापों दान तथा दीन जनों की भलाई पर भी समय समय पर व्यय होता रहेगा। आप मध्यम अवस्था में धनवान बनेंगे तथा सर्वत्र आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। साथ ही अपनी दानशीलता तथा दयालुता के कारण भी आपको प्रसिद्धि प्राप्त होगी यदा कदा आवास की साज सज्जा तथा अन्य भौतिक उपकरणों पर भी व्यय करेंगे।

आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेंगी तथा इनमें व्यय के साथ आपको लाभ या सम्मान भी प्राप्त होगा। आप व्यापारिक या अन्य कार्यो से विदेश संबंधी यात्रा भी करेंगे जिससे आपको यथोचित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आप सामान्यतया सुखी ही रहेंगे।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2021

इस वर्ष शनि मकर राशि में प्रथम भाव में और राहु वृष राशि में रहेंगे। 6 अप्रैल को गुरू कुम्भ राशि में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 सितम्बर को मकर राशि में प्रथम भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर फिर से 20 नवम्बर को कुम्भ राशि में द्वितीय भाव में आजाएंगे। मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 17 फरवरी से 19 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। जिससे आय में निरन्तरता बनी रहेगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरु करने के लिए समय बहुत अच्छा है। लग्न स्थित गुरु नवीन विचारधाराओंएवं नयी योजनाओं को जन्म देंगे जिसका आप उचित लाभ उठा सकगें।

6 अप्रैल के बाद गुरू ग्रह का गोचर द्वितीय स्थान में होगा। उस समय अपने व्यापार के प्रति ज्यादा सतर्क रहे। यदि आप साझेदारी में कोई व्यापार कर रहें है तो 14 सितम्बर के बाद इच्छित लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने स्थान पर ही मान सम्मान प्राप्त होगा। अपने कार्य स्थल पर प्रसन्नता पूर्वक कार्य करते रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। 6 अप्रैल के बाद गुरू ग्रह का गोचर द्वितीय स्थान में होगा। उस समय आप इच्छित बचत करने में सफल हो सकते हैं।

यदि आप अपना पैसा कहीं निवेश करना चाह रहे हैं तो आपके लिए यह सुनहरा अवसर है। यदि पैतृक संपत्ति पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो परिणाम आपके पक्ष में होगा। रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति भी हो सकती है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 6 अप्रैल के बाद द्वितीय स्थान स्थित गुरु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनाए रखेंगे। आपको अपने पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। आपके परिवार में किसी व्यक्ति की वृद्धि हो सकती है।

पंचम स्थान का राहु आापके पुत्र का स्वास्थ्य खराब कर सकता है। सामाजिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। 14 सितम्बर के बाद आपको जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा या किसी के साथ आपकी मित्रता भी हो सकती है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहींरहेगा। पंचम स्थान का राहु आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। जिसके कारण उसकी पढ़ाई–लिखाई प्रभावित हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों को अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद द्वितीय स्थान में गुरू ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सन्तान के लिए समय अच्छा हो जाएगा और अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। 14 सितम्बर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अनुकूल हो जाएगा। यदि वह विवाह के योग्य है तो उनका विवाह संस्कार हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि की युति प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में सदैव अच्छे विचार आएंगे। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे।

यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो वर्षभरआपका स्वास्थ्य अच्छा ही रहेगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान–पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक आपका समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद फिर से अनुकूल हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्य ही रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शिक्षण संस्थान में प्रवेश पाना चाहते है तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

प्रतियोगिता परीक्षाएं कठिनतमहोने वाली हैं। जिन जातको की नौकरी अभी नहीं लगी है उन लोगों को 14 सितम्बर के पहले नौकरी मिल सकती है। सितम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

Sample

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी। तृतीय स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से निकटस्थयात्राएं होंगी।

6 अप्रैल के बाद विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी आध्यात्मिक शक्ति बढ़ेगी। जिसके प्रभाव से आपका पूजा पाठ के प्रति विशेष आकर्षण रहेगा। दान–पुण्य इत्यादि कार्यों में संलग्न रहेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार को चींटियों को दाना डालें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं दुर्गा बीसा कवच अपने गले में धारण करें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2022

इस वर्ष 13 अप्रैल को गुरु मीन राशि में तृतीय भाव में और 17 मार्च को राहु मेष राशि में चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अप्रैल को शनि कुम्भ राशि में द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 12 जुलाई को मकर राशि में लग्न में आजाएंगे। 30 सितम्बर से 21 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में दशम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई नया व्यापार शुरू कर सकते हैं। व्यापार में अनुभवी लोगों की सहायता भी आप को प्राप्त होगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति अवश्य होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में कार्य व्यवसाय के लिए समय और अनुकूल हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों को इच्छित लाभ प्राप्त होगा। आपको साझेदार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के प्रभाव से आपके धनागम में निरंतरता व इच्छित बचत से आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी तथा रत्न आभूषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा।

इस वर्ष भूमि भवन आदि अचल सम्पत्ति की अचानक प्राप्ति का योग बन रहा है। परिवार में मांगलिक कार्यों तथा पुत्र के स्वास्थ्य पर धन का व्यय होगा।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। आपके परिवार में एक दुसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

मार्च के बाद चतुर्थस्थ राहु के कारण आपके माता पिता के स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः उनका विशेष ध्यान रखें।

Sample

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ में पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपके बच्चे का स्वास्थ्य अचानक ही प्रभावित हो सकता है।

मार्च के बाद समय अच्छा हो जाएगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध गर्भाधान के लिए श्रेष्ठ मुहूर्त है। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि पर राहु की दृष्टि प्रभाव से आप मामूली बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं परन्तु मार्च के बाद स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़–चिड़े न बनें अन्यथा आपकी सेहत पर इसका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्यतः अच्छा रहेगा। छठे स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे।

उच्च शिक्षा के अभिलाषी जातकों के लिए समय सामान्य है। पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण स्वयं की उन्नति पर विशेष ध्यान दे पाना अथवा उसके लिए समय निकाल पाने में थोड़ी कठिनाई होगी।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि यह वर्ष सामान्य रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से यात्राए होती रहेंगी। अप्रैल के बाद आपके लम्बी यात्रा भी हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। चतुर्थ स्थान का राहु आपको अपने घर से दूर ले जा सकता है। नौकरी में स्थानान्तरण होगा।

Sample

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु 13 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा अनुष्ठान संपन्न करेंगे जैसे अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण या अन्य कोई हवन इत्यादि।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तुओं व छाया दान करें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2023

इस वर्ष 22 अप्रैल को गुरू मेष राशि में चतुर्थ भाव में, 17 जनवरी को शनि कुम्भ राशि में द्वितीय भाव में और 22 नवम्बर को राहु मीन राशि में तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री मंगल 13 जनवरी को मार्गी हो जाएंगे और पूरे वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 4 अगस्त से 18 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा। आप अपने परिश्रम के बल पर व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। आपके कार्य में कुछ गुप्त शत्रु उत्पन्न हो सकते है।

22 अप्रैल के बाद दशम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नौकरी में पदोन्नति के साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे।

22 अप्रैल के बाद गुरू ग्रह का गोचर चतुर्थ स्थान में होगा। उस समय आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादिका सुख प्राप्त हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरू की दृष्टि के कारण पैतृक संपति, गड़ा हुआ धन या ससुराल पक्ष से धन प्राप्त हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरू ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। जिससे समाज में आपका मान–सम्मान बढ़ेगा।

22 अप्रैल सेचतुर्थस्थान पर गुरू एवं शनि केगोचरीय प्रभाव से आपका घरेलु वातावरण अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पुरे परिवार का सहयोग आप को प्राप्त होगा। जिससे आपको मानसिक संतुष्टि प्राप्त होगी। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। जिससे में आपका अहम भुमिका होगी।

Sample

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा है।यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता हैं तो अच्छे संस्थान मे प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि पहले से कोई रोग नहीं है। तो यह वर्ष अच्छा रहेगा। सामाजिक गतिविधियों की व्यस्तताओं के चलते आपको अपने स्वास्थ्य की चिंता नहीं रहेगी और आप समय पर अपना खान–पान नही कर पाएंगे।

अव्यवस्थित दिनचर्या परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा भोजन को समय पर ग्रहण किया जाए, लापरवाही ना करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। सफलता हेतु अथक प्रयास करना पडेगा। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ेगी।आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

कुछ प्रयास करने के उपरान्त नौकरी मिलने की कुछ सम्भावना है जो प्रबल नहीं प्रतीत होती इस लिए नौकरी हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरू ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ साथ आपका लम्बी यात्राएं भी होंगी।

22 अप्रैल के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है।

Sample

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से पूजा करते रहेंगे। गुरू ग्रह के गोचर के बादयन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ सकता है और चतुर्थस्थ गुरू के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- शनिवार को व्रत रखें तथा छाया दान करें व गरीबों को भोजन खिलाएं।
- काले कम्बल, काली दाल आदि काली वस्तुओं का दान करें।
- भैरव जी की उपासना करें।

vedmuni
www.vedmuni.com

वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में द्वितीय भाव में और राहु मीन राशि में तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरू मेष राशि में चतुर्थ भाव में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में पंचम भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

दशम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको कार्य क्षेत्र में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। समय–समय पर उच्चाधिकारियों से भी लाभ प्राप्त होता रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे। आपको किसी कम्पनी के साथ मिलने या उसके साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

आप दैनिक कार्यों में स्फूर्तिवान बने रहेंगे और कार्यक्षेत्र में अच्छा करते रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अप्रैल के बाद समय और अनुकूल हो रहा है। उस समय आप किसी के साथ मिल कर कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते है, जिसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त हो सकता है। यदि आप शेयर बजार से जुड़े हैं तो इस वर्ष इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारंभ में चतुर्थ स्थान का गुरु आपको संचित धन की प्राप्ति करा सकता है। जैसे– भुमि, भवन, वाहन इत्यादि। अष्टम स्थान पर गुरू की दृष्टि पैतृक संपति भी प्राप्त करा सकती है।

अप्रैल के बाद एकादश पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आपका धन खर्च हो सकता है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ गुरू पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलु वातावरण अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पुरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी।

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का

Sample

विकास होगा। आपके शत्रु भी आपका सम्मान करेंगे। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु अप्रैल से गुरू ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है उसके बाद समय अनुकूल हो जाएगा। वह समय गर्भाधान के लिए अच्छा रहेगा।

सन्तान की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी और वे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। द्वितीय स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर चिंता न करें, नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव आपके शरीर पर पड़ेगा।

अप्रैल के बाद आपका समय अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। कभी–कभी मौसम जनित बीमारियों से परेशान हो रहे हैं तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन करें एवं योगासन व व्यायाम करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। संघर्षात्मक परिस्थितियों में आपको सफलता मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी, परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

विद्यार्थियों के लिए अप्रैल के बाद का समय बहुत शुभ है। उस समय सफलता प्राप्ति के शुभ योग बनेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। रोजगार प्राप्ति की सम्भावना भी है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि यह वर्ष अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी यात्रा भी करेंगे। प्रायः आपकी सभी यात्राएं अचानक ही होंगी।

Sample

वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे है। इस वर्ष आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति आकर्षण बढ़ेगा और आप अपनी आध्यात्मिक शक्ति बढ़ाने के लिए मन्त्र पाठ यज्ञ अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने घी का दीपक जलाएं और ह्रीं लक्ष्म्यै नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं और प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि तृतीय भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि छठे भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि छठे भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की अवश्यकता है। कार्य स्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

14 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आपके व्यवसाय में उतार–चढ़ाव के योग बन रहे हैं। उस समय आपको अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तिओं को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

14 मई के बाद कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी पर आपका धन व्यय हो सकता है। किसी को ऋण न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक

Sample

व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी।

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से गर्भधान के लिए समय शुभ चल रहा है। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद आपको सामाजिक पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। छोटे भाई–बहनों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा एवं बच्चों की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

14 मई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक रोग, सांस या पेट से संबंधित रोग हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्ति के इच्छुक विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा।

Sample

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान के राहु छोटी–मोटी यात्राएं कराते रहेंगे। नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक गतिविधियों तथा तीर्थ यात्रा के भी योग बन रहे हैं। 14 मई के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं नीली वस्तुओं का दान दें।
- माता–पिता, गुरु, साधू–संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु छठे भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारणआप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आमदनी के नये–नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधिमे आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगेउसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा,जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जायेगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति में उतार–चढाव की संभावन बनी रहेगी। द्वितीयस्थराहु के प्रभाव से धन संचित करने में बाधा उत्पन्न होगी और धनागम के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। आपको अपने अनावश्यक खर्चो पर अंकुश लगाना चाहिए। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

02 जून के बाद आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे जिससे आप की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों में पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कोई बड़ा निवेश न करें।

Sample

घर–परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। छठे स्थान केगुरु आपके मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध खराब कर सकते है।

02 जून के बाद जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। तृतीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

02 जूनके बाद आपके बच्चे के लिए समय अच्छा हो रहा है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी–मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

02 जून के बाद का समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए

Sample

अनुकूल है। यदि कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपकी छोटी–मोटी यात्रा के साथ–साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिएवर्ष के पूर्वार्द्ध में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ मे नहीं लगेगापरन्तु 02 जूनसे गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने जीवनसाथी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- माता–पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

vedmuni

www.vedmuni.com

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष लग्न स्थान में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। अपने भाई या किसी के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं, अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है कार्य व्यवसाय में उतार–चढ़ाव की स्थिति बन सकती है अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ धनार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

जून के बाद गुरु एवं शनि दोनों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है अतः कोई निवेश न करें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उस समय आप बहुत अच्छी बचत कर सकते हैं।

Sample

घर—परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष ठीक—ठाक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपका पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। अविवाहित जातकों का विवाह संस्कार होसकता है। समाज में मान—सम्मान बना रहेगा।

जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक—दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी जिससे विरोधाभास व वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकता है। माता—पिताका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

26 जून के बाद आपको संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा—दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। 26 नवम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार—चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं परन्तु लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको खान—पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित रखनी चाहिए। सुबह सुबह टहलना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

जून के बाद स्वास्थ्य के लिहाज से समय अच्छा नहीं रहेगा। शनि, राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कोई लम्बी बीमारी होने के संकेत मिल रहे हैं। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा मुश्किल भरा हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु जल तत्वराशि में होने कारण आप कफ, पाचन व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

Sample

इस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही आपके लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। 26 नवम्बर के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आप परिश्रम के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। विद्याथियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छा है।

जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको परिश्रम का फल नहीं मिलेगा, जिससे आपके करियर में सफलता की उम्मीद कम ही लग रही है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 26 नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है।

यात्रा–तबादला

तृतीयस्थ शनि की नवम भाव पर दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी–मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पत्नी के साथ हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। जून के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा–पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाऐंगे।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या लोहे केतवे का दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और व्रत रखें।

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा परन्तु फरवरी से व्यवसाय में उतार–चढ़ाव की स्थिति बन रही है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रूकावट डालने की चेष्टा करेंगे। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार होगा। कार्य–कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। प्रोपर्टी से संबंधिक काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके संचित धन में कमी आ सकती है। आय के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ कमजोर हो सकती है। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

घर–परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान का शनि छोटे भाई–बहनों के लिए बहुत अच्छा है और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेगा। समाज में

Sample

आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आपके बच्चों के विवाह की संभावना भी बन रही है। फरवरी के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

24 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक माहौल को खराब कर सकता है। परिवार में एक–दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी जिसके कारण आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपको बच्चों के बारे में शुभ समाचर मिलेंगे। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे।

सन्तान इच्छुक जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाई महसूस करेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहना चाहिए क्योंकि राहु अचानक ही शारीरिक परेशानी देते हैं। खान–पान के साथ अपनी दिनचर्या को भी सुधारें।

24 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको करियर में सफलता पाने के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु पढ़ाई में व्यवधान भी बना रहेगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

Sample

यात्रा–तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा। फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

यह परिर्वतन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। 26 जून के बाद आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा परन्तु फरवरी के बाद मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा–पाठ में मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई के बाद पंचम भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। 29 मार्च के बाद भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में गुप्त शत्रु विघ्न उत्पन्न कर सकते है जिसके कारण आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजयी प्राप्त करे लेंगे और आपके कार्यों पर कोई नकारात्म प्रभाव नहीं पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ परेशानी आ सकती है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बुद्धिमानी से काम लें। 05 अक्टूबर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। द्वादशस्थ राहु के कारण अचानक कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं। 29 मार्च के बाद अपने बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे।

25 अगस्त से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित

Sample

बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर–परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

25 अगस्त से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मार्च के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्रप्ति होगी। शिक्षा–दीक्षा के प्रति इनकी रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

08 अगस्त के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता व सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

25 अगस्त से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है या मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

Sample

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। आपको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। 29 मार्च के बाद विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों को करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। 29 मार्च के बाद छोटी यात्राएं होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल व उन्नति कारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा–पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। 25 अगस्त से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

प्रथम तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए श्रेष्ठतम रहेगा। जो आप चाहते हैं उसे पाकर ही रहते हैं यही बात आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। मई के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी में परिवर्तन चाहते हैं उनके लिए मई का महीना बहुत अच्छा रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपकी आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम माह छोड़ दिया जाए तो पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे और इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। मई के बाद रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आप कागजी कार्यवाही या फिर किसी वित्तीय लेन–देन की योजना भी बना सकते हैं। नई योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंगें। मातुल पक्ष के

Sample

लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर—परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। शनि ग्रह के गोचर के बाद घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाएंगे। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

23 सितम्बर के बाद सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। समाज में पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपकी सन्तान की शिक्षा—दीक्षा में सुधार व पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से उन्नति भी होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का शनि गर्भवती स्त्रियों के लिए अच्छा नहीं है। संतान के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आ सकती है। संतान के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा।

स्वास्थ्य

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय रहेंगे। आप दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति हैं जिसके कारण आप स्वस्थ्य रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

17 अप्रैल के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके लिए समय कुछ तनावपूर्ण हो सकता है। अपनी चिंता और व्याकुलता विजय पाने के लिए आप ध्यान या योग का सहारा ले सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर ईर्ष्या, प्रतिशोध और विश्वासघात जैसी बुरी भावनाओं को खत्म कर आपके अन्दर सकारात्मकता प्रदान करेगा जिससे आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

Sample

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा—तबादला

वर्षारम्भ में द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी। आपकी छोटी—छोटी यात्राएं होती ही रहेंगी साथ ही सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक प्रतिकूलता के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 17 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का पाठ आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लालायित रहते हैं, वो काबिले तारीफ है। 18 फरवरी से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। हालाँकि जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा वैसे ही आपकी जिन्दगी एक तेज गति पकड़ लेगी और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा।

आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। राहु ग्रह का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए आप अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी। जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने कर्जे से मुक्ति मिल सकती है। फरवरी के बाद आपको अचानक धन लाभ भी होगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं का सुख प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य में भी आपका पैसा खर्च होगा।

Sample

15 अक्टूबर के बाद आपको आर्थिक मामलों में ज्यादा सावधान रहना चाहिए। निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लेनी चाहिए। अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से दूर रहें।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में खुशहाली बनी रहेगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

गुरु का गोचर आपकी माता के लिए काफी शुभ रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहार दोनों में बदलाव आएगा। 14 जुलाई के बाद प्रेम संबंधो में भी सफलता मिलेगी। किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। आपको मित्रों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्षारम्भ आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेगा परन्तु 18 फरवरी से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान सुख में कमी कर सकता है। अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण उनकी शिक्षा–दीक्षा व उन्नति में रूकावटें आ सकती है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। 15 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। 18 फरवरी से द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। सुबह–सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल रहेगा जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परिक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों

Sample

का समय सामान्य रहेगा। 18 फरवरी से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहे तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहेंगे।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी–मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु 18 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दार्शनिक स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में मन्त्र जाप या साधना के प्रति आपकी रुचि अधिक रहेगी। आपकी अपने ईष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरु दीक्षा भी लेंगे। अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं पंचम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुद्वादश भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नति के लिए सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे।5 मार्च के बाद अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्रों का पूरा सहयोग मिलेगा।

मई के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान–सम्मान बढ़ेगा। आप से बड़े अधिकारी आपके कामों से संतुष्ट रहेंगे। 23 अक्तूबर के बाद अचानक व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति होगी। इस समय के अंतराल में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है जिससे आप अपने व्यापार को ऊँचाई तक ले जाने में समर्थ होंगे।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिये जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकीआर्थिक मेंवृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 31 मईसे शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रशस्त होंगे।

12 अगस्त से गुरु का गोचर द्वादश स्थान में हो रहा है। उस समय आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार–चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आर्थिक मामलो में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए और किसी प्रकार के जोखिम भरे कामों में धन निवेश नहीं करना चाहिए। 23 अक्तूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है

Sample

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। चतुर्थस्थ केतु आपके पारिवारिक वातावरण में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे परन्तु चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि उस विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देगी। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा।

आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता–पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। आपकेजीवनसाथी के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाई–बहनोंके साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। सामाजिक पद–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नही तो उनकी संगत गलत हो सकती है।5 मार्च से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ हो रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके बच्चों कीशिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। बीच–बीच में आपको उनके मनोबल को बढ़ाते रहना चाहिए नहीं तो वे अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान केगुरु आपके स्वास्थ्य में उतार–चढाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ या पेट संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। 5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

31 मई से छठे स्थान के शनि आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति का विकास करेंगे जिससे आप स्वस्थ्य बने रहेंगे परन्तु 23अक्तूबर के बाद आप छोटी–मोटी मौसमजनित बीमारी या सर्दी–जुखाम से परेशान हो सकते हैं।

Sample

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि वर्षारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकीशिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है।उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

मई से छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करा सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा–तबादला

5 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

12 अगस्त से द्वादशपर गुरुएवं शनि ग्रह की संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं और विदेशी संपर्कों से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा–पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे।

- माता–पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन गणेश जी के निम्न मन्त्र का पाठ करें–

ऊँ गं गणपतये नमः।

vedmuni

www.vedmuni.com

Sample

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं दशम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्थिति के लिए यह वर्ष बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रहों का गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। आप अपने सभी अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

वर्ष के मध्य में द्वादश स्थान का मंगल आपके व्यावसायिक जीवन में उतार–चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। परन्तु यह स्थिति जैसे ही समाप्त होगी, अचानक आपके कार्यों में उन्नति मिलना शुरु हो जाएगी। इस समय के अंतराल में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं। उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो व्यक्ति कार्यरत हैं उनको कार्यस्थल पर मान–सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। समस्त आय के स्रोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 18 मार्च से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपकी धर्मपत्नी का मुख्य सहयोग रहेगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। अपनी पारिवारिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे।

Sample

घर–परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक वातार्वरण के लिए उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी। परिवार में सुखी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

तृतीयस्थ केतु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके छोटे भाई बहनों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके पिताजी के स्वास्थ्य में भी उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय उत्तम है।

बच्चों के साथ प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी, जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहने वाले हैं। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी ऊर्जा मे वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नई गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह–सुबह टहलने जाना आदि।

व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपनी सेहत पर ध्यान नहीं देंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। परीक्षार्थियों को सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति अभी नौकरी की तलाश में है। उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी एवं बड़े

Sample

अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। जो व्यक्ति व्यापार शुरु करना चाहते हैं। उनके लिए सुनहरा अवसर चल रहा है। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा–तबादला

नवम पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्रा या धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी।

वर्ष के मध्य में द्वादशस्थ मंगल पर शनि ग्रह की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मार्च के बाद आपका दैनिक पूजा–पाठ प्रभावित होगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है, जिससे आपके धार्मिक कार्यों में रुकावट उत्पन्न होगी।

- आठ मुखी रूद्राक्ष धारण करें या अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र पूजाघर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्य उपासना करें या प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगा। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्य स्थल पर मान सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। इस समय को आप अपने जीवन का सबसे बेहतर समय बना सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु का संयुक्त गोचरीय प्रभाव व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अत्यधिक शुभ हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। यह उपलब्धी नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। आपके कार्य व्यवसाय में जीवनसाथी का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होंगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। जिससे पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्त होंगे। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों का सलाह अवश्य लें।

Sample

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक लेन–देन में जल्दबाजी न करें और बहुत सोच समझकर धन का उपयोग करें। आपको अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखना होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। कोई नया कार्य प्रारम्भ करने के लिए बेहतर समय नहीं है इसलिए कोई भी बड़ा निर्णय न लें। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि यदा–कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परंतु इसका सामान्य कार्य–कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में तत्पर रहेंगे। वाहन व भूमि क्रय–विक्रय करते समय सावधान रहें क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि अच्छी नहीं होती।

घर–परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 28 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़–चढ़ कर भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का माहौल बनेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अनावश्यक वाद–विवाद बहुत अधिक होंगे। तर्क–वितर्क की प्रवृत्ति आवश्यकता से अधिक हो सकती है जिसका सीधा नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार वालों पर तथा आपके जीवनसाथी पर पड़ेगा, साथ ही उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं भी बढ़ सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न करा सकता है। बेहतर होगा की आप अपने विचारों पर नियंत्रण रखें और अपना आवेश या प्रेम दोनों ही दूसरों पर न जाहिर होने दें। घरेलू वातावरण में किसी प्रकार की विषम परिस्थिति उत्पन्न न हो, इस पर विशेष ध्यान दें।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगा। 28 मार्च के बाद गुरु ग्रह क गोचर आपके दूसरे बच्चे के लिए काफी शुभ है। बच्चों के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। यदि दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो इस वर्ष अवश्य विवाह हो जाएगा।

Sample

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जिससे आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह–सुबह टहलना आदि। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

13 जुलाई से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। मानसिक तनाव, उत्तेजना, अवसाद जैसी समस्याएं बहुत परेशान कर सकती हैं। लीवर और मधुमेह की समस्या भी बढ़ सकती हैं या प्रारम्भ हो सकती हैं। दिनचर्या अनियमित रहेगी और खान–पान पर नियंत्रण रखना मुश्किल रहेगा। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर अपने लक्ष्य में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नए–नए तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा।

मैनेजमेंट, प्रशासन, शिक्षण कार्य से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है। जो व्यक्ति व्यापार में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है।

यात्रा–तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 28 मार्च के बाद छोटी–मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे। नवमस्थ राहु के कारण आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी।

13 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। किसी प्रकार की यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना इत्यादि का योग बना है।

Sample

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ राहु के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। मन्दिर जाना, धार्मिक कृत्य करना, दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर प्रसाद वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन करें। इसके प्रभाव से ग्रह जनित सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि सप्तम भाव में और सिंह राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं चर्तुथ भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण व्यापार में नए साझेदार मिल सकते हैं। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहने वाला है।

अष्टम भाव में राहु ग्रह का गोचर आपके व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके ला सकता है। आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किए अपना कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। किसी को लंबे समय से दिया हुआ धन वापस मिलने का योग है। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रही है। आयात–निर्यात करने वालों व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपके आय के स्रोतों में वृद्धि करेगी। आर्थिक उन्नति के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

6 अप्रैल के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ राहु के कारण धोखा या धन हानि का योग बन रहा है। अतः आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। माता पिता की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

Sample

घर—परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अनावश्यक तनाव और विवाद की स्थिति बनेगी। शत्रु भी सर उठायेंगे और उनके कारण आप अशान्त रह सकते हैं। साथ ही करीबी लोगों का उतना साथ नहीं मिलेगा जितना आप उम्मीद लगाए बैठे हैं। कोई साथ का व्यक्ति जो आपके कार्यस्थल से सम्बंधित है धोखा दे सकता है या उसके कारण आपको कुछ परेशानी उठानी पड़ सकती है। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। परिवार में एक—दूसरे के साथ भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपके माता—पिता के लिए समय काफी शुभ है। परन्तु सास—ससुर को शारीरिक कष्ट होगा। समाज में आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। नाम प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपका एक अगल व्यक्तित्व होगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला—जुला रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। परन्तु दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। आपकी दूसरे बच्चे के साथ प्रेम समन्वय में वृद्धि होगी। यदि वे विवाह के योग्य है तो उनका विवाह हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद आपके दूसरे बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उसकी शिक्षा—दीक्षा भी प्रभावित होगी। अतः इस समय के अंतराल में आपको उनके स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न कर सकती है, जिससे रक्तचाप, मधुमेह, एलर्जी या मस्तिष्क सम्बन्धी किसी बीमारी से परेशान हो सकते हैं। अतः अत्यधिक सावधानी बरतें और अपना ख्याल रखें। मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अनावश्यक यात्राएं होंगी और उसमें भी शारीरिक कष्ट की सम्भावना रहेगी। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान कर सकते हैं।

अप्रैल के बाद आपका स्वास्थ्य और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप समय पर अपना खान—पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करे।

Sample

किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। अप्रैल के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिए समय काफी शुभ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं या विदेशी भाषा सीखना चाहते हैं, तो यह समय आप के लिए श्रेष्ठ हैं। यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त कर उनसे आगे निकलना चाहते हैं, तो आपको अपनी नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ में ही छोटी–मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तर आपके लिए बहुत अनुकूल रहेगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। आप अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप तीर्थ यात्रा व धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। मन्दिर निर्माण, धार्मिक उत्सव व भण्डादि कार्यों में आप बढ़–चढ़ कर भाग लेंगे। मार्च के बाद आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे। कर्म ही पूजा है इस उद्देश्य को मानेंगे और दूसरे को भी यही उपदेश देकर कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष शनिवार की प्रातः धारण करें। आपको राहु की शुभता प्राप्त होगी।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर सुबह–सुबह उसका दर्शन करें एवं

Sample

ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य–व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 15 अप्रैल से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह सब आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तम स्थान में राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अचानक आपके व्यापार में रुकावट उत्पन्न कर सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहें है तो यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

27 अगस्त के बाद समय और भी ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आपके कार्यों में प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर अच्छा होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों के लिए यह समय अनुकूल रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्षारंभ में चतुर्थ स्थान के गुरु आपको भूमि, भवन, वाहन के साथ संचित धन की प्राप्ति करा सकते हैं। माता से धन लाभ होने का अच्छा योग बन रहा है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत तो बढ़ेंगे परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर भी ज्यादा खर्च होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का

Sample

अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे, जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। इस समय के अंतराल में आपका रुका हुआ या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। इस अवधि में कहीं से वसीयत प्राप्त होने की भी संभावना बन रही है। 27 अगस्त के बाद लेन देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। क्योंकि शनि ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। 15 अप्रैल से समय और भी अच्छा हो रहा है।

राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा, जिससे परिवार में किंचित नकारात्मक परिस्थितियां उत्पन्न होंगी। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। सामाजिक पद–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला–जुला रहेगा। आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। बच्चों के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

15 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का बहुत ही शुभ समय चल रहा है। आपके बच्चे अनुकूल कार्य करेंगे। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। आर्थिक स्थिति को लेकर ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव से भी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। 13 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। क्योंकि लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि स्वास्थ्य के लिए

Sample

अच्छी नहीं होती। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

27 अगस्त के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अष्टम स्थान का शनि कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है। अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी–जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापवाही न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 15 अप्रैल के बाद समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय बहुत अच्छा है। जो व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। लेकिन 27 अगस्त के बाद करियर में उन्नति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। इस वर्ष आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

15 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्राएं भी अधिक होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी अधिक करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

शुभ कर्म करेंगे। 15 अप्रैल के बाद आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी। साधना, योग व ध्यान आप अधिक करेंगे। अपने गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ायें और सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- बुधवार व शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें (तांबे की लोटे में चावल डालकर)।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। काम काज में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रु परेशान कर सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के कारण कुछ ऐसी परेशानी आ सकती है जिसका समाधान निकालने में अपने को असमर्थ समझेंगे। अप्रैल के बाद समय और भी प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

सितम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। फिर भी किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह के बिना महत्वपूर्ण फैसले न लें। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण सतर्कता बरतने की जरूरत है। निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। इस बात को न भूलें की जल्दबाजी में लिए गए फैसले अक्सर गलत ही होते हैं। आपका कोई करीबी या कोई अन्य आपके साथ धोखा–धड़ी कर सकता है। कारोबार से संबंधित सभी कार्यों में एहतियात बरतें और जो भी लेन–देन करें लिखित रूप में ही करें तो ज्यादा बेहतर होगा।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी है। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु 26 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऐसे में आप लेन–देन के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। धर्मपत्नी का स्वास्थ्य अनुकूल करने में धन व्यय होगा। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

Sample

सितम्बर के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होगा। फिर भी जोखिम उठाना कदापि उचित नहीं होगा। शेयर बाजार से दूरी बनाना निश्चित तौर पर आपके लिए लाभदायक होगा। बिना सोचे–समझे कहीं भी निवेश करने से बचें।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको बड़े भाई व बच्चों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके पिता के लिए यह समय काफी अच्छा है।

26 अप्रैल के बाद आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः अपनी वाणी पर नियंत्रण रखते हुए अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें नहीं तो स्थिति और प्रतिकूल हो सकती है। सितम्बर के बाद धर्म पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर रहेंगे। मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय शुभ है। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही अनुकूल है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी उम्मीत रखते हैं वे उससे भी अच्छा करने वाले हैं।

26 अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। उस समय उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। सितम्बर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। नियमित व्यायाम करते रहेंगे। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करेंगे, जिससे अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

26 अप्रैल के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते

Sample

हैं। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि अचानक कोई बड़ी बीमारी दे सकती है। इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। तुला दान या महामृत्यंजय जाप आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। पंचम स्थान का गुरु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। गुरु ग्रह का गोचर आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकता है।

26 अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आपकी उन्नति रुक सकती है। प्रतियोगिता में व्यवधान व करियर में रुकावटें आ सकती हैं। जिन लोगों को अभी तक नौकरी नही मिली है उनको सितम्बर तक इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि लम्बी यात्रा का योग बना रही है। धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे।

अप्रैल के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना इत्यादि। अप्रैल के बाद सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं। उस समय मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन नहीं लगेगा। आपके दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें या मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढाएं।
- माता–पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त

Sample

करें।

- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें या सात मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित कर नित्य उसका दर्शन करें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं अष्टम भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं है। इस अवधि में आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे। सप्तम स्थान पाप कर्तरी योग में होने से प्रत्यक्ष एवं गुप्त शत्रुओं की वृद्धि होगी। वे आपको किसी षड्यन्त्र में फंसाने का प्रयत्न करेंगे और आप उनके बीच फंसा हुआ महसूस कर सकते हैं। परन्तु 11 मई से समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके विरोधी एवं प्रतिद्वंदी शान्त होंगे तथा आपकी सफलता का मार्ग खुलेगा।

अक्टूबर के बाद आमदनी के नये स्रोत मिलेंगे। कुछ अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न होगा। यही आपकी व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपसे खुश रहेंगे। फिर भी किसी पर अत्यधिक विश्वास करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा क्योंकि अष्टम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। परिवार में रोग होने के कारण भी आपके व्यय अधिक होंगे, जिससे मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। परन्तु 11 मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। धनागम में निरंतरता होने के कारण पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

अक्टूबर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकते है। घरेलू सुख सुविधा पर भी आप अधिक खर्च

Sample

करेंगे। बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लें। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से बचें।

घर–परिवार, समाज

मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। सप्तम स्थान पाप कर्तरी योग में होने से आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है। आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें। आपकी रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। वाद–विवाद करने से परहेज करें। 11 मई से मित्रों व पत्नी के साथ संबंधो में सुधार होगा।

तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे खुशनुमा माहौल बना रहेगा। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। परन्तु अक्टूबर के बाद अचानक आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उनको किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

संतान

छठे स्थान में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ में आपकी संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव उनके शिक्षा–दीक्षा पर भी पड़ेगा। 11 मई से समय उत्तम हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय उत्तम रहेगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस वक्त बच्चों पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं

तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि 11 मई से समय किंचित अच्छा हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान–पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी, जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ बने रहेंगे।

7 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अष्टमस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य सुख में कमी आ सकती है। यदि आपने छोटी मोटी बीमारियों को अनदेखा किया तो यह बड़ी चिंता जनक बनकर सामने आ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए समय समय पर चिकित्सक की सलाह का लाभ उठाना लाभकारी रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय शुभ नहीं है। परिश्रम के अनुसार परिणाम नहीं मिलेगा परन्तु आप अपने लक्ष्य के पथ पर अग्रसर रहेंगे तथा सफलता की उम्मीद को लेकर आगे बढ़ते रहेंगे। 11 मई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपका रुझान राजनैतिक, तन्त्र, यन्त्र, मन्त्र, विद्या, सिद्धि एवं चमत्कारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक होगा।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनके लिए यह समय शुभ है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अच्छी उन्नति करेंगे। अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप खुश नहीं रहेंगे।

यात्रा–तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। मई के बाद छोटी–माटी यात्राएं होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी अधिकांश यात्राएं अचानक होंगी।

सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यावसायिक यात्राएं होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अक्टूबर के बाद दुर्घटना या चोट चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है।

Sample

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्यता के कारण कर नही पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्म को ही पूजा समझेंगे। 11 मई से धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में शुभ ग्रह स्थित होने से मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वों को हंसी खुसी के साथ मनाएंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा काली वस्तु का दान करें।

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में रुके हुए कार्य पूरे हो सकते हैं। व्यापार में मन्द गति से वृद्धि होने की संभावना बन रही है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय काफी शुभ है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 3 मार्च के बाद किसी के साथ मिलकर कार्य करने का प्रबल योग बन रहा है। लेकिन यह साझेदारी आपके लिए अच्छी नहीं रहेगी। अतः आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा।

5 अप्रैल से अष्टमस्थ शनि के कारण कुछ गुप्त शत्रु आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास नहीं करना चाहिए। उच्चाधिकारियों का सहयोग समय पर न मिलने के कारण परेशानियां बनी रहेंगी। आप अधिकारों व शक्तियों का दुरूपयोग करने से बचें। व्यावसायिक तथा सामाजिक स्तर पर उत्थान के लिए प्रयास अधिक लगन से करें। देर से ही सही आपको इस संबंध में सफलता अवश्य प्राप्त होगी। स्थितियों को सरलता से संभालने की आपकी कला का परिणाम, प्रशंसा तथा वित्तीय लाभ हो सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय अधिक अनुकूल हो रहा है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद बढ़ जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण कोई भी कार्य करेंगे तो उसमें सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। लेन देन व निवेश के मामले में सावधान रहें तथा इस समय के अंतराल में अपनी आत्मशक्ति बढ़ाएं। 3 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। एकादश स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेगी,

Sample

जिससे आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक मामलों के लिए सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में अधिक व्यय होगा। पंचमस्थ राहु के कारण पुत्र के रोग—व्याधि में भी आपके पैसे खर्च होंगे। यदि आप कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो 4 नवम्बर के बाद समय शुभ हो रहा है।

घर—परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। पारिवारिक विषयों को लेकर चिंताएं बनी रहेंगी। नवमस्थ शनि के कारण पिता जी के स्वास्थ्य में कमी आ सकती है। परिवार मे विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद विवाद सामने आ सकते हैं। परन्तु 3 मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। आपके भाईयों की उन्नति होगी। जीवनसाथी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। परिवार का सहयोग आपके साथ पूरी तरह से बना हुआ है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

साल का उत्तरार्द्ध आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित परेशानी बढ़ेगी। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। जितना हो सके पारिवारिक मतभेदों से दूर रहें। 4 नवम्बर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान संबंधित चिंताए बनी रहेंगी। बच्चों की पढ़ाई लिखाई व उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। 7 अप्रैल से समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय बच्चों के रहन सहन व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा।

पंचम स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों के लिए ज्यादा खराब है। उनको अपने खान पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा नहीं तो गर्भपात हो सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद समय अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को

सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान–पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति की कमी होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। 4 नवम्बर के बाद आपके स्वास्थ्य में फिर से सुधार होगा। अर्थात वर्षान्त आपके लिए श्रेष्ठ है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए साल का प्रारम्भ श्रेष्ठ है। छठे स्थान के राहु अचानक प्रतियोगिता में उन्नति के मार्ग खोलेंगे तथा आपको प्रतियोगिता में इच्छित सफलता मिलेगी। 7 अप्रैल के बाद विद्यार्थियों लिए समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है।

जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। वर्ष का उत्तरार्द्ध उनके लिए काफी श्रेष्ठ है। यदि आप विदेश जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए यह समय शुभ है।

यात्रा–तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु एवं राहु की संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। नवम स्थान के शनि लम्बी लम्बी यात्राएं कराते रहेंगे। 5 अप्रैल के बाद सामुद्रिक यात्रा का भी आन्दन लेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप संतुष्ट रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्यता व दीर्घसूत्रता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। 7 अप्रैल के बाद पंचम स्थान का राहु आपकी आस्था एवं विश्वास में कमी कर सकता है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। गोपनीय विद्या, रहस्यमयी साधना के प्रति आप आकर्षित होंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मो पर अधिक पैसा खर्च

Sample

करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय या गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे।

- प्रत्येक दिन चिड़ियों एवं चींटियों को दाना डालें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- वीरवार का व्रत करे एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलेगी तथा अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। आमदनी के स्रोत बढ़ेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद व्यावसायिक स्थिति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ गुप्त शत्रु परेशान कर सकते हैं। काम धंधे में भी रुकावटें आ सकती हैं, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। लेकिल 28 जून के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे तथा उन्नति के मार्ग पर फिर से अग्रसर होंगे।

लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि नवीन विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगी, जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सफल बनाएंगे। आय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता मिलेगी तथा 3 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें क्योंकि 6 अप्रैल से आपका अनावश्यक खर्च बढ़ने वाला है। इस समय के अंतराल में आर्थिक हानि होने के प्रबल योग बन रहे हैं। लेन देन के मामले मे सावधान रहें तथा जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए फिर से शुभता का संकेत ले कर आ रहा है। शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने की संभावना बन रही है। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 3 दिसम्बर के बाद अचल संपत्ति के साथ

Sample

साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन का व्यय होगा।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 6 अप्रैल के बाद आपके माता पिता जी के लिए भी समय शुभ नहीं रहेगा। आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। दोस्ती में भी दरार आ सकती है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

28 जून से समय अच्छा हो रहा है। पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़–चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। 3 दिसम्बर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा तथा परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए उत्तम रहेगा। वे अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है। संतान संबंधित चिंताएं बढ़ेंगी। आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

गर्भवती स्त्रियों को बड़े ध्यान से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है। 28 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो वर्षान्त में विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप अष्टमस्थ गुरु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको अपने खान पान के साथ अपनी दिनचर्या भी सुधारनी होगी। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़–चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड गा।

28 जून से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके

Sample

स्वास्थ्य में फिर से सुधार होगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच मे भी वृद्धि होगी। जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह सुबह योगा व व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा।

यात्रा–तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। 28 जून के बाद नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ साथ आपकी धार्मिक यात्राएं भी खुब होंगी।

इन यात्राओं के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 3 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही श्रेष्ठ है। दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। परन्तु 6 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में भी आपका मन कम ही लगेगा। 28 जून से समय फिर से शुभ हो रहा है। आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता कर उनके दुःख दूर करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- केला, बेसन के लड्डू व पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार को व्रत रखें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में प्रवाहित करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं। ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष कार्य व्यवसाय के लिए अनुकूल रहेगा। व्यापारी बंधु अपनी कर्तव्य–निष्ठा व परिश्रम के कारण अपनी आमदनी बढ़ाने में सफल रहेंगे। लंबे समय से रुके हुए आपके कार्य अब तेज गति पकड़ेंगे। आप नए कार्यों में हाथ डालने के लिए आतुर रहेंगे। लेकिन जल्दबाजी करने से बचें व सोच–समझकर धन निवेश करें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है। यदि आप नौकरी में हैं तो वर्षारम्भ में कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। स्थानान्तरण का भी योग बन रहा है। भूमि, भवन व वाहन से जुड़े लोगों को 6 मई के बाद नुकसान हो सकता है। अतः खरीद–बेच करते समय कागजी कार्यवाही पर पूर्ण ध्यान दें।

मई से जुलाई तक अपने सहकर्मियों के साथ उचित तालमेल बना कर चलना आपके लिए फायदेमंद रहेगा। कार्यस्थल में व्यर्थ वाद–विवाद से बचें। वर्षान्त आपके लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। अपने उच्च अधिकारियों की तरफ से आपको मान–सम्मान, पुरुस्कार या शाबाशी मिल सकती है। शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको वांछित पद की प्राप्ति होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा। आय में निरंत्रता बनी रहेगी परन्तु पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। 6 मई के बाद जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश करने व किसी को पैसे उधार देने से बचें। दीर्घकालीन निवेश के लिए उत्तम समय चल रहा है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा।

उत्तरार्द्ध में हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति करा सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। माता की बीमारी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे।

Sample

घर–परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान का राहु घर परिवार के लिए अच्छा नहीं है। कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को ठेस पहुंच सकती हैं तथा परिवार में कुछ विषम परिस्थियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार वैमनस्यपूर्ण भी रह सकता है। आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपके सम्बन्धों में खटास आ सकती है। मई से जुलाई तक का समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है।

यदि आपने निष्ठा के साथ संबंधों को सुधारने का प्रयास किया तो आपके संबंध संतोषप्रद रह सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। सामाजित पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनके दिल में स्नेह, आदर्श व सम्मान का भाव बढ़ेगा। आप लोगों के बीच भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। 6 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों की उन्नति में सहायक होंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्षान्त बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। आलस्यता एवं दीर्घ सूत्रता के कारण उनकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकी शिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं। अतः इस अवधि में उन पर विशेष ध्यान देना होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। छोटी–मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग पूरा वर्ष ही आपकी सेहत के लिए अच्छा है। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसमजनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही सुधर जाएगी। 6 मई के बाद आप योग क्रियाओं के द्वारा मन को एकाग्र करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी।

25 सितम्बर के बाद चोट व दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान–पान पर संयम

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव भी रह सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 6 मई के बाद समय शुभ हो रहा है। इस अवधि में आपको इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो यह समय उत्तम है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को 25 सितम्बर के बाद वांछित सफलता मिलेगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय उत्तम है।

यात्रा–तबादला

शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से इस वर्ष छोटी–बड़ी यात्राएं खूब होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

सितम्बर के बाद विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें तथा किसी के साथ मित्रता न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए श्रेष्ठ रहेगा। 25 सितम्बर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन नीली वस्तु का दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं दशम भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के दृष्टिकोण से यह वर्ष अति उत्तम होगा। अच्छे मुनाफे मिलने के आसार हैं। हर हाल में आपको लाभ होने वाला है। चतुर्थस्थ राहु के कारण वर्ष के पूर्वार्द्ध में व्यावसायिक सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। जून के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे। कारोबार का विस्तार होगा तथा सरकारी ठेके मिलेंगे। इसके साथ ही कारोबार में पूंजी लगाने वाले लोग भी मिलेंगे। कुल मिलाकर आपके लिए समय अनुकूल है, उसका लाभ उठाएं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सेवारत लोगों को अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान—सम्मान बढ़ेगा। नई व बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावन है। नौकरी से संबंधित आपकी सभी ख्वाहिशें पूरी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में चतुर्थस्थ राहु के कारण कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन 22 जून के बाद तीव्र गति से लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहने वाली है। आपकी राह की सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन निर्बाध रूप से होगा। लेकिन इसके लिए आपको अपनी दिनचर्या में कुछ आधारभूत बदलाव करने होंगे।

22 जून के बाद आपकी जमापूंजी में तेजी से वृद्धि होगी। कुल मिलाकर आर्थिक रूप से यह वर्ष बेहतर साबित होगा। शेयर बजार से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें। यदि कोई बड़ा निवेश करना हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

Sample

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु अचानक पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। 22 जून तक परिवार के सदस्यों के साथ बेहतर संबंध बनाकर चलना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। माता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

22 जून को राहु ग्रह के गोचर के साथ परिवार में आपसी सद्भाव का माहौल बनेगा। पारिवारिक रिश्ते बेहतर होंगे तथा समय आनन्द के साथ व्यतीत होगा। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। जिन्दगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद भी करेंगे। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि सामाजिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़–चढ़ के भाग लेंगे। समाज में मान–सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी।

संतान

आपके बच्चे हर प्रकार की प्रतियोगिता परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। धन प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त होंगे। आपकी सन्तान को पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होने का पूर्ण योग बन रहा है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी सन्तान सामाजिक गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर भाग लेगी। उनके पराक्रम, प्रभाव तथा आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त वे परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपकी सेहत अच्छी रहने वाली है। कोई बड़ी समस्या नहीं की उम्मीद नहीं है। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा सकारात्मक सोच मे वृद्धि होगी। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा।

राहु के कारण मौसम संबंधित बीमारी परेशान कर सकती हैं, परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। रहन–सहन व दिनचर्या में सुधार करें तथा सुबह शाम व्यायाम करना भी आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर के लिए उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता के तैयारी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय अत्यधिक अनुकूल है। यदि आप कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं या शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है।

22 जून को तृतीय स्थान में राहु का गोचर प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

यात्रा—तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी—मोटी यात्राएं अधिक होंगी। जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको इच्छित लाभ मिलेगा ।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षा व साक्षातत्कार के लिए यात्रा हो सकती है। आध्यात्म की प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थलों की यात्रा कर सकते है। देश विदेश घूमने के अवसर भी मिलेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप कोई विशेष पूजा अनुष्ठान करेंगे। जैसे अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण या अन्य कोई हवन इत्यादि, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी एवं आपका मान सम्मान बढ़ेगा।

दुर्गा बीसा यंत्र धारण करने से चतुर्थस्थ राहु के गोचर से उत्पन्न होने वाली परेशानियों के निदान हेतु सहायता मिलेगी।

- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं। ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य क्षेत्र में इस वर्ष आपको एक नई दिशा मिलेगी। आपकी कार्यक्षमता और रचनात्मक ऊर्जा बहुत अच्छी बनी रहेगी। इसका सदुपयोग करें। आय के नए स्रोत खुलेंगे। अवसर का पूरा फायदा उठाएं। कार्यक्षेत्र में आपके विचारों की सराहना होगी। बड़े अधिकारी आपके काम से प्रसन्न रहेंगे। यदि अपना व्यवसाय आरम्भ करना चाहते हैं तो यह उचित समय है। अवसर और साधन आसानी से प्राप्त होंगे। नए कारोबारियों से आपका संपर्क बनेगा। उनके साथ काम करके आप नई ऊँचाईयों को छूएंगे। विशेषतः भविष्य में आर्थिक उन्नति के लिए अभी धन का निवेश करेंगे जिसका आने वाले भविष्य में अच्छा लाभ मिलेगा।

नौकरी करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। दशमस्थ शनि के कारण नौकरी बदलने के ढेरों नए अवसर मिलेंगे, मनचाही नौकरी मिलेगी और पदोन्नति भी होगी। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ परेशानियां आएंगी। लेकिन 30 जुलाई के बाद से समय आपके अनुकूल हो जाएगा। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं। इसे नजरअंदाज न करें तथा अपने शत्रुओं से सावधान रहें।

धन संपत्ति

वर्ष का पूर्वार्द्ध अधिक खर्च वाला होगा। इस समय धन का आगमन तो होगा परन्तु अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारो के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय भी होगा। साथ ही जो व्यक्ति मकान, भूमि या वाहन की सोच रहे हैं उनके लिए यह समय ज्यादा खर्च वाला है। घर के पुनर्निमाण पर भी खर्च बढ़ेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक रूप से उत्तम रहेगा। धन की चिंता से मुक्ति मिलेगी तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। आपको बड़े भाई या मित्र से लाभ प्राप्त होगा। भौतिक सुख सुबिधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। निवेश के लिए यह

Sample

समय काफी अनुकूल है। यदि इस समय आपने निवेश किया तो आपको इच्छित लाभ होगा।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक–दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में सुख–शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता–पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे तथा सभी कार्यों में उनका सहयोग मिलता रहेगा। विवाहित लोगों के लिए संतान प्राप्ति का योग बन रहा है। तृतीय स्थान का राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रभावित रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं आ सकती हैं। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकी शिक्षा–दीक्षा में व्यवधान आने की संभावना बन रही है तथा उनके उन्नति के मार्ग भी प्रभावित होंगे। इस समय के अंतराल में उनको सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

30 जुलाई के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च स्तरीय शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश होगा। आप अपने बच्चों पर गुरुर करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उत्तम समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार–चढ़ाव की स्थिति बन रही है। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण आपको पित्त या पेट संबंधित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद परिस्थितियां सामान्य हो जाएंगी।

Sample

आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि किसी कार्य में विलम्ब भी हो तो उसे ईश्वर के शुभ संकेत के रूप में स्वीकार करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान–पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। सितम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में आपको विशेष सफलता नहीं मिलेगी, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है।

आप पढाई–लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है तथा आप किसी भी प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की पूर्ण संभावना है।

यात्रा–तबादला

द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी। अपने कार्य में विस्तार हेतु या विद्यार्थी वर्ग उच्च शिक्षा की प्राप्ति हेतु विदेश जा सकते हैं।

आपके पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण के योग हैं। परिवार में किसी यादगार यात्रा एवं सुखमय यात्रा का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। विभिन्न व्यक्तियों एवं कार्यशालाओं जो धर्म पर आधारित हों उनमें भाग लेंगे। साथ ही वृद्धाश्रम एवं मंदिर के निर्माण हेतु दान भी करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण आप निःस्वार्थ भाव से पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे।

- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।

Sample

- अपने पूजाघर में श्वेतार्क गणपति स्थापित करें।
- पांच मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए वर्षारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 16 फरवरी के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आप अपने कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापार में आपको भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। इस अवधि में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है तथा इस ब्राण्ड नेम से आपको भविष्य में अत्यधिक लाभ मिलेगा। द्वितीय स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु उससे आपके सामान्य काम काज पर कोई नकारात्मक प्रभाव नही पड़ेगा तथा आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे।

नौकरी करने वाले लोगों की पदोन्नति का पूर्ण योग बन रहा है। समय समय पर आपको बड़े अधिकरियों का सहयोग मिलता रहेगा तथा कार्यस्थल पर सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे।

धन संपत्ति

शुरु के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आर्थिक स्थिति के लिए अनुकूल बना रहेगा। एकादशस्थ शनि के कारण पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। आय के मार्ग की सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्य के प्रति सजग रहेंगे। 16 फरवरी के बाद आपकी आर्थिक स्थिति अधिक सुदृढ़ होगी। लेकिन आंख बंदकर किसी पर विश्वास करना आपके लिए घ ाातक हो सकता है, क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु आपके लिए अच्छा नहीं है।

अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में इस वर्ष अधिक खर्च होंगा। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद–विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप शेयर बाजार, लॉटरी व सट्टा इत्यादि से जुड़े हैं तो इस वर्ष ज्यादा सावधान रहने की आवश्यकता है। किसी तरह का जोखिम न लें।

Sample

घर–परिवार, समाज

वर्षारम्भ में आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार–चढ़ाव होते रहेंगे। घरेलू मामलों में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं, टालने की कोशिश करें। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्टकारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद–विवाद करने से परहेज करें नहीं तो मानसिक अशान्ति बढ़ सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। पिता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा वे आर्थिक रूप से आपकी मदद करेंगे। आपके भाई–बहन आपको आर्थिक रूप से सहायता कर सकते हैं। सामाजिक पद–प्रतिष्ठा के लिए भी यह साल श्रेष्ठ है।

संतान

वर्ष के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपकी संतान के लिए श्रेष्ठ है। 16 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए शुभ है। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे तथा उनकी शिक्षा के स्तर में सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष विवाह होने का पूर्ण योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

वर्ष के दो माह जनवरी व फरवरी छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन प्रसन्नचित्त बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में खूब मन लगेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने के लिए आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे।

द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ शारीरिक कष्ट हो सकते हैं तथा बदलते मौसम के कारण भी आप बीमार हो सकते हैं लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। इस वर्ष आपकी वजन बढ़ने की संभावना लग रही है अतः मक्खन, घी और मिठाई का सेवन कम करें तथा नियमित रूप से व्यायाम करें।

Sample

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा कहा जा सकता है। तकनीक व विज्ञान से जुड़े विद्यार्थियों के लिए इस वर्ष सफलता के योग बने हुए हैं। करियर में आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे।

नौकरी व करियर में अधिकारी से तनाव होने की संभावना है। व्यापार में आप नई तकनीक, हुनर व मशीनरी का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा इसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ में ही नौकरी करने वाले व्यक्तियों का तबादला होगा तथा यह स्थानान्तरण आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि आप विदेश जाना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है।

16 के बाद धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। व्यापारिक या शैक्षणिक कार्यों हेतु आपकी यात्रा समीपवर्ती क्षेत्रों में होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

16 फरवरी के बाद आपका मन पूरी तरह से धार्मिक कार्यों में संलग्न होगा एवं इसमें आपको अपने परिवार का भी पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा।

- प्रतिदिन गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें तथा बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा (घास) चढ़ाएं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजन घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालिसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एंव द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत ही अनुकूल है, अतः आप अपने भाग्य एवं कर्म के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। लग्नेश एवं धनेश शनि एकादश स्थान में स्थित हैं जो कि उच्चपद की प्राप्ति, मनोवांछित स्थान परिवर्तन आदि का योग बना रहे हैं। साझेदारी में व्यवसाय करने की संभावनाएं बलवती हैं। आपको वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आप अपने कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त करेंगे।

व्यापार में आपको भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। द्वितीय स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु उससे आपके सामान्य काम काज पर कोई नकारात्मक प्रभाव नही पड़ेगा तथा आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे। साल का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। लेकिन साझेदारी में कार्य करने वाले को वांछित सफलता नहीं मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए समय बहुत अनुकूल है। पूरे वर्ष धनागमन का स्रोत बना रहेगा। यदि किसी नये व्यापार में धन निवेश करेंगे तो उसमें लाभ मिलेगा। मांगलिक कार्यों में भी धन प्राप्ति के योग बनेंगे। आपके अंदर परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपको धनार्जन में सहायता मिलेगी। एकादशस्थ शनि के कारण पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। आय की राह में सभी बाधाएं दूर होंगी। आप अपने कार्य के प्रति सजग रहेंगे। आंख बन्दकर किसी पर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु आपके लिए अच्छा नहीं है।

पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध आर्थिक रूप से अधिक सुदृढ़ रहने वाला है। आय के साधन बढ़ेंगे तथा धन की बचत होगी। उसके साथ–साथ पैतृक संपत्ति मिलने के योग भी बने हुए हैं। संचित धन में वृद्धि होगी तथा रत्न आभूषण इत्यादि वास्तुओं की प्राप्ति होगी।

घर–परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार–चढ़ाव आएंगे। घरेलू मामलों में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं। लेकिन अपने तरफ से इसे टालने की पूरी कोशिश करें नहीं तो स्थिति ज्यादा खराब हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्ट कारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद–विवाद करने से परहेज करें नहीं तो मानसिक अशान्ति बढ़ सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। वर्ष का उत्तरार्द्ध घरेलू वातावरण के लिए शुभ रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण परिवार में सुख शांति एवं मधुरता बनी रहेगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा, परन्तु सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद करा सकती है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि बच्चों की उन्नति के लिए शुभ है। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे तथा उनकी उच्च शिक्षा में सुधार होगा। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चे किसी नवीन भवन के निर्माण या वाहन क्रय के बारे में योजना बनाएंगे। आपकी द्वितीय सन्तान के धनार्जन व धन संचय के लिए यह समय विशेष अनुकूल होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगा। मानसिक रूप से आप संतुष्ट रहेंगे। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपकी कार्य क्षमताओं का विकास होगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान–पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

15 जून को राहु ग्रह का राशि परिवर्तन अचानक आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है तथा बदलते मौसम के कारण भी आप बीमार हो सकते हैं लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल

Sample

होने के कारण आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। इस अवधि में आपकी वजन बढ़ने की संभावना लग रहा है अतः मक्खन, घी और मिठाई का सेवन कम करें तथा नियमित रूप से व्यायाम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके मनोबल में वृद्धि होगी। अगर आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं तो मेहनत के बल पर नई उपलब्धियां प्राप्त करेंगे।

लग्नेश शनि की एकादश भाव में स्थिति के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा–तबादला

व्यावसायिक यात्राओं के साथ आपकी मनोरंजनात्मक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको लाभ भी मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुर्ण्यांजन करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध यात्रा के लिए सामान्य रहेगा, परन्तु जलीय व सामुद्रिक स्थलों की यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बनी रहेगी। आपकी पत्नी का समय धर्म संबंधी कार्यों में व्यतीत होगा, जैसे दान, व्रत, जप, पूजन व तीर्थाटन इत्यादि। सभी धार्मिक कार्यों में आपको परिवार का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है तथा आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित कर सकता है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए हनुमानजी की आराधना करें तथा अपनी दिनचर्या को सही रखें तथा आलस्य का त्याग कर समय का सदुपयोग करें।

- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें तथा बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा (घास) चढ़ाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।

Sample

- प्रतिदिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2046

इस वर्ष राहु मकर राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। साल के प्रारम्भ में गुरू कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 13 मार्च को मीन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 8 दिसम्बर तक शनि वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल वक्री होकर 27 अप्रैल से 1 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय में सफलता के लिए यह वर्ष सामान्यतः अच्छा रहेगा। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप नये उद्यम शुरु करेंगे। आपको मित्रों और परिजनों से खूब मदद मिलेगी। 13 मार्च के बाद एकादशस्थ शनि गुरु की दृष्टि के कारण आपको व्यापार में अच्छा खासा लाभ होने की संभावना बन रही है। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। काम धंधे में बढ़ोत्तरी होने से आपकी आय में वृद्धि होगी। आप कोई अच्छी योजना बना कर व्यापार में उन्नति करेंगे। परन्तु लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अस्थिरता व मानसिक अशान्ति बनी रहेगी।

इस वर्ष साझेदारी में किसी के साथ व्यवसाय करने की प्रबल संभावना बन रही है। इस वर्ष साझेदारी में आपको वांछित सफलता मिलेगी। व्यवसाय में मित्रों व आपके भाइयों का भरपूर सहयोग मिलेगा। कुछ अनुभवी व बड़े लोगों के मिलने से आप अपने कार्यों में और सुधार करेंगे। 8 दिसम्बर को शनि ग्रह का गोचर कुछ नुकसान करा सकता है। अतः वर्षान्त में किसी पर अवश्यकता से ज्यादा विश्वास न करें तथा कार्य स्थल पर किसी पहचान के व्यक्ति को न रखें।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए काफी अच्छा रहेगा। विभिन्न स्रोतों से धनागमन होगा। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आप खूब खर्च करेंगे। व्यवसाय के माध्यम से आपको धनार्जन होगा। आपके व्यावसायिक जीवन में स्थिरता, सुरक्षा आएगी। आपका यह सुदृढ़ीकरण आपको अपने व्यापार में नये निवेश के लिए प्रोत्साहित करेगा। 13 मार्च के बाद अचानक आपके व्यापार में वृद्धि होगी।

लग्नस्थ राहु के कारण शारीरिक व्याधियां दूर करने में आपका अनावश्यक धन खर्च होगा परन्तु चिंता न करें क्योंकि पैसे का आगमन होता रहेगा। आपकी आमदनी में बढ़ोत्तरी के प्रबल योग बने हुए हैं साथ ही आप धन की

Sample

बचत भी कर पाएंगे। 8 दिसम्बर के बाद समय कुछ प्रभाावित हो रहा है अतः उस समय आपको आर्थिक मामलों में सावधान रहना चाहिए।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। किसी निकट संबंधी के बारे में कुछ अच्छी खबर मिल सकती है। विरोधी शान्त होंगे। परिवार के लोगों का व्यवहार आपके प्रति बहुत अच्छा हो जायेगा। 13 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर आपके भाइयों के लिए बहुत ही शुभ है। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह होने की संभावना बन रही है तथा यह समय सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए बहुत ही शुभ है।

सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि जीवनसाथी के साथ वैचारिक मतभेद करा सकती है तथा उनके स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकती है। इस समय के अंतराल में आप उनका सहयोग करें तथा उनके साथ वैचारिक मतभेद से बचें नहीं तो आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

संतान

पूरे वर्ष पंचम स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि आपकी संतान के लिए अच्छी नहीं है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आने की संभावना बन रही है तथा उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी भी आ सकती है। गर्भवती स्त्रियों को गर्भपात होने के योग बन रहे हैं अतः उनको बहुत ही सावधान रहना होगा।

बच्चों के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना है। शिक्षा–दीक्षा व सफलता प्राप्ति में परेशानी आने की संभावना बन रही है। आपकी दूसरी संतान के लिए यह साल सामान्य रहने वाला है।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान का राहु आपका स्वास्थ्य कमजोर कर सकता है। शारीरिक ऊर्जा धीरे–धीरे कम होती प्रतीत होगी। आपको पेट की तकलीफ परेशान कर सकती है। खान–पान पर संयम रखें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहे। लग्नस्थ राहु पर शनि की दृष्टि आपको कोई लम्बी बीमारी दे सकती है जिससे आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं।

खान–पान व रहन सहन पर आपको विशेष ध्यान देना होगा तथा व्यायाम व योग के द्वारा भी आप अपना स्वास्थ्य अनुकूल बना सकते हैं। महामृत्यंजय पाठ व तुला दान भी आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

Sample

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अधिक अनुकूल नहीं है। सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा फिर भी आपको वांछित सफलता नहीं मिलेगी। लग्न स्थान का राहु आपको आलसी बना सकता है। परन्तु 13 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल होगा। लग्नेश शनि पर गुरु की दृष्टि नौकरी व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए शुभ है।

कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको करियर में उन्नति मिलेगी।

यात्रा–तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक अशान्ति के कारण आपकी सारी यात्राएं प्रभावित होंगी तथा आप चाहकर भी कोई यात्रा नहीं कर पाएंगे। लग्नस्थ राहु के कारण आलस्यता का भाव बना रहेगा। परन्तु 13 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर यात्रा के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है।

छोटी–छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी तथा इन सभी यात्राओं से आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा। वर्षान्त में विदेश यात्रा के सुन्दर योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

यह वर्ष धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है तथा आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित कर सकता है। परन्तु 13 मार्च के आप धार्मिक कार्य व धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यर्जन करेंगे। वर्षान्त में आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा चींटियों को दाना डालें।
- प्रतिदिन दुर्गा सप्तशती का पाठ करें।
- अपने पूजन घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं तथा गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2047

इस वर्ष शनि धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 26 फरवरी तक राहु मकर राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मीन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 21 मार्च को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे तथा अतिचारी होकर 18 अगस्त को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 11 अक्टूबर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह साल अच्छा नहीं है। व्यापार में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। अधिक आत्मविश्वास व लापरवाही ठीक नहीं है। प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रु आपके कार्यों मे रुकावटें डाल सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। द्वादश स्थान का शनि व्यवसाय में कमी व किसी प्रकार का आर्थिक नुकसान करा सकता है। 21 मार्च के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। यदि आप विदेश में व्यवसाय करना चाह रहे हैं तो यह समय शुभ है। भविष्य में सफलता प्राप्ति के लिए आप कोई बड़ा निवेश करेंगे।

यदि आप नौकरी में हैं तो पदोन्नति के साथ–साथ अनुकूल स्थान पर तबदला होने की पूर्ण संभावना बन रही है। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपको वांछित मान–सम्मान प्रदान करेंगे तथा बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक निवेश करते समय बहुत ही सावधान रहें क्योंकि द्वादश स्थान में राहु एवं शनि की दृष्टि आपके लिए शुभ नहीं है।

धन संपत्ति

धन संपत्ति के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। व्यय अधिक होने के कारण आपके संचित धन में कमी आएगी। आपके अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। 21 मार्च से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपको विदेश से आय हो सकती है। किस्मत का सितारा कमजोर है तो ज्यादातर अपनी मेहनत पर ही भरोसा रखें। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि व वाहन मिलने की संभावना बन रही है।

पैसे का लेन देन करते समय बहुत ही सावधान रहें तथा किसी पर भी आंख मूंद कर विश्वास न करें क्योंकि द्वादश स्थान में राहु एवं शनि की युति अर्थिक स्थिति के लिए अच्छी नहीं है। जोखिम भरा निर्णय न लें तथा विलासिता व सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करने से बचें।

Sample

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परिवार के सदस्यों का सहयोग मिलता रहेगा, जिससे कारण आप मानसिक रूप से शांत रहेंगे। 21 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर घरेलू माहौल के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है।

माता–पिता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा। चतुर्थस्थ गुरु के कारण परिवार में सुख शांति एवं मधुरता आएगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का सुख प्राप्त होगा।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला जुला रहने वाला है। आपके बच्चे अपने परिश्रम व कार्यक्षमता के बल पर आगे बढ़ेगे। उन्नति के लिए खूब परिश्रम करेंगे तथा परिश्रम का पूरा फल भी मिलेगा।

वर्षान्त में बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा। बच्चे की संगती व आदतों पर नियंत्रण रखें तथा उसके स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें। चोट आदि लगने का भय बना हुआ है। इसके अतिरिक्त उसे किसी भी वाद–विवाद में पड़ने से रोके।

स्वास्थ्य

यह वर्ष आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य संबंधित कुछ न कुछ बीमारियां होती रहेंगी तथा आप शारीरिक कष्ट से परेशान होते रहेंगे। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना है तथा बदलते मौसम के कारण भी आप बीमार हो सकते हैं।

यदि पहले से कोई बीमारी से पीड़ित हैं तो यह वर्ष ज्यादा प्रतिकूल रहने वाला है। इस वर्ष कोई लम्बी बीमारी होने की संभावना बन रही है, जिसके कारण आप चिकित्सालय भी बहुत सकते हैं। 18 अगस्त से 11 अक्टूबर तक का समय शुभ है इस समय के अंतराल में आप स्वस्थ रहेंगे, परन्तु आपका वजन बढ़ने की संभावना है। अतः मक्खन, घी और मिठाई का सेवन कम करें तथा नियमित रूप से व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से यह वर्ष मिला–जुला रहेगा। जो विद्यार्थी

विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। द्वादश स्थान में राहु एवं शनि की युति विदेश में उन्नति का योग बना रही है।

इस वर्ष परिश्रम के बाद ही सफलता मिलेगी। अतः अपना आत्मविश्वास बनाए रखें व परिश्रम करते रहें तथा जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें क्योंकि जल्दबाजी में लिया गया निर्णय गलत हो सकता है।

यात्रा–तबादला

नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे। 26 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। इस अवधि में छोटी–मोटी यात्राओं के साथ व्यावसायिक यात्राएं भी अधिक होंगी। ये सभी यात्राएं आपके लिए लाभप्रद रहेंगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। जलीय व सामुद्रिक स्थलों की यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में लग्नस्थ राहु के कारण सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा आप चाहकर भी कोई शुभ कार्य नहीं कर पाएंगे। आलस्यता व मानसिक अशान्ति की स्थिति बनी रहेगी, जिससे आपका पूजा पाठ प्रभावित होगा। इस वर्ष आप अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे तथा दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा इत्यादि शुभ कर्म कर पुण्यार्जन करेंगे तथा गरीबों की सहायता अधिक करेंगे।

- नर्मदा शिवलिंग अपने पूजन घर में स्थापित करें तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- 108 रांग धातु के टुकड़े जल में प्रवाह करें तथा राहु मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन शनिदेव को सरसों का तेल चढ़ाएं।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2048

इस वर्ष शनि धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 4 सितम्बर तक राहु धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 28 मार्च को वृष राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और अतिचारी होकर 13 अगस्त को मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल वक्री होकर 10 फरवरी से 8 सितम्बर तक वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

शनि एवं राहु ग्रह का गोचर शुभ नहीं होने के कारण व्यावसायिक कार्यों में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। सभी कार्य धीमी गति से आगे बढ़ेंगे तथा मानसिक तनाव के कारण कोई भी कार्य एकाग्रता से नहीं कर पाएंगे। पैसा फंसने व व्यापार में नुकसान होने की संभावना बन रही है। 28 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण कुछ अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा और आप अच्छा प्रर्दशन करेंगे तथा किसी नयी योजना के बारे में विचार करेंगे। पिता और आपके बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

उत्तरार्द्ध ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। 13 अगस्त को छठे स्थान में गुरु ग्रह का गोचर व्यावसायिक जीवन के लिए शुभ नहीं है। इस अवधि में शत्रु संबंधित परेशानी हो सकती है तथा आपके विरोधी भी बढेंगे। हालांकि आप कार्य व्यवसाय में काफी होशियार हैं फिर भी इस समय के अंतराल में आपको ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ेगा। दोस्त और अन्य लोग आपको धोखा दे सकते हैं, इसलिए हर कदम फूँक–फूँक कर रखें और किसी पर भी ज्यादा विश्वास न करे। नौकरी करने वालों के लिए यह साल सामान्य रहेगा।

धन संपत्ति

धन सम्पत्ति के लिए वर्षारम्भ अच्छा नहीं है। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण धनार्जन करने के लिए आपको सतत प्रयास करने पड़ेंगे। आपको थोड़ी आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए धन बचाकर रखें और फिजूल खर्च से बचें। इस समय के अंतराल में किसी भी प्रकार का धन संबंधित लेन–देन करते वक्त सावधानी बरतें क्योंकि किसी नजदीकी व्यक्ति से धोखा मिलने की भी संभावना बनी हुई है। 28 मार्च के बाद किसी प्रभावशाली व उच्च पदस्थ व्यक्ति से आपको आर्थिक लाभ मिलने की संभावना बन रही है।

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि होने से आर्थिक स्थिति में मजबूती आएगी व धनागम में आने वाले व्यवधान दूर होंगे। आप अपने खुद के परिश्रम से अधिक धन अर्जित कर पायेंगे। शेयर बाजार, कमीशन आदि के कार्यों से लाभ मिलने की संभावना बन रही है। व्यावसायिक टर्नओवर में बढ़ोत्तरी होगी।

घर–परिवार, समाज

चतुर्थस्थ गुरु के कारण पारिवारिक जीवन के लिए वर्षारम्भ अच्छा रहने वाला है। घर में कोई धार्मिक या मांगलिक कार्यक्रम का आयोजन संभव है। माता पिता का पूरा सहयोग मिलेगा व उनके स्वभाव में आध्यात्मिकता का संचार होगा। परिवार में खुशियां आएंगी। एकजुटता व सौहार्द की भावना जागृत होगी। 28 मार्च के बाद पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल पर घ ूमने जा सकते हैं। संतान के लिए यह समय काफी प्रगतिशील हो सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में उनको असाधारण सफलता मिलने की संभावना बन रही है।

4 सितम्बर के बाद परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होने का योग बन रहा है। बड़े भाई–बहन से अच्छे संबंध होंगे और उनकी उन्नति होगी। इस दौरान घर में मित्रों का आना जाना लगा रहेगा। परिवार के साथ आप कुछ बेहतरीन पलों का आनन्द उठा सकते हैं। सुख सुविधाओं की वस्तुओं का उपभोग करने व उन्हें जुटाने के लिए इस अवधि में आप काफी प्रयासरत रहेंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है।

संतान

28 मार्च को पंचम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से संतान की कार्यक्षमता में वृद्धि होगी तथा उनकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आपका मान–सम्मान बढ़ेगा तथा आप अपने बच्चों पर गुरुर करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का सुन्दर समय चल रहा है।

आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय सामान्य रहेगा। उनको उन्नति करने के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा तथा उनका स्वास्थ्य भी कुछ प्रभावित रह सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाजा से यह वर्ष अच्छा नहीं कहा जा सकता है। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार उढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कार्यों में अरुचि व मानसिक उलझनें पैदा हो सकती हैं।

Sample

आलस्यता व मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। 28 मार्च के बाद आपके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक रूप से सुधार संभव है आप काफी ऊर्जावान व स्वस्थ महसूस करेंगे। आपकी कार्य क्षमता बढ़ने के काफी आसार है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध भी आपके लिए अच्छा रहने वाला है। आपकी फुर्ती और ऊर्जा का स्तर अच्छा रहेगा। फिटनेस आपकी उम्र को छिपा देगी। आप आध्यात्मिक किताबों में रुचि लेंगे। कुछ मौसम से होने वाली बीमारियां आपको तंग कर सकती हैं। गर्मी के कारण होने वाले रोगों से संभल कर रहें व साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहने वाला है। 28 मार्च के बाद विद्यार्थियों लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आप अपनी पढ़ाई में अच्छे स्तर पर प्रदर्शन कर सकते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अच्छे अवसर मिलेंगे। यदि आप अनुसंधान से जुड़े छात्र हैं तो बेहतर फल की आशा कर सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए श्रेष्ठ है। आपको वांछित क्षेत्र में सफलता मिलेगा क्योंकि षष्ठस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रतियोगिता में सफलता के लिए शुभ है। जो लोग नौकरी की तलाश में है उन सब को अच्छी नौकरी मिल सकती है।

यात्रा—तबादला

परिजनों अथवा मित्रों के साथ घूमने जाने का कार्यक्रम बना सकते हैं। परिवार के साथ की गई यात्राएं आपको आत्मिक सुख प्रदान करेंगी। चतुर्थस्थ गुरु के कारण अनुकूल स्थान पर तबदला होने के प्रबल योग बन रहे हैं। 28 मार्च के बाद धार्मिक यात्रा पर भी जा सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश जाने का प्रबल योग बन रहा है। रिसर्च या अनुसंधान के लिए भी आप बाहर जा सकते हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे तथा आपका दैनिक पूजा पाठ में भी मन नहीं लगेगा। आलस्यता और दीर्घसूत्रता का भाव बना रहेगा। मानसिक अशांति के कारण भी आप कोई विशेष पूजा पाठ नहीं कर पाएंगे तथा

Sample

पूर्व निर्धारित आपके सभी कार्यों में व्यवधान आने की संभावना बन रही है, परन्तु 21 मार्च को पंचम भाव में गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। इस दौरान आप कुछ विशेष धार्मिक कार्य करेंगे। योग, ध्यान व मन्त्र पाठ के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा।

- शुक्रवार के दिन ओपल रत्न धारण करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- हनुमानजी व शिवजी की रोजाना पूजा करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को खाना खिलाएं।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2049

इस वर्ष राहु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 3 अप्रैल को मिथुन राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और अतिचारी होकर 27 अगस्त को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 6 मार्च को शनि मकर राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और वक्री होकर पुनः 10 जुलाई को धनु राशि एवं द्वादश में आ जाएंगे और मार्गी होकर फिर 4 दिसम्बर को मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए शुरुआती समय अनुकूल रहेगा। आप अपने काम काज में व्यस्त रहेंगे परन्तु 3 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बन रही है। आपके प्रतिद्वंदी बढ़ेंगे तथा आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश भी करेंगे जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। नौकरी में स्थानान्तरण व व्यवसाय में परिवर्तन होने की संभावना बन रही है। अपने कार्यस्थल पर परिवार के लोगों को न रखें तथा उनके साथ आर्थिक लेन देन भी न करें नहीं तो संबंध बिगड़ सकते हैं।

पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध अनुकूल रहने वाला है। व्यापार में पत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। यदि आप मित्रता में कार्य कर रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ रहने वाला है तथा कार्यभार की अधिकता रहेगी और आप ज्यादा व्यस्त रहेंगे। व्यवसाय और नौकरी में आप पर्याप्त ध्यान देकर हर मोर्चे पर संतुलन बना सकेंगे। वर्षान्त में आप कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो द्व ादशस्थ शनि के कारण हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से साल का प्रारम्भ सामान्यतः अच्छा रहेगा। पंचमस्थ गुरु के कारण लॉटरी, सट्टा व शेयर के माध्यम से धन लाभ होगा। संतान या आपके बड़े भाइयों से भी धन लाभ होने के योग बन रहे हैं परन्तु 3 अप्रैल से समय प्रभावित हो रहा है। क्रय विक्रय संबंधी कार्यों में ज्यादा होशियार रहें तथा किसी पर भी आंख बंद कर विश्वास न करें।

उत्तरार्द्ध में समय कुछ अनुकूल हो रहा है। सप्तम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से धर्मपत्नी व भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक अनुकूलता के कारण धन का आगमन होता रहेगा परन्तु पारिवारिक सुख सुविधा

Sample

पर आप अधिक खर्च करेंगे तथा द्वादशस्थ शनि के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे भी आ सकते हैं।

घर–परिवार, समाज

इस वर्ष आपको पारिवारिक जीवन में सामंजस्यता बैठाने की आवश्यकता है। व्यर्थ की बहस से बचें व हर एक की भावनाओं का सम्मान करना सीखें। जितना हो सके अपने से बड़े लोगों की सहायता करें। 3 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर आपके मातुल पक्ष के लोगों के लिए शुभ नहीं है। उन लोगों को कुछ न कुछ दिक्कतें आ सकती हैं या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

27 अगस्त को सप्तम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर जीवनसाथी के लिए शुभ है। अपने पार्टनर को कोई कीमती उपहार देकर आप वैवाहिक जीवन में खुशियों की मिठास घोल सकते हैं। जीवनसाथी के साथ कहीं बाहन घूमने जाने का योग बन रहा है। आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय बना रहेगा। सामाजिक जीवन के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है।

संतान

वर्षारम्भ में पंचम स्थान का गुरु संतान के लिए शुभ है। बच्चों की शारीरिक आरोग्यता के लिए समय काफी अच्छा है। उनकी शिक्षा–दीक्षा व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे, परन्तु 3 अप्रैल से समय कुछ प्रभावित हो रहा है। इस समय बच्चों की संगती व रहन सहन पर विशेष ध्यान दें तथा उनके साथ किसी प्रकार की अनावश्यक बहस न करें।

27 अगस्त से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। आपकी दूसरी संतान के साथ प्रेम व समन्वय में मधुरता आएगी जिससे घर के वातावरण में तो सुधार होगा ही साथ ही आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिए सामान्य रहेगा। 3 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप शारीरिक एवं मानसिक श्रम अधिक करेंगे। हर बात पर क्रोध करने से आप अपने आसपास के वातावरण को तनावयुक्त बन लेंगे। इसलिए जहां तक हो सके ज्यादा तनाव न लें व क्रोध करने से बचें। खान पान का ध्यान रखने की जरूरत है। गरिष्ठ भोजन या अत्यधिक मसाले युक्त भोजन करने से पेट के रोग हो सकते हैं। जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी बीमारियां भी हो सकती हैं।

Sample

27 अगस्त से लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि सेहत के लिए अच्छी है। आप काफी ऊर्जावान और सक्रिय रहेंगे। आपकी कार्यक्षमता पहले के मुकाबले काफी अच्छी रहने की सम्भावना है। आप प्रसन्नता का अनुभव करेंगे और तनाव से मुक्त रहेंगे। आप अपने खाने पीने की वस्तुओं पर विशेष ध्यान देंगे और सेहत के प्रति काफी जागरुक रहेंगे। अंकुरित व प्रोटीनयुक्त अनाज खाना आपकी सेहत के लिए काफी लाभदायक हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहने वाला है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। परन्तु 3 अप्रैल से समय कुछ प्रभावित हो रहा है। अतः इस दौरान सफलता प्राप्ति के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। शिक्षा के क्षेत्र में धीमी गति से प्रगति होगी। षष्ठस्थ गुरु के कारण आप लम्बे समय तक पढ़ने में ध्यान केंद्रित नहीं कर पाएंगे।

आप कोई उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं तो किसी भी महत्वपूर्ण निर्णय को लेते वक्त सतर्कता बरतें क्योंकि जल्दबाजी में आप कोई गलत फैसला ले सकते हैं। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है एवं पढ़ने लिखने में मन नहीं लगेगा। सरकारी विभागों व प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्र धीमी गति से आगे बढ़ेंगे।

यात्रा–तबादला

वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको लम्बी यात्रा करा सकती है। धार्मिक यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं परन्तु 3 अप्रैल के बाद आपकी सारी यात्राएं प्रभावित होंगी।

द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय बहुत ही सावधान रहें क्योंकि 10 जुलाई को द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर दुर्घटना इत्यादि का योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए उत्तम रहने वाला है। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि पूजा–पाठ, यज्ञ व अनुष्ठान के लिए शुभ है परन्तु 3 अप्रैल

vedmuni
www.vedmuni.com

Sample

के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी। आपके सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान आने प्रारम्भ हो जाएंगे। लग्न स्थान में शनि ग्रह का गोचर सभी धार्मिक कार्यों में कमी उत्पन्न करेगा। सत्संग व कीर्तन इत्यादि में आपका मन नहीं लगेगा। दैनिक पूजा भी प्रभावित होगी। आलस्यता के कारण आप चाहकर भी सुबह जल्दी नहीं उठ सकते। इस दौरान आपका मंदिर भी आना जाना कम ही रहेगा परन्तु आपके जीवनसाथी अधिक पूजा पाठ करेंगे।

- सोमवार के दिन शिव जी का रूद्राभिषेक कर पूजन करें।
- प्रतिदिन महामृत्युन्जय मन्त्र का जाप करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु, काला कपड़ा एवं काला कम्बल दान करें।
- गुरुवार के दिन बेसन के लड्डू का दान करें।

Sample

वार्षिक फलादेश - 2050

इस वर्ष शनि मकर राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा राहु 22 फरवरी को तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर एक माह के लिए मिथुन राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर 2 अप्रैल को पुनः कर्क राशि सप्तम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 19 सितम्बर को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

सप्तमस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि व्यावसायिक उन्नति के लिए शुभ है। व्यापार में धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। साझेदारी में कार्य करने के लिए यह वर्ष उत्तम है। यदि आप पत्नी के साथ मिलकर कोई कारोबार कर रहे हैं तो उसमें अधिक लाभ मिलेगा तथा उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे। यदि आप नौकरी में हैं तो 22 फरवरी के बाद अचानक पदोन्नति होने की संभावना बन रही है। कार्यस्थल पर सभी सहयोगियों का सहयोग मिलने से आप अत्यधिक प्रसन्न रहेंगे। राजनीति एवं प्रोपर्टी से जुड़े लोगों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

19 सितम्बर से समय कुछ प्रभावित हो रहा है। व्यावसायिक उन्नति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आर्थिक समस्याएं आ सकती हैं। व्यापारिक क्षेत्र में गुप्त शत्रु या विरोधियों द्वारा रुकावटें डाली जा सकती है। लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे तथा विरोधिओं को करारा जबाब भी देंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक उन्नति के लिए यह वर्ष सामान्यतः अच्छा रहेगा। एकादशस्थ राहु के कारण धनागम के स्रोत बने रहेंगे। पत्नी, मित्र एवं सहयोगियों से आर्थिक सहयोग मिलेगा जिसके चलते आप अपने व्यवसाय का विस्तार करने की सोच सकते हैं या किसी नए व्यापार में निवेश कर सकते हैं। ऋण और वित्तीय मामलों के संदर्भ में किया गया प्रयास सफल रहेगा। कोई पुराना उधार वापिस मिलने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

19 सितम्बर को अष्टम स्थान में गुरु ग्रह का गोचर आर्थिक स्थिति के लिए शुभ नहीं है। गलत निवेश नीति के कारण नुकसान होने की संभावना है। अतः पूरी एहतियात बरतें। किसी भी अंजाम पर पहुंचने से पहने तथ्यों की पूरी तरह से जांच–पड़ताल कर लें। अति–आत्मविश्वास और अहंकार नुकसान का कारण बन

Sample

सकता है। धन प्राप्ति के लिए भाग दौड़ करनी पड़ सकती है लेकिन आपको अपेक्षित नतीजे मिलने के कारण आत्मसंतुष्टी बनी रहेगी।

घर–परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्यतः अच्छा रहेगा। जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग मिलेगी तथा उनके साथ संबंध बहुत ही मधुर रहेंगे जिससे पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। घर परिवार में मेहमानों का आना–जाना लगा रहेगा। बड़े भाईयों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। परिवार में भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। पैतृक संपत्ति से जुड़े मामलों का कोई निष्कर्ष निकलेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह समय शुभ है। समाज में एक प्रभावी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में आपकी छवि बनेगी तथा सब लोग आपको वांछित सम्मान देंगे।

उत्तरार्द्ध माता जी के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। उनको कुछ न कुछ शारीरिक कष्ट बना रहेगा। 19 सितम्बर के बाद परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं लगेगा जिससे आपकी भावनाओं को चोट पहुंचेगी। हालांकि इससे परिवार के किसी सदस्य के साथ आपके रिश्ते खराब नहीं होंगे। वर्षान्त ससुराल पक्ष के लोगों के लिए अच्छा नहीं है।

संतान

आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे तथा अपने पराक्रम एवं मेहनत के बल पर आगे बढ़ेंगे। दूसरी संतान के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति करेंगे तथा कार्य व्यवसाय में अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे। बच्चों के साथ प्रेम व समन्वय में मधुरता आएगी जिससे घर के वातावरण में तो सुधार होगा साथ ही आपका सामाजिक स्तर भी बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल बना रहेगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। दिनचर्या में कुछ कमी आएगी लेकिन प्रसन्नता पूर्वक सभी कामों को करते रहेंगे तथा मानसिक रूप से प्रसन्न बने रहेंगे। दृढ़ निश्चय और सशक्त इच्छाशक्ति के कारण ही आप एकदम दुरुस्त रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड गा। सुबह टहलना आपकी दिनचर्या का हिस्सा होगा।

19 सितम्बर के बाद स्वास्थ्य में कुछ कमी आ सकती है। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पेट, लीवर, मोटापा व मधुमेह संबंधित बीमारियां हो सकती हैं। बाहर का खाना व गरिष्ठ भोजन का त्याग करें तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन करें, जिससे शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति मिलेगी तथा शारीरिक कार्य क्षमता में तेजी से बढ़ोत्तरी होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा में उन्नति के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल बना रहेगा। सभी प्रतिस्पर्धियों को पीछे छोड़ कर आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा वांछित उन्नति मिलने से आप अत्यधिक प्रसन्न रहेंगे। मित्रों, सहयोगियों व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा। विद्यार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए पहले की अपेक्षा अधिक लगन और मेहनत से काम करना होगा।

यदि आप विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 19 सितम्बर से समय शुभ हो रहा है। इस समय के अंतराल में आप विदेश में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

यात्रा–तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में व्यवसाय से संबंधित यात्राएं अधिक होंगी तथा सभी यात्राएं लाभप्रद रहेंगी। छोटी–मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी लेकिन उन यात्राओं से ज्यादा लाभ नहीं मिलेगा। यदि आप नौकरी में हैं तो अचानक 22 फरवरी के बाद प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। इस समय के अंतराल में कुछ अनावश्यक यात्राएं भी हो सकती हैं।

19 सितम्बर के बाद सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल पर घूमने जा सकते हैं। सामुद्रिक क्षेत्र की यात्रा होने के संकेत दिख रहे हैं। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि विदेश यात्रा भी करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक क्रिया कलापों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। पुर्वनिर्धारित धार्मिक कार्यों में व्यवधान आने की संभावना है। आलस्यता, दीर्घसूत्रता व अनियमितता के कारण दैनिक पूजा–पाठ में भी रुकावटें उत्पन्न होंगी। लग्नस्थ शनि के कारण चाहकर भी कोई धार्मिक आयोजन में शामिल नहीं हो पाएंगे। 19 सितम्बर के बाद घरेलू सुख शान्ति के लिए आप कोई विशेष पूजा पाठ करेंगे,

Sample

जिसमें परिवार के सभी सदस्य शामिल होंगे। अष्टमस्थ गुरु के कारण आपका मन तन्त्र–मन्त्र के प्रति भी आकर्षित होगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा शनि मन्त्र का पाठ करें।
- गुरुवार के दिन बेसन के लड्डू गरीबों को दान करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजाघर में स्थापित करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष की माला सोमवार के दिन गले में धारण करें।